मार्कोपोलो का यात्रा

विवरण

अनुवादक-श्री रामनाथ लाल सुमन

संसार के जिन पर्यटकों तथा यात्रियों ने अपनी यात्राओं के विवरण लिख कर अपनी भावी पीढ़ियों का उपकार या मनोरंजन किया है, उनमें इटली के मार्कोपोलो का नाम बड़ा विख्यात है। सन् १२७१ ई० में वेनिस-निवासी दो भाई, निकोलो पोलो और मैफियो पोलो, व्यापार के लिए एशिया की ओर रवाना हुए। उनके साथ निकोलो का पुत्र मार्को भी था, जिसकी अवस्था उस समय केवल १७ वर्ष की थी। समुद्र के मार्ग में वे कुस्तुन-तुनिया आए और वहां से कारवांओं के मार्गों का अनुसरण करते हुए चीन पहुँचे। रास्ते में उन्हें गोबी का रेगिस्तान भी पार करना पड़ा। चीन में उन दिनों क़बलाई खाँ की बादशाहत थी, जिसने पोलो बन्धुओं के साथ बड़ा अच्छा व्यवहार किया और मार्को पोलो को अपने यहाँ नौकर भी रख लिया। उन दिनों लम्बी यात्रा करने में कितनी कठिनाइयों और ख़तरों का सामना करना पड़ता था, इस बात की आज मोटर और वायुयान के युग में कल्पना भी नहीं की जा सकती। पोलो बन्धुओं को चीन पहुँचने में ३।। वर्ष लग गए थे और यह भी एक सौभाग्य की ही बात थी कि वे वहाँ तक सकुशल पहुँच गए। इसके बाद वे सोलह वर्ष तक चीन ही में रहे।

सन् १२९५ में पोलो बन्धु और मार्को पोलो लौट कर वेनिस जा पहुँचे। २४ वर्ष में स्वभावतः उनमें काफ़ी परिवर्तन हो गया

था। मार्को पोलो, जो घर से रवाना होते समय १७ वर्ष का लड़का था, अब अधेड़ उम्र का आदमी था। आश्चर्य नहीं कि उनके मित्रों तथा सम्बन्धियों ने उन्हें न पहचाना। चन्द रोज़ बाद नवागन्तुकों ने अपने पुराने मित्रों को एक दावत दी। दावत के बीच उन्होंने अपने वे फटे-पुराने कोट और लबादे निकाले जिन्हें पहिने हुए उन्होंने वापिसी सफ़र किया था, और फिर उन्हें फाड़ना शुरू किया। उनमें से हीरा, पन्ना, मोती, लाल आदि क़ीमती जवाहरात गिरने लगे जिनकी चमक-दमक से उनके मित्रों की आखें चौंधिया गईं।

कुछ समय बाद वेनिस और जिनोआ के बीच युद्ध छिड़ गया, और जिनोआ वालों ने और बहुत लोगों के साथ मार्को पोलो को भी क़ैद कर लिया। क़ैदख़ाने में दिन बिताते समय मार्को पोलो ने अपने एक साथी क़ैदी को अपनी विदेशों की यात्राओं की कथा सुनाई, और उसने उसे लिपिबद्ध कर दिया। इस प्रकार मार्को पोलो की यात्रायों सम्बन्धी पुस्तक तैयार हुई। जब यूरोप के लोगों ने इस पुस्तक में एशिया के देशों की अपार सम्पत्ति का हाल पढ़ा तो उन्हें आश्चर्य के साथ उसके साथ व्यापार करने की इच्छा भी हुई। साहसी नाविकों ने पूर्वीय देशों के लिए जल-मार्ग की खोज करना शुरू कर दिया। इन्हीं में एक कोलम्बस था, जिसने पूर्वीय देशों का मार्ग खोजने के प्रयत्न में अमेरिका का महाद्वीप ढूंढ निकाला, जिससे संसार के इतिहास में एक नया युग का प्रारम्भ हो गया।

मार्को पोलो की पुस्तक अब छः सौ वर्ष पुरानी हो चुकी है, परन्तु आज भी वह दिलचस्पी के साथ पढ़ी जाती है। संसार की प्रायः सभी सभ्य भाषाओं में उसके अनुवाद हो चुके हैं। इस हिन्दी अनुवाद के अनुवादकर्ता महोदय हिन्दी के एक प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित लेखक हैं। हमें विश्वास है कि पाठकों का इस पुस्तक से यथेष्ट मनोरंजन तो होगा ही, साथ ही उनके ज्ञान की भी वृद्धि होगी। हिन्दी-भाषा-भाषी जनता में पर्यटन-प्रेम की बड़ी कमी है। और इस कमी को दूर करने में साहसी पर्यटकों के भ्रमण-वृत्तान्तों का हिन्दी में प्रकाशित होना कुछ न कुछ अवश्य सहायक हो सकता है।

—प्रकाशक

विवरण

मार्कों पोलो का यात्रा-विवरण

मार्कोपोलो की यात्रा का मार्ग-विवरण

अनुक्रमण और परिचय

सन् १२५० ई० (१३०७ वै०) में, जब कि कुस्तुन्तुनिया (Constantinople) में बाल्डविन द्वितीय राज्य करता था, वेनिस के दो मनुष्य जो पोलो वंश में उत्पन्न हुये थे, अपने साथ नानाभाँति के व्यापारिक द्रव्य ले जहाज़ पर रवाना हुये, और रूम सागर तथा वास्फोरस के मुहाने से होते हुये कान्स्टेटीनोपल (कुस्तुन्तुनिया) पहुँचे। यहाँ वे थोड़े दिन विश्राम कर आगे बढ़े और पौण्स, यूक्सनियस को पार करके खाल्दाविया (वर्तमान सद्दाक़) में, जो उस समय का एक प्रसिद्ध बन्दरगाह था, जा पहुँचे। यहाँ से वे थल मार्ग से वरहा (वारक खां अथवा वारक) नामक तातारियों के एक बड़े बादशाह के दरवार* में उपस्थित हुये। वारक खां के आगे उन्होंने अपने वहुमूल्य रत्नादि उपहार के साथ उपस्थित किये।

*—वह दरवार 'सास' और 'सराय' वलग़ारा में था। 'सराय' के खँड़हर अखनूव नदी के किनारे (जो रूस की वोगा नदी की एक शाखा है) ज़रीफ नगर के पास अव भी पाये जाते हैं। यह वलगार (जिसे वुलगार भी कहते हैं) वोगा नदी के किनारे वाले खंड़हरों से थोड़ी ही दूर पर है।

बादशाह ने बड़ी प्रसन्नता से उन्हें स्वीकार किया और उसके बदले में अनेक कीमती जवाहिरात प्रदान किये, उसके दरबार में वे दोनों यात्री पूरे एक साल तक रह गये और वहाँ से उन्होंने अपनी तमाम चीज़ें उसी शहर में बेच वेनिस लौट जाने का विचार किया किन्तु उनकी इच्छा पूरी न हो सकी। कारण यह हुआ कि उनके वेनिस को चलने के पहले ही बारका खां और तातारियों के एक दूसरे बादशाह हलाकू खां में युद्ध आरम्भ हो गया जिसमें बारका खां की पराजय हुई। अब तो दोनों यात्री बहुत चिन्तित हुये। उनकी समझ में न आता था कि किस तरह अपनी जन्म-भूमि (वेनिस) को लौटें। निदान जब कोई रास्ता अपने देश लौटने का न दिखाई दिया तो उन्होंने चुपके से निकल भागने का विचार किया और एक दिन वहाँ से चल निकले। अनेक मार्गों से होते हुये वे 'गोया कान' नामक स्थान पर पहुँचे। यह दजला नदी के किनारे था। यहाँ से वे अनेक विस्तृत मरुस्थलों को पार करते हुये १७ दिन में फ़ारस की सीमा पर बुखारा में पहुँचे। वहाँ उस समय शाह हलाकू खां पड़ा हुआ था। उसने दोनों यात्रियों की बड़ी आव भगत की। यहाँ वे दोनों तीन साल रह गये। इसी बीच हलाकू खां ने, खां आज़म कुबिलाई खां (जो तमाम तातारी शासकों का शासक था) की सेवा में एक दूत भेजने का विचार किया। चूँकि दोनों यात्री तातारी भाषा बोलने में अभ्यस्त हो गये थे और बड़े प्रसन्नचित्त और हँसमुख थे अतएव दूत ने उन्हें उत्साहित किया कि वे शाहन्शाह

---

*—कुबलाई खां का राज्य उत्तर में [illegible] से लेकर दक्षिण में तुनाकिन, पूर्व में अमूर नदी और [illegible] से लेकर पश्चिम में डेन्यूब नदी तक फैला हुआ था। उसके अधिकार में पोलैण्ड, रूस और हंगरी भी था।

तातार के दरबार में चलें। दूत को आशा थी कि किबलाई खां उन्हें देखकर प्रसन्न होगा और ये दोनों यात्री मालामाल हो जायँगे। दोनों यह समझ कर कि इस कार्य से स्वदेश जाने में सुविधा होगी, जाने के लिये तैयार हो गये और कुछ अन्य ईसाइयों को साथ लेकर (जो कि वेनिस से उनके साथ आये थे) उस दूत के साथ रवाना हुये और एक वर्ष की यात्रा के बाद शाहन्शाह तातार के दरबार में जा पहुँचे। सामने उपस्थित होने पर बादशाह उनके साथ बड़ी प्रसन्नता से मिला। उसने बहुत सी बातें उन यात्रियों से पूछीं। जैसे—पश्चिमी देशों का हाल, कैसर रूस और अन्य बादशाहों की साम्राज्य-व्यवस्था तथा युद्ध की प्रणाली। यह कि उनमें कैसी सुलह—न्याय और मेल जोल पाया जाता है। रूमियों के आचार-विचार किस प्रकार के हैं। पोप का कैसा प्रभुत्व है। मास्टर निकोलो और एम-सीजियो (दोनों यात्रियों के नाम हैं) बड़े चतुर थे। उन्होंने इन सब बातों का उत्तर बड़ी उत्तम रीति से स्पष्टता-पूर्वक दिया। सम्राट उन्हें प्रायः दरबार में बुलाया करता था क्योंकि यूरोप के विषय में पूरी जानकारी प्राप्त करने के लिये वह अत्यन्त उत्सुक था। दोनों यात्रियों के उत्तरों को सुन कर उसे बहुत कुछ जानकारी होगई। थोड़े ही दिनों में उसे रूम की परिस्थिति का पूर्ण ज्ञान हो गया।

बादशाह अपनी प्रजा को वक्तृत्व कला, ज्योतिष, साहित्य व्याकरण, गणित, प्रकृति विज्ञान और पदार्थ विज्ञान इत्यादि की शिक्षा देना चाहता था और ये विद्यायें योरोप में बहुत कुछ फैल चुकी थीं अतएव उसने इरादा किया कि दोनों यात्रियों को 'पोप' की सेवा में दूत की भाँति भेजे। इसलिये उसने अपने सभासदों से सलाह करके दोनों को अपने एक सरदार 'चगताल' के साथ रवाना कर दिया कि अपने साथ बहुत से यूरोपियन विद्वान लावें

जा उसकी प्रजा को भलीभाँति शिक्षित कर सकें। दोनों यात्री बादशाह का पत्र लेकर पोप के पास रवाना हुये।

नवीन पोप और निकोलो

साम्राज्य-व्यवस्था के अनुसार उन्हें पत्र के साथ एक सुनहली तख्ती (जिसे आज्ञापत्र कह सकते हैं) दी गई जिस पर शहंशाह के हस्ताक्षर थे और साथ ही यह लिखा हुआ था कि "ये दोनों यात्री जिस नगर या सूबे में पहुँचें, वहाँ के राज्य कर्मचारी को उचित है कि उन्हें सवारी दे, उनके व्यय का प्रबन्ध करे और जिस वस्तु की उन्हें अथवा उनके साथियों को आवश्यकता हो, अत्यन्त शीघ्र इकट्ठी की जाये"। दोनों यात्री शहंशाह का यह परवाना (आज्ञापत्र) लेकर चल पड़े। लगभग २० दिन की यात्रा के पश्चात्, चग़ताल सख़्त बीमार पड़ा। उस सरदार को उन्होंने वहीं एक नगर में छोड़ दिया और आगे चल पड़े। प्रत्येक स्थान पर उनके लिए उत्तम प्रबन्ध किया गया। एक बात ऐसी अवश्य थी जो उनके पोप तक पहुँचने में अनेक कठिनाइयाँ उपस्थित करती थी। बड़ी बड़ी नदियों में जब बाढ़ आती थी तो उन्हें एक ही स्थान पर कई दिन तक ठहर जाना पड़ता था। यही कारण था कि उन्हें आरमीनिया के 'ल्याजह' बन्दरगाह तक पहुँचने में ही ३ साल लग गये। ' ? ' वे अप्रैल १२६९ ई० (१३१३ वै०) में 'अकरा' जा पहुँचे।

'अकरा' पहुँचकर सुनने में आया कि २९ नवम्बर १२६८ ई० को चतुर्दश पोप क्लेमण्ट की मृत्यु हो गई अतएव उन्होंने शहंशाह तातार का पत्र 'थ्यूबोल्ड विन्सकोण्टी डी प्यासेजा[१]' को दिया जो मिश्र देश में पोप का वकील था और अकरा में रहा करता था।

१—उसका दूसरा नाम 'टीबाल्डो' अथवा 'टीडाल्डो' भी है।

वहां पहुँच कर दोनों ने अपनी यात्रा का मुख्य मतलब उसे कह सुनाया। 'थ्यूबोल्ड' ने उन्हें नये पोप के चुने जाने तक ठहर जाने की सम्मति दी। इसी समय दोनों यात्री अपने मित्रों और सम्बन्धियों से मिलने के लिये वेनिस चले गये। वहाँ जाकर ज्ञात हुआ कि मास्टर निकोलो की स्त्री का देहान्त हो गया किन्तु १९ साल का एक लड़का 'मार्को' है। यही लड़का इस यात्रा-पुस्तक का प्रधान नायक 'मार्को पोलो' है। संयोग वश पोप के चुने जाने में २ साल का समय लग गया। दोनों यात्री यह सोचकर कि शहन्शाह तातार उनकी प्रतीक्षा करता होगा फिर पोप के वकील 'थ्यूबोल्ड' की सेवा में उपस्थित हुये परन्तु कुछ ठीक न होने के कारण लौटने के लिये 'ज्याजह' बन्दरगाह की ओर रवाना हुये। इसी समय 'कार्ड मीनलोन' (कैथलिक महन्थ) की सभा से 'थ्यूबोल्ड' के पास दूत यह समाचार ले आया कि वह पोप चुना जायगा और उसका नाम अब से 'पोप ग्रेगोरी' (Gregory) होगा, यह घटना १२७१ ई० (१३२८ वै०) की है। 'थ्यूबोल्ड' को ज्योंही यह समाचार मिला त्योंही उसने दूत दौड़ाये कि शहंशाह क़िबलाई खां के उन वेनिस वाले दूतों को वापस लाओ। वापस आने पर उसने सम्राट क़िबलाई खां के नाम पत्र लिखे और उन्हें यात्रियों को देकर उनके साथ दो विद्वान शिक्षक (जिनमें से एक का नाम 'फ्रायर निकोलो डी वेसेंज़ा' और दूसरे का 'फ्रायर गोलेलमो डी ट्रिपोली' था)—भी कर दिये। चलते समय पोपने अपनी ओर से प्रसन्नता प्रकट करते हुये इस मैत्री के लिए शहंशाह तातार को धन्यवाद दिया और कुछ वस्तुएँ

१—कर्नल यूल ने मार्को पोलो का जो यात्राविवरण लिखा है, उसमें दोनों शिक्षकों के नाम क्रमशः 'फ्रायर निकोलस डी वेसेंज़ा' और 'फ्रायर विलियम डी ट्रिपोली' लिखे हैं।

भेट भी कीं। ये लोग पोप से विदा होकर 'ज्याजह' अथवा 'ज्याज़' बन्दर में पहुँचे किन्तु इसी समय सुलतान बाबुल ने 'अरमीनियां' पर आक्रमण कर दिया। दोनों शिक्षक (जो पोपने साथ कर दिये थे) बड़े भयभीत हुये और वहीं से लौट गये।

शेष तीनों यात्री (१-एम० निकोलो २-एम० मीजियो ३-मार्कोपोलो) हर प्रकार की कठिनाइयों का सामना करते हुये लगभग ३½ वर्ष पश्चात 'मोसल', 'बग़दाद', 'हुरमुज़', 'करमान', 'ख़ुरासान', 'बलख', 'बदखशां', 'यारकन्द', 'ख़ुतन' और 'केपिंन गफो' (आजकल इसका नाम शांगटो है) होते हुये तातारियों के प्रसिद्ध नगर 'क्लेमंसो' में पहुँच गये। उनके आने का समाचार सुनकर क़िबलाई खां ने उन्हें सम्मानपूर्वक लिवालाने के लिये आदमी भेजे। दरबार में पहुँचने पर शहंशाह ने उनका बड़ा आदर सम्मान किया। रास्ते की सम्पूर्ण घटनाएँ सुनीं। पोप की भेंट की हुई चीज़ों को पाकर तथा उसका पत्र पढ़कर उसे बहुत प्रसन्नता हुई। यूरोपियन विद्वानों के न आने से उसे दुख हुआ[1]। शहंशाह ने मार्को पोलो के बारे में निकोलो से पूछा कि "यह कौन है"? मास्टर निकोलो ने कहा :- "श्रीमान! यह मेरा पुत्र है।" शहंशाह उससे मिलकर बहुत प्रसन्न हुआ।

मार्को पोलो ने बहुत शीघ्र चार प्रकार की तातारी भाषायें सीख लीं और तातारियों के युद्ध-कौशल, राज्यव्यवस्था तथा आचार विचार से भी अभिज्ञता प्राप्त की। बहुत जल्द उसने

१—कहते हैं कि यूरोपीय विद्वानों के न आने पर सम्राट तिब्बत गये और अनेक बौद्ध भिक्षुकों को अपने साथ प्रजा को उपदेश देने के लिये ले आये।

शहन्शाह के हृदय में घर कर लिया। शहन्शाह ने उसकी योग्यता से प्रसन्न हो उसे दूसरे दरजे का कमिश्नर (राज-दूत) बनाया और अपने दरबार का खास मुसाहिब बनाकर वजीरों की सभा में सम्मिलित कर लिया। धीरे २ शहन्शाह का विश्वास उस पर दृढ़ होता गया और उसने उसे एक भारी काम पर (जो तातार राज्य के 'शानसी', 'शेनसी', 'शिन्चवान', 'यूनन', 'क्यचू' इत्यादि सूबों के राज्य-प्रबन्ध से सम्बन्ध रखता था) नियत किया। मार्को पोलो इन प्रदेशों में गया और बड़ी सुन्दरता से अपना कार्य पूरा किया। वह जहाँ जहाँ से गुज़रा वहाँ की विचित्रतायें, वहाँ के निवासियों के आचार-विचार तथा सामाजिक रीतियाँ, उनके स्वभाव और उन जगहों की प्राकृतिक अवस्था तथा जलवायु इत्यादि के बारे में पूरा विवरण लिखता गया। अपने काम को पूरा करके वह बहुत जल्द लौट आया। उसके क्रम-बद्ध यात्रा-विवरण को सुनकर शहन्शाह अत्यन्त प्रसन्न हुआ और अब मार्कोपोलो की इज्जत पहले से भी ज्यादा होने लगी। शहन्शाह उसकी योग्यता से इतना प्रसन्न हुआ कि २६ साल तक लगातार राज्य-प्रबन्ध-सुधार तथा अन्यान्य कामों के लिये उसे विभिन्न देशों में भेजता रहा। मार्कोपोलो ने इन कामों को बड़ी खूबी से पूरा किया और उसे इन यात्राओं से बड़ा लाभ हुआ। यों भी उसने शहन्शाह से आज्ञा लेकर सुदूर पूर्वीय देशों की यात्रायें कीं और इस प्रकार पूर्वी देशों के सम्बन्ध की अनेक अज्ञात बातें उसे मालूम हुईं। कितनी ही लाभदायक बातें उसने स्वयं सीखीं। उसकी इन सब यात्राओं का क्रमबद्ध वर्णन पाठक इस पुस्तक में पढ़ेंगे।

यह पहला यात्री था जिसने एशिया के अनेक देशों की यात्राएँ कीं और उनका पूरा वर्णन लिखा। उसने ईरान (फारस)

के मरुस्थलों और हरे भरे मैदानों को देखा, उसने चीन और उसकी बड़ी २ नदियों, उसकी घनी आबादी, उसके ऐश्वर्यशाली नगरों और व्यापारिक वस्तुओं का ब्योरेवार वर्णन किया। उसने तिब्बत, लाऊस, (लासा), ब्रह्मा, श्याम, चीन, कोचीन, जापान, सुमात्रा; जावा, बोर्नियो (पूर्वी द्वीप समूह), सीलोन, (लङ्का). भारतवर्ष, अडंमन, अफरीका, जंजीबार, मेडागास्कर तथा साइबेरिया और आरकटिक ओशन (उत्तरी महासागर) इत्यादि अनेक स्थानों के वृत्तान्त जो इस समय तक किसी को मालूम न थे अपनी पुस्तक में लिपिबद्ध किये हैं। इन स्थानों का वृत्तान्त जानने में लोग मार्कोपोलो के ऋणी हैं। इनमें बहुतेरे स्थान तो ऐसे हैं जिनके बारे में मार्कोपोलो के पश्चात आजतक किसी ने कुछ नहीं लिखा।

स्वदेश की यात्रा

तीनों यात्री बहुत दिनों तक शहन्शाह तातार के दरबार में रहने के कारण बहुत धनी हो गये। अब उनके हृदय में स्वदेश जाने की इच्छा उत्पन्न हुई। सम्राट बहुत बुड्ढा हो गया था इस-लिये यात्रियों ने सोचा कि अभी से ही चले चलना ठीक है। अन्यथा सम्राट के मरने के बाद शायद हम लोगों को जाने की आज्ञा न मिले अतएव उन्होंने शीघ्र वेनिस लौट जाने का पक्का इरादा कर लिया और एक दिन जब बादशाह बहुत प्रसन्न था मास्टर निकोलो ने वेनिस लौट जाने की आज्ञा माँगी। शहन्शाह ने कहा कि "तुम इतनी लम्बी चौड़ी भयानक यात्रा में क्यों पड़ना चाहते हो ? यदि तुम्हें धन की इच्छा है तो मैं तुम्हें इससे दुगुनी दौलत और दे सकता हूँ जितनी तुम्हारे पास है।" बहुत दिनों के

सहवास से एक प्रकार का प्रेम उनमें उत्पन्न हो गया था अतएव उसने आज्ञा न दी।

इसके थोड़े ही दिन वाद ऐसा हुआ कि ईरान के वादशाह 'अरगोन' की स्त्री 'ख़ातून वुलगाना' (वलोगा) का देहान्त हो गया। ईरान का वादशाह शहन्शाह तातार का भतीजा था। अरगोन ने अपनी मृत स्त्री की वसीयत के अनुसार क़िवलाई खां की सेवा में तीन दूत रवाना किये और प्रार्थना की कि "मैं अपनी स्त्री के ही वंश की एक १७ साल की लड़की से शादी करना चाहता हूँ" अतएव शहन्शाह तातार की सम्मति से 'ख़ातून कोकाचन' (कोकाची या तौक़ीक़ी) 'अरगोन' से शादी करने के लिये चनी गई और इनके साथ भेज दी गई। किन्तु इस समय तातारियों में जोरों की लड़ाई हो रही थी। इसलिये वे दूत ८ मास की यात्रा के वाद लौट आये और क़िवलाई खां से प्रार्थना की कि इस रास्ते से जाने में सुभीता नहीं है। इसी समय 'मार्कोपोलो' भारतवर्ष के उन हिस्सों से वापस आ गया जहाँ वह कुछ जहाजों के काम पर गया हुआ था। लौट कर उसने शहन्शाह से निवेदन किया कि भारतवर्ष के वे स्थान अत्यन्त सुरक्षित एवं विचित्र हैं। यह वात कहीं ईरानी दूतों के कान पड़ गई अतएव उन्होंने शहन्शाह से प्रार्थना की कि हम लोग समुद्र के मार्ग से वापस जाना चाहते हैं इन तीनों वेनिस निवासियों को जो समुद्र यात्रा में निपुण हैं हमें वापस जाने के लिये दे दिया जाय। पहले तो शहन्शाह उनकी इस प्रार्थना पर अप्रसन्न हुआ परन्तु पीछे से आज्ञा दे दी। एक वेड़ा चौदह जहाजों का तैयार कराया गया और विदाई के दिन शहन्शाह ने तीनों यात्रियों को वुला कर अपना प्रेम और अलग होने का दुःख प्रगट किया। चलते

समय उन्हें एक सुनहरी तखती दी जो वास्तव में आज्ञा-पत्र था और जिस पर यह लिखा हुआ था:—

"ये यात्री जहाँ जहाँ मेरे साम्राज्य में से होकर गुज़रें उन्हें स्वतन्त्रतापूर्वक जो चाहे करने दिया जाय। इनके प्राण और धन की हर तरह से रक्षा की जाय। इनकी सवारी और यात्रा का पूर्ण प्रबन्ध किया जाय और जिस वस्तु की जिस समय आवश्यकता हो वह उसी समय लाई जाय"। उन्हें शहंशाह ने यह भी आज्ञा दी कि तुम लोग मेरी ओर से 'पोप', फ्राँस, स्पेन तथा इँगलैंण्ड एवं अन्य क्रिश्चियन राज्यों में राजदूत समझे जाओ। यह सब समझा बुझा कर तथा बहुत सा धन, हीरा जवाहिर देकर उन्हें विदा किया।

यह झुण्ड 'जैतून' बन्दर से (जिसे अब संचू कहते हैं) १२९२ ई० (१३४९ वै०) में रवाना हुआ किन्तु तूफान की अधिकता से २६ महीने पश्चात् निश्चित स्थान पर पहुँच सका (१३९४ ई० अथवा १३५१ वै०)। रास्ते में उन दूतों का देहान्त हो गया जो ईरान से आये थे। जब ये तीनों मनुष्य उस स्त्री को लेकर शाह ईरान के दरबार में हाज़िर हुये तो मालूम हुआ कि 'अरगोन' (जिसके लिये वह स्त्री लाई गई थी) मर गया अतएव उस स्त्री की शादी तत्कालीन बादशाह, 'कीखातू' के बेटे 'गाज़न' के साथ कर दी गई। तीनों यात्री ९ मास तक वहाँ रहे। इसके बाद, शाह '.कीखातू' का आज्ञापत्र लेकर स्वदेश वेनिस को लौटे। रास्ते में उन्हें खबर मिली कि शाहन्शाह तातार मर गया।

तीनों यात्री 'तराबज़न्द' होते हुये कुस्तुनतुनिया पहुँचे। कुस्तुनतुनिया से 'निग्रो पौण्ट' और 'निग्रोपौण्ट' से १२९९ ई० (सन् १३५६ वै०) में वेनिस जा पहुँचे।

मार्कोपोलो पर संकट

इस समय 'वेनिस' और 'जनेवा' दो प्रजातंत्र राज्य थे, जो परस्पर शत्रुता रखते थे। दोनों ही स्वतंत्र थे और 'लीवाएट', क्रीमिया तथा रूम सागर के आस पास के प्रदेश उनके अधिकार में थे। वे एक दूसरे से तथा 'पीसा' के स्वतंत्र राज्य से सर्वदा लड़ा करते थे। जब युद्ध शुरू होता था तो इन राज्यों के धनिकों से, युद्ध की सामग्रियाँ, जहाजी बेड़े और सैनिकों के इकट्ठा करने में सहायता माँगी जाती थी। प्रायः सामुद्रिक युद्ध होने से जहाज़ों का ही अधिक काम पड़ता था। ये जहाज़ बहुत बड़े नहीं होते थे परन्तु किश्तियों की अपेक्षा अधिक लम्बे चौड़े और मज़बूत होते थे और फ़ौलाद के पतले पत्तरों से जड़कर बनाये तथा लम्बे लम्बे, पतवारों से चलाये जाते थे।

ऐसी ही एक लड़ाई में पोलो वंश को भी सम्मिलित होना पड़ा क्योंकि वह एक प्रसिद्ध और धनी वंश था। यह लड़ाई एक मन्दिर के लिये हुई थी जो 'सेएट सव्वा' के नाम से प्रसिद्ध तथा वेनिस एवं जनेवा राज्यों की सम्मिलित सीमा पर स्थित था। मार्कोपोलो (जिसकी उस समय अत्यधिक प्रसिद्धि थी) एक जहाज़ी बेड़े का कमाण्डर (नायक) नियत किया गया। अभाग्यवश, वह एक लड़ाई में वन्दी कर लिया गया (जो जनेवा वालों के जहाज़ी बेड़े से हुई थी)—यह लड़ाई 'डलमाशीन' के किनारे पर 'करज़ोला' (असकर-ज़ोला) द्वीप में १२९८ ई० में हुई थी।

इस भीषण पराजय के पश्चात् (जिसमें ७ हज़ार आदमी क़ैद कर लिये गये थे) मार्कोपोलो बन्दी बनाकर 'जनेवा' भेज

दिया गया। वहाँ उसे कुछ समय तक कारागृह में रहना पड़ा किन्तु दूसरे साल जब अगस्त १२९९ ई० (आषाढ़ १३५६ वै०) में दोनों राज्यों में सन्धि हो गई तो मार्कोपोलो फिर मुक्त करके वेनिस भेज दिया गया। मार्कोपोलो को इससे जो कुछ कष्ट हुआ हो परन्तु यह निश्चित है कि उसके बन्दी होने से संसार का उपकार अवश्य हुआ क्योंकि, यदि मार्कोपोलो 'करजोला' अथवा किसी अन्य सामुद्रिक युद्ध में बन्दी न होता—जो इन दोनों राज्यों में हुये थे—तो हमें आज उन देशों के वृत्तान्त कुछ भी मालूम न होते जिसका उसने 'विवरण' लिखाया। जो लोग उससे उसकी यात्राओं के बारे में कुछ पूछने आते, उन्हें वह बता दिया करता था किन्तु जब वह जनेवा के कारागृह में क़ैद कर दिया गया तो उसने अपने साथ के एक कैदी 'अस्टीस्यानो' अथवा 'स्टीशैलो' से परिचय प्राप्त किया। स्टीशैलो पीसा नामक राज्य का रहने वाला था और युद्ध में क़ैद कर लिया गया था। वह एक प्रसिद्ध ग्रंथ लेखक था। उसने मार्कोपोलो की उन दूर दूर की यात्राओं को सविस्तर लिख डालने की आज्ञा माँगी। यह बात दिसम्बर १२९८ ई० की है।

यद्यपि उस समय के धनिक लोग किसी बात को लिपिबद्ध करना बुरा समझते थे परन्तु मार्कोपोलो ने प्रसन्नता से उसे उन यात्राओं का विवरण लिख डालने की आज्ञा दे दी और अपनी यात्रा की सब बातें उसे बतला दीं तथा अपनी डायरी भी उसे सहायतार्थ सौंप दी। 'स्टीस्यानो' ने मार्कोपोलो से सुनकर जो विवरण लिखा उससे हमें पूर्वी देशों के वृत्तान्त ज्ञात हुए जिन पर इस समय तक बहुतेरी पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं। चूँकि मार्कोपोलो ने इस विवरण को अपनी ओर से नहीं लिखा वरन् दूसरे के द्वारा लिखाया अतएव प्रायः इस पुस्तक में

मार्कोपोलो का नाम अन्य पुरुष में आया है। जिन स्थानों में उसकी डायरी से कुछ उद्धृत किया गया है, वहाँ वह उत्तम पुरुष में भी प्रयुक्त हुआ है।

यात्रा का आरम्भ

आरमीनिया के वृत्तान्त

आरमीनिया देश (जो फ़ुरात Euphrates—नदी और 'अरारोट' पहाड़ की घाटी के बीच का देश है) के दो हिस्से हैं :—(१) आरमीनिया कोचक (२) मुख्य आरमीनिया। आरमीनिया कोचक का बादशाह 'सबासट' नगर में रहता है, वह अत्यंत न्यायी और उत्तम शासक है। इस देश में बहुत से मज़बूत क़िले और बड़े बड़े नगर हैं। पृथ्वी अत्यंत उपजाऊ और सभी आवश्यक वस्तुओं से परिपूर्ण है। यहाँ हर तरह के पक्षी और पशु पाये जाते हैं। सभी बातें अच्छी हैं परन्तु एक बात ऐसी है जो यहाँ के निवासियों के स्वास्थ्य को हानि पहुँचाती है—वह यहाँ की जलवायु की ख़राबी है।

थोड़े दिन पूर्व इस राज्य के कर्मचारी बड़े वीर तथा साहसी थे। किन्तु मदिरापान की अधिकता से इस समय ये लोग बिल्कुल शक्तिहीन हो गये हैं। आजकल आपस की लड़ाई में ही इनका दिन बीतता है। समुद्र तट पर 'लायास' (एक लेखक ने इसका नाम 'ल्याजह' लिखा है) नामक एक प्रसिद्ध व्यापारिक बन्दरगाह है। मसाले, रेशमी कपड़े, सोना तथा इस देश की अन्यान्य सब बहुमूल्य वस्तुएँ, इस देश के सब भागों से यहाँ बिकने के लिये आती हैं। वेनिस, जनेवा एवं अन्य

स्थानों के बड़े बड़े व्यापारी यहाँ क्रय-विक्रय करने के लिये आया करते हैं। जो लोग इस देश की यात्रा करने जाते हैं, वे प्राय: इस शहर में अवश्य आते हैं।

तुर्कमानिया (तुर्की) में ३ जातियाँ रहती हैं। एक का नाम तुर्कमान है, जो मुहम्मदी हैं। ये लोग बिल्कुल जंगली एवं अशिक्षित हैं और पहाड़ों में ऐसी जगह पर रहते हैं, जहाँ किसी का गुज़र भी नहीं हो सकता और चरागाहें होती हैं क्योंकि इनका गुज़ारा सिर्फ़ मवेशियों पर है। इस देश में तुर्की नस्ल का घोड़ा अच्छा होता है और ख़च्चर भी। शेष दो जातियों के नाम 'यूनानो' और 'अरमनी' हैं। ये लोग कला-कौशल और व्यापार में वहुत बढ़े हुये हैं। यहां संसार में सबसे अच्छे क़ालीन बनते हैं। ये लोग अनेक नगरों और क़सबों में आबाद हैं जिनमें मुख्य २ नगरों के नाम 'कोगनो', 'अकोनियम', 'क़ैसरिया' और 'सबासट' (जहाँ सेंट ब्लेस मसीह के लिये शहीद हुए थे) हैं। इनका शासक एक तातारी राजा है।

मुख्य अरमीनिया एक बड़ा देश है। इसमें वहुत से शहर और क़सबे हैं। इसकी राजधानी 'अरज़ंगा' (अरज़ंगान) है। (एक अन्य लेखक ने इस शहर का नाम अरज़ोग्यां लिखा है) यहाँ दुनिया भर में सबसे अच्छा म्यान बनता है। यहाँ गर्म पानी के प्राकृतिक सोते हैं जिनमें नहाने से स्वास्थ्य पर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ता है। इस देश में 'अरमनी' नस्ल के लोग बसे हुए हैं। राजधानी के अतिरिक्त 'अरग़ैरोन' और 'दारफ़ैज' भी बहुत बड़े शहर हैं। ग्रीष्म ऋतु में बहुत से तातारी अपने मवेशियों और भेड़ों के गल्लों को लेकर यहाँ के हरे-भरे मैदानों में आ जाते हैं और फिर शरद ऋतु में,—जब बर्फ़ अधिक गिरने

लगती है कुछ दिनों के लिये लौट जाते हैं। पीरुथगढ़ में जो तराबज़न्द और तारस या उत्तरी रूम के रास्ते में है (जिसे इस समय बेरूत कहते हैं) चाँदी की खाने हैं। इसलाम धर्म की यह एक किम्वदन्ती है कि नूह के तूफ़ान के समय हज़रत नूह की किश्ती आरमीनिया के अराट पहाड़ी की चोटी पर ठहरी थी किन्तु १७००० फीट ऊँचा होने और सर्वदा वर्फ़ से ढके रहने के कारण किसी को साहस न हुआ कि इस पहाड़ के ऊपर चढ़े और किश्ती का पता लगाये।*

इस देश के दक्षिण में मूसल का राज्य है जिसमें 'याक़ूबी' और 'नस्तूरी' सम्प्रदाय के ईसाई रहते हैं। पहाड़ों में 'कुर्द' और 'अरमनी' जातियों के अतिरिक्त अरबी जाति के लोग (जो मुहम्मदी हैं) पाये जाते हैं। कुर्द लूट मार करके जीवन निर्वाह करते हैं। इस देश में एक इसाई महन्थ भी रहता है जिसे 'जेकोल्ट,' 'जैतोलिक' अथवा 'कैथलिक' कहते हैं। वह उपदेशकों को चुन २ कर इसाई धर्म का प्रचार करने के लिये दूसरे देशों में भेजता है। इस देश के उत्तर में जार्जिया स्थित है जिसकी सीमा पर तेल का एक सोता पाया जाता है। यह तेल खाने के काम में नहीं आता वरन् जलाने और अन्य कामों में। लोग दूर दूर से आकर उसे ले जाते हैं क्योंकि उस देश में और किसी प्रकार का तेल नहीं पाया जाता। [1]सोते से तेल इतनी अधिकता के साथ निकलता है कि एक

---

* सन् १८२९ ई० में एक जर्मन यात्री प्रोफेसर पैरट इस पहाड़ की चोटी पर चढ़ा था।

१—कदाचित यह वही चश्मा है जो कास्पियन सागर के पश्चिमी तट पर बाकू प्रायद्वीप में है और अब रूस के अधीन है।

बार में १०० जहाज़ भर लिये जा सकते हैं। [1]जार्जिया रूस का एक सूबा है। जार्जिया-निवासी सुन्दरता, बाण-विद्या और सैनिक कार्यों के लिये प्रसिद्ध हैं। वे क़ाफ़ पर्वत के वास्तविक निवासी हैं। शताब्दियों तक पूर्वी देशों के शासक इस देश से व्याह के लिये ख़ूबसूरत औरतें लाते रहे। ये लोग यूनानियों के ढंग के एक विचित्र धर्म को मानते हैं और छाँटे हुये बाल रखा करते हैं। प्रचीन समय में यहाँ के सम्पूर्ण बादशाहों के मस्तक पर अकाब की शकल बनी होती थी।

जार्जिया का बादशाह 'डेविड' है। प्राचीन समय में यहाँ के बादशाहों का नाम डेविड ही होता था जैसे कि शताब्दियों तक रोम के राजा कैसर कहलाते थे। यह वही देश है जिसे पार करके सिकन्दर, पोनेण्ट (तातारियों का पश्चिमी राज्य) में प्रवेश करना चाहता था किन्तु उसे पार न कर सका क्योंकि एक ओर समुद्र तथा दूसरी ओर ऊँचे २ पर्वत एवं उनके बीच की तंग घाटियाँ थीं। उसने इस स्थान पर दूसरी ओर के लोगों को अपने ऊपर आक्रमण करने से रोकने के लिये एक सुदृढ़ मीनार बनवाई जिसका नाम 'लोहे का फाटक' पड़ा और जिसे 'हद सिकन्दरी' कहना उपयुक्त होगा। अरब निवासी इस फाटक को 'बाबुल अबवाब' (फाटकों का फाटक) कहते हैं। इस घटना का वर्णन सिकन्दर की पुस्तक में भी यों पाया जाता है कि उसने दो पर्वतों के मध्य में तातारियों को किस प्रकार बन्द कर दिया। इस प्रान्त में एक प्रकार की लकड़ी उत्पन्न होती है, जिसे 'वैक्स' कहते हैं। इससे अनेक प्रकार की सुन्दर नकाशीदार चीजें बनाई जाती

१—यह देश कास्पियन सागर और काले सागर के बीच में है। उसका घेरा २८०० मील है।

हैं। यहाँ अनेक प्रसिद्ध नगर और कसबे हैं जिनमें रेशमी और ज़री के कपड़ों की दस्तकारी होती है। यहाँ का बाज़ दुनिया भर में सबसे अच्छा होता है। सभी लोग कारीगर और व्यापारी हैं। यह पर्वतीय देश घाटियों और सुदृढ़ गढ़ों के कारण तातारियों से कभी पराजित न हो सका। इस देश में कुवाँरी इसाई युवतियों की एक सभा है जो "सेन्टल्यूनार्ड ज़कोवी नंस आफ़ नट्स" के नाम से प्रसिद्ध है। इसके सम्बन्ध में एक विचित्र घटना यहाँ लिखी जाती है:—"गिरजे के समीप ही पर्वत से सटी हुई एक झील है जिसमें सिवाय लेण्ट (रोजे के दिन:—ईस्टर से ४० दिन पहले से आरम्भ होता है) के वर्ष के और किसी महीने में मछलियाँ दिखलाई नहीं पड़तीं। लेण्ट के पहिले ही दिन अत्यन्त सुन्दर २ मछलियाँ पानी पर तैरती हुई दिखलाई देती हैं। और वे ईस्टर (ईसामसीह के द्वितीय वार जीवित होने का दिन) की संध्या तक रहती हैं।" यह एक बड़ी आश्चर्यमयी घटना है। इस देश के पर्वत से जो झील मिली हुई है उसका नाम 'बहरे गैलाँ' (कास्पियन सागर) है। और ७०० मील तक चली गई है। यहाँ का रेशम प्रसिद्ध है जिसे गैली कहते हैं। यह रेशम बहुत सुन्दर होता है।

बग़दाद—एक बड़ा ऐश्वर्यशाली तथा सुन्दर नगर है। यह सम्पूर्ण इस्लाम संसार की राजधानी था। यहाँ 'दारुलअलूम' (विद्यापीठ) है जिसमें प्रत्येक विषय की उच्च शिक्षा दी जाती है। नगर के बीच में होकर एक नदी हिलोरें मारती हुई चली गई है। अगणित व्यापारी प्रतिदिन क्रय-विक्रय के लिये यहाँ आते हैं। यहां प्रायः रेशमी और ज़रदोज़ी के वस्त्र बुने जाते हैं जिनपर पक्षियों और जानवरों के काल्पनिक चित्र खिंचे होते हैं। इन्हें 'नासज' और 'नाख' कहते हैं। बग़दाद से

चलकर अठारह दिन की यात्रा के पश्चात् 'क़ैस' नगर आता है। यहाँ से हिन्दमहासागर में प्रवेश करते हैं। बग़दाद से 'क़ैस' तक एक नदी चली गई है और इसके तट पर 'बसरा' नामक एक नगर बसा हुआ है जो चारों ओर जंगलों से घिरा हुआ है। यहाँ का छुहारा (एक मेवा जो सूखे बेर की तरह होता है) प्रसिद्ध है। हलाकू खां (जो पूर्व में तातारियों के देश का शासक है) सन् १२५५ ई० में एक बड़ी भारी सेना लेकर इस 'बग़दाद' पर चढ़ आया और आक्रमण करके इसपर अधिकार कर लिया। उस समय बग़दाद में प्यादों के अतिरिक्त केवल एक लाख सवार थे। जब हलाकू खां ने 'ख़लीफ़ा' के महल पर अधिकार कर लिया तो उसे वहाँ इतना अधिक धन तथा हीरे जवाहिर मिले कि उसकी आँखें चकरा गईं। उसने 'ख़लीफ़ा' से पूछा कि "तूने इतना बड़ा ख़ज़ाना क्यों इकट्ठा किया? तू इससे क्या काम लेता? क्या तुझे मालूम नहीं था कि मैं तेरा शत्रु हूँ और तेरे देश को लेने आ रहा हूँ? तूने उसे सेना और सरदारों में क्यों नहीं व्यय किया जिससे कि तेरे देश की रक्षा की जा सकती थी?" ख़लीफ़ा ने कुछ उत्तर न दिया। इस पर हलाकू खां ने उससे कहा:—"ख़लीफ़ा! चूंकि तुझे धन से प्रेम है अतएव तुझे वही खाने को मिलेगा।" इसके पश्चात् उसने खलीफा को खज़ाने में बन्द कर दिया। वह चार दिन कैद में रह कर मर गये। इस ख़लीफा का नाम 'बिल्ला' था।

बग़दाद राज्य के सूबे इराक़ में एक बड़ा भारी शहर 'तबरेज़' है। यहाँ शिल्प और व्यापार का काम बहुत अधिक होता है और लोग सुन्दर एवं बहुमूल्य रेशमी तथा ज़रदोज़ी के कपड़े बुनते हैं। व्यापार में यह शहर बहुत बढ़ा हुआ है। जनेवा, भारतवर्ष, बग़दाद, गज़्मीर तक के व्यापारी इकट्ठे होते हैं।

यहाँ कई नस्ल के लोग पाये जाते हैं। 'अरमनी,' 'नस्तूरी,' 'याकूबी,' 'ज़रज़ानी,' 'ईरानी' और 'मुहम्मदी'। शहर के चारों ओर दूर दूर तक सुन्दर बगीचे हैं जिनमें अनेक प्रकार के मेवे पाये जाते हैं। मुसलमानों के ज़माने में यह नगर दार्शनिकों, ज्योतिषियों, इतिहासकारों तथा धर्मज्ञों का एक विशेष स्थान हो गया था। 'तब्रेज़' की सीमा पर ईसाइयों के एक मान्य उपदेशक रहते हैं। उनके साथ एक महन्थ और कई और उपदेशक भी होते हैं। वे ऊनी पट्टियाँ बुनते हैं और जब भिक्षार्थ बाहर निकलते हैं तो लोगों को बाँट देते हैं क्योंकि उनसे शरीर की पीड़ा दूर हो जाती है।

ईरान का वृत्तान्त

फ़ारस या ईरान किसी समय में बड़ा बलवान और उन्नत देश था। उसमें एक शहर है जिसे 'सावा' कहते हैं। यह नगर 'तेहरान' (ईरान की राजधानी) से ५० मील दक्षिण पश्चिम में बसा हुआ है। यहाँ तीन मक़बरे हैं जिनमें लाशें जैसी की तैसी रक्खी हुई हैं। उनके बाल और दाढ़ियों में कुछ भी परिवर्तन नहीं होने पाया है। उस देश वाले, उन्हें तीन बादशाहों की क़ब्र मानते हैं। इस नगर से एक दिन के रास्ते पर १६ मील दक्षिण पूर्व में एक नगर 'आवा' है जहाँ अग्निपूजक लोगों का एक सुदृढ़ क़िला है। यहाँ मार्कोपोलो को ज्ञात हुआ कि ये मक़बरे उन तीन आदमियों के बताये जाते हैं जो मसीह की उत्पत्ति का सितारा देख कर उसके दर्शन को गये थे। उनके नाम 'यास्पर,' 'मल्कायर' और 'बेलग़रर' बताये जाते हैं (भिन्न भिन्न जगहों में उनके नाम भी अलग अलग हैं)। इसके सम्बन्ध में एक किम्वदन्ती सुनी जाती है। कहा जाता है कि ये तीनों आदमी क्रम से सोना, लोहबान और मुर ले करके इसलिये चले कि यदि मसीह में ईश्वरीय शक्ति है तो वह लोहबान, यदि हकीम है तो मुर और यदि बादशाह है तो सोना ले लेगा। जब वे उस स्थान पर पहुँचे जहाँ मसीह पैदा हुआ था तो सब से छोटा यात्री अन्दर गया और उसे अपनी उम्र का पाया। यही हालत दूसरे और तीसरे के जाने पर भी हुई, परन्तु जब सब मिल कर एक साथ उसे देखने अन्दर गये तो उसे एक बच्चे की

तरह खेलता हुआ पाया। सब को बड़ा आश्चर्य हुआ। तीनों चीज़ें (सोना, लोहा और मुर) उसने स्वीकार कर लीं जिससे सब ने समझा कि वह सच्चा शक्तिमान, सच्चा बादशाह और सच्चा हकीम है। मसीह ने उन्हें एक बन्द डिब्बा दिया जिसे लेकर वे लौट गये। कुछ दूर जाने पर उनकी उत्कण्ठा अत्यन्त तीव्र हुई कि देखें इसमें क्या है? खोलने पर उसमें से एक पत्थर निकला। उनकी समझ में न आया कि इस पत्थर का क्या अर्थ है। लोगों का ख़्याल है कि उससे यह मतलब था कि 'जो विश्वास तुममें उत्पन्न हुआ है वह चट्टान की तरह दृढ़ और चिर-स्थायी हो।' उन्होंने उस पत्थर को कुँए में छोड़ दिया। कहते हैं कि उसी समय आसमान से एक प्रकार की आग निकल कर उस कुएँ पर उतरी। वे तीनों इस घटना को देख कर बहुत भयभीत और चकित हुए और पत्थर के इस तरह खो देने पर अफ़सोस करने लगे। कहा जाता है कि उस आग को बड़े आदर के साथ ले जाकर उन्होंने एक पवित्र स्थान पर रखा। वह स्थान 'क़िला गबरा' कहलाता है जहाँ वह अग्नि बराबर जलती रहती है, कभी बुझती नहीं। पारसी लोग उसे ईश्वर की एक ऊँची शक्ति मान कर उसकी पूजा करते हैं। यदि आग कभी बुझ जाती है तो आस पास के किसी अन्य स्थान से (जहाँ उसी विश्वास के आदमी मिलते हैं) आग लाकर बड़ी धूमधाम से वहाँ फिर स्थापित की जाती है। तीनों आदमियों में से एक 'साबाह' दूसरा 'आब' और तीसरा 'गबरा' का रहने वाला था। उस देश के लोगों में अग्नि पूजा की उत्पत्ति के विषय में यही किम्वदन्ती प्रचलित है। परन्तु इस घटना में बहुतेरी बातें ऐसी हैं जिनसे उस घटना की निस्सारता सिद्ध होती है। एकाएक विश्वास करने को जी नहीं चाहता।

ईरान एक बड़ा देश है। इसमें आठ सूबे हैं—(१) इराक़ (२) कुर्दिस्तान (३) लोरिस्तान (४) शलस्तान (५) तेहरान (६) शीराज़ (७) मध्य ईरान (८) शावं गारह। फ़ारस के घोड़े प्रसिद्ध हैं किन्तु गधे, घोड़ों की अपेक्षा, अधिक अच्छे और बड़े होते हैं जो भारत की पश्चिमी सीमा पर बेचे जाते हैं। इस देश के लोग लालची, चोर, ख़ून करने वाले होते हैं। यहाँ प्रति दिन हत्यायें हुआ करती हैं और सौदागर लूटे जाते हैं। ये लोग इस्लाम धर्म को मानते हैं। बड़े शहरों के निवासी व्यापारी और कारीगर हैं, वे रेशम और ज़रदोज़ी का काम अच्छा करते हैं। इस देश में गेहूँ, रुई, जौ, बाजरा, शराब, मेवे और रेशम के कीड़े बहुत पैदा होते हैं। यज़्दो (याज़्बो) एक बड़ा और ऐश्वर्यशाली नगर है। यहाँ व्यापार बहुत अधिक होता है। रेशम की दस्तकारी ख़ूब होती है। यज़्दो से आगे बढ़ने पर एक बड़ा मैदान है जिसमें अच्छे अच्छे मेवे लगे हुए हैं। 'यज़्दो' से आगे चलकर ७ मंज़िल अर्थात् १९५ मील का मैदान पार करने पर 'किरमान' मिलता है। 'किरमान' में ईरान के बादशाह की ओर से एक अफसर रहता है। यहाँ फ़ीरोज़ा तथा अन्य बहुमूल्य मणियाँ पहाड़ से निकलती हैं। यहाँ फ़ौलाद (जो हिन्दवान के नाम से प्रसिद्ध है) भी निकाला जाता है। निवासी शिल्पकार हैं। कवच, ज़ीन, लगाम, तलवार, धनुष, तरकस और हर प्रकार के हथियार अच्छे बनते हैं। स्त्रियाँ, लड़कियाँ विभिन्न रंग के रेशमी वस्त्रों पर सूचीकारी का काम करती हैं, और उनपर बेल-बूटे इत्यादि बड़ी सुन्दरता से बनाती हैं। परदे, तकिये, तोशक, रज़ाइयाँ बहुत अच्छी बनती हैं। पहाड़ों पर अच्छे बाज़ पाये जाते हैं। किरमान से चलकर ८ दिन की यात्रा के बाद (जिसमें एक हरा-भरा और उपजाऊ मैदान तथा अनेक सुन्दर कसबे मिलते हैं)

एक पहाड़ के पास पहुँचते हैं। पहाड़ को पार करके एक ढालुआँ मैदान मिलता है जिसे पार करने में दो दिन लगते हैं। इसके बाद एक चौड़े मैदान में 'कमाऊं' या 'कमान्दो' (हम्दी या हमदान जो बादशाह ओकयानूस डेक्टस के अधिकार में है) में जा पहुँचते हैं। यहाँ जाड़े के दिनों में पिस्ता, बादाम, सेब, नासपाती तथा अंगूर इत्यादि बहुत होते हैं।

यहाँ के बैल ऐसे सुन्दर और मजबूत होते हैं कि दुनियाँ के किसी और हिस्से में नहीं होते। यहाँ की भेड़ गधे के बराबर और उसकी दुम चक्की के पाट की सी होती है। यहाँ एक दोगली जाति निवास करती है जो पथिक समूह पर डाका डाल कर अपना निर्वाह करती है, उसका नाम 'करोना' अथवा 'करानी' (दोगल) है। ये लोग घोड़ों पर सवार होकर सम्पूर्ण देश में फैल जाते हैं, पशु और मनुष्य जो मिलता है, उसे पकड़ लेते हैं। औरतों और मर्दों को गुलामों (दास) की भाँति बेच डालते हैं। जिस देश में होकर ये निकलते हैं उसे नाश ही कर डालते हैं।

इन डाकुओं का सरदार 'नुकदर' कहलाता है। यह अपने चचा चग़ताई खां के यहाँ रहा करता था। कुछ दिनों के पश्चात् चचा का घर छोड़ कर और सवारों की एक बड़ी सेना ले 'बदख़शां', 'पाशायदेर' और 'हरदरी' (सिंध और पंजाब की सीमा पर है) को लूटता उजाड़ता हुआ सूबा 'बाल्योर'* में

* बाल्योर—मार्सडन साहब लिखते हैं कि यह लाहौर है। 'खानीकफ' और टाड साहब के मत से यह 'बाल्योर' भावलपुर रियासत में एक गाँव है। जेनरल कनिंघम लिखते हैं कि यह झेलम नदी के किनारे दरियापुर के पास एक गाँव है। इसमें जेनरल कनिंघम और मार्सडन के हो मत हमें ठीक जान पड़ते हैं क्योंकि जो प्रान्त 'नुकदरखाँ' ने विजय किये थे, लाहौर भी उनमें था। (१२६० ई०)

पहुँच गया। उसे जीत कर देहली के सुलतान ग़यासुद्दीन बलबन से शासन की बागडोर छीन अपने हाथ में ले ली। मार्कोपोलो के झुण्ड को भी उसने लूटा था किन्तु मार्कोपोलो उसके हाथ नहीं लगा। उसने 'कौसाली'—ग्राम में भाग कर अपनी रक्षा की। उसके साथ के लगभग सभी मनुष्य मार डाले गये।

'कौसाली' ग्राम के बाद फिर एक मैदान आता है जिसका रास्ता ५ दिन का है। इसमें डाकुओं की अधिकता है। इस मैदान को 'रुदबारुल अस' ('रुदखाना' घाटी जो रुदबार के समीप है) कहते हैं। इसके पश्चात् 'फारमूसा' नाम का एक बड़ा मैदान मिलता है जो सुन्दर प्राकृतिक दृश्यों—सरिताओं और निर्झरों से अत्यंत शोभाशाली होगया है। इस मैदान में नाशपाती, सेब, नारंगी, अंगूर और केले इत्यादि के वृक्ष हैं, जिनमें फले हुए फलों पर बैठे हुए सुन्दर पक्षी किलोल किया करते हैं। इस मैदान को दो दिन में पार करके समुद्रतट 'हुरमुज़' (यह बन्दरगाह वर्तमान 'बन्दर अब्बास' के निकट था) बन्दर में पहुँचा जहाँ जहाज़ों और व्यापारियों का जमघट लगा रहता है और जहाँ से बहुमूल्य रत्नादि, रेशमी कपड़े, हाथीदाँत और मसाले भारतवर्ष को भेजे जाते हैं। यह अनेक नगर और क़स्बों की राजधानी है। बादशाह का नाम रुकनुद्दीन अहमद (इसका दूसरा नाम फख़्रुद्दीन अहमद भी पाया जाता है) है। यहाँ की रीति है कि जो व्यापारी गरमी की अधिकता से यहाँ मर जाते हैं, बादशाह उनके माल पर अधिकार कर लेता है। खजूर और मसाले से यहाँ एक प्रकार की शराब बनती है जिसके पीने से पहले तो दस्त होने लगते हैं, और फिर आदमी धीरे धीरे नीरोग तथा स्वस्थ हो जाता है। यहाँ के निवासियों में यह विचित्रता है कि वे तन्दुरुस्ती की अवस्था में कभी मांस

और गेहूँ की रोटी नहीं खाते क्योंकि ऐसा करने से वे बीमार हो जाते हैं परन्तु बीमारी की हालत में वे इसे अवश्य खाते हैं। उनका साधारण और वास्तविक भोजन खजूर, मछली और प्याज है। इन लोगों के जहाज़ मज़बूत न होने के कारण तूफ़ान का सामना नहीं कर सकते। उनमें यात्रा करना बड़े जोखिम का काम है क्योंकि वे प्रायः समुद्र में डूब जाते हैं। यहाँ के लोग भारतवर्ष से नारियल के रेशे मँगा कर रस्सियाँ बनाते और उससे बाँध कर जहाज़ के तख़्ते मिलाते हैं। यहाँ के निवासी प्रायः मुसलमान हैं। इनका रंग काला होता है। गरमी के दिनों में ये लोग शहर छोड़ देते हैं क्योंकि गरमी बहुत अधिक पड़ती है, दिनभर जहरीली लू चला करती है। लोग पानी के अन्दर घुसकर जान बचाते हैं, ऐसा न करें तो मर जायें।

मार्कोपोलो ने एक घटना लिखी है जिससे उस विषैली लू की ताकत का कुछ अनुमान किया जा सकता है। वह लिखता है :—

"शाह हुरमुज़ ने शाह किरमान को कर नहीं दिया था। शाह किरमान ने सोचा जब नगर निवासी नगर छोड़ कर चले जाते हैं उस समय एक बड़ी सेना भेज कर वसूल किया जावे अतएव १६०० सवार और पांच हज़ार प्यादे नियत समय पर भेज दिये गये। पथ प्रदर्शक (रहबर) की भूल से वे वास्तविक रास्ते को भूलकर दूसरी ओर जा निकले और एक उजाड़ स्थान में डेरा डाल दिया। प्रातःकाल दस बजे के लगभग जब वे यात्रा कर रहे थे 'समूम' (ज़हरीली लू और आँधी मिश्रित हवा) ने उन्हें आ घेरा। असह्य गरमी से दम घुट जाने के कारण उनमें से एक भी जीता न बचा और यों सिर्फ़ कठिन गरमी के कारण

सात हज़ार आदमी मर गये। जब 'हुरमुज़' निवासियों ने यह खबर सुनी तब उन गरमी से मरे हुए लोगों को दफ़न करने को इसलिये वहाँ पहुँचे कि कहीं उनकी लाशों के रह जाने के कारण बीमारी न फैले। वे उस स्थान पर पहुँचे जहाँ वह सेना दम घुट जाने के कारण मरी हुई पड़ी थी किन्तु जब लाशों के बाज़ू पकड़ कर गढ़े की तरफ घसीटने लगे तो उनके रुण्ड (धड़) जो बिलकुल भुन गये थे, भुजाओं से अलग हो गये! अतएव लोगों ने लाशों के पास ही गढ़े खोदकर उन्हें दफन किया।" संसार के इतिहास में गरमी की असह्यता का इससे बढ़कर और कोई उदाहरण मिलना कठिन ही नहीं बरन् असम्भव है।

"इस देश में गेहूँ, जौ और अन्य अनाज नवम्बर में बोये तथा मार्च में काटे जाते हैं। खजूर की फस्ल मई मास में होती है। जब कोई आदमी मर जाता है तो उसकी स्त्री को चार साल तक प्रतिदिन एक बार शोक मनाना पड़ता है। यह मातम रखनी औरतों से भी कराया जाता है। 'किरमान' और 'हुरमुज़' के मध्य में एक सुन्दर मैदान है। भोजन की वस्तुएँ सस्ती हैं किन्तु यहाँ का पानी इतना अधिक कड़ुवा है कि जो भोजन इस पानी से बनाया जाता है वह भी कड़ुवा हो जाता है। यहाँ ऐसे स्नानागार भी बनाये जाते हैं कि जिनमें नहाने से स्वास्थ्य सुधरता है। पेट का दर्द और फोड़े इत्यादि अच्छे हो जाते हैं। 'किरमान' से आगे बढ़ने पर एक बालुकामय उजाड़ मैदान पड़ता है जिसे 'लूतका रेगिस्तान' कहते हैं। यह तीन दिन में समाप्त होता है। इस रेगिस्तान में पानी, मनुष्य और जानवरों का नाम तक नहीं है। केवल एक सोता मिलता है जिसे 'रुद' कहते हैं। उसका पानी इतना कड़ुवा है कि पिया नहीं जाता। यदि पी भी लिया जाय तो मनुष्यों और पशुओं का दस्त आने लगते हैं। जानवर तो प्रायः

मर ही जाते हैं। इसके पार करने के पश्चात् एक सुन्दर भूमि तथा मीठे और ताजे पानी का एक चश्मा (सोता) मिलता है जिसकी सतह पर कहीं कहीं छेद होते हैं। यह चश्मा थके माँदे मुसाफिरों का बड़ा आराम देता है। इसके पश्चात् एक और उजाड़ खण्ड मिलता है जो चार दिन में समाप्त होता है और ठीक पहले रेगिस्तान को तरह है किन्तु इसमें जंगली गधे मिलते हैं। इस मैदान को पार करके मुसाफिर शहर 'कोहबुनान' (किवियान) में जा पहुँचते हैं।

— —

अन्य देशों का हाल

'कोहबुनान' एक बड़ा नगर है। निवासी मुसलमान हैं। यहाँ लोहा और फौलाद बहुत अधिक पाया जाता है। बड़े बड़े सुन्दर आइने (दर्पण) बनाये जाते हैं। तूतिया भी तैयार किया जाता है। एक प्रकार की मिट्टी यहाँ खानों से निकाली जाती है, इसे आग की भट्टी में रखकर आग लगा देते हैं। भट्टी के ऊपर लोहे का जंगला लगा होता है। इस मिट्टी में से जो भाप धुआँ निकलकर जंगले में बैठ जाती है उसी को तूतिया कहते हैं। यह आँखों के लिए अत्यन्त लाभदायक है।

' कोहबुनान ' से चलकर ' तन व कोन ' सूबे तक पहुँचने में एक उजाड़ खण्ड से होकर ८ दिन तक यात्रा करनी पड़ती है। इस उजाड़ भूखंड में वृक्ष नहीं मिलते। पानी बहुत कड़ुवा होता है अतएव ताज़ा खाना और पानी यात्री अपने साथ ले जाते हैं। सूबा 'तन व कीन' के वृहत् मैदान में एक 'अरबरी सूल' पाया जाता है जिसे लोग 'अरबरी सेक' भी कहते हैं। यह एक लम्बा और मोटा वृक्ष होता है। इसकी छाल एक ओर को काली और दूसरी ओर सफेद होती है। लकड़ी पीली होती है। इसके आसपास सौ सौ मील तक वृक्ष दिखलाई नहीं पड़ते। केवल एक ओर दस मील के अन्तर पर तुम्हें कुछ छोटे वृक्ष मिलेंगे। यह एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान है। यहीं पर सम्राट सिकन्दर ने दारा को पराजित किया था।

इस सूबे के नगरों और देहातों में प्रत्येक वस्तु अधिकता के साथ उत्पन्न होती है। निवासियों का मज़हब इस्लाम है। ये लोग दुनिया-भर में सब से ख़ूबसूरत होते हैं।

इसके पश्चात् एक देश आता है, जहाँ प्राचीन समय में एक नास्तिक रहा करता था; इसीलिए उसका नाम 'मसकिन मुलाहदा' पड़ गया क्योंकि मसकिन फारसी में निवास-स्थान को कहते हैं। वह अपने को "शेखुल जब्बाल" के नाम से पुकारता था। उसका नाम वास्तव में अलाउद्दीन था और वह मुहम्मदी धर्म का अनुयायी था। वह कहा करता था कि मुहम्मद साहब ने मुझे एक बिहिश्त (स्वर्ग) देने का वचन दिया था और वह मुझे मिल गया। उसके समीप के मुसलमान उसके मकान को ही स्वर्ग समझते थे। उसने दो घाटियों के मध्य एक सुंदर उपवन बनवाया था जिसमें अनेक प्रकार के मेवे और फल फूल पाये जाते थे। उसका मकान अत्यन्त सुंदर था। गृह-कौशल दर्शनीय था। दीवारों पर अनेक प्रकार की लतायें बेलबूटे की काढ़ी गयी थीं। नलों द्वारा मकान के एक हिस्से से दूसरे हिस्से में पानी, दूध, शराब और शहद भेजा जाता था, सर्वदा नाच-रंग हुआ करता था। सुंदरी युवतियाँ प्रत्येक समय वहाँ उपस्थित रहती थीं जो हर तरह के बाजे बजा सकती थीं तथा अच्छी तरह नाच गा सकती थीं तथा दर्शकों को प्रसन्न रखने में सब प्रकार समर्थ थीं।

इस वाटिका में केवल वही लोग आ सकते थे जोकि भाँग पीना स्वीकार कर लेते थे। वाटिका में जाने का केवल एक रास्ता था किन्तु उस दरवाजे पर उसने एक ऐसा सुदृढ़ क़िला बनवाया था कि उसे सारी दुनिया भी नहीं अधिकृत कर सकती थी। उसके दरबार में १२ से २० वर्ष तक की आयु के युवक (जिन्हें

लड़ने भिड़ने से प्रेम होता था) रहते थे। वह उन्हें स्वर्ग की कहानियाँ सुनाया करता था जिसे वे लोग अत्यंत विश्वास की दृष्टि से देखते थे। वह दो चार आदमियों को भांग पिला कर सुला दिया करता और फिर बेहोशी की अवस्था में ही उन्हें वाटिका में एक सजे-सजाए स्थान पर लिटा दिया करता था। जब वे लोग जागते तो अपने को एक ऐसे विचित्र स्थान पर पाते जहाँ चारों ओर सुंदर वाद्यध्वनि हो रही है। परियों-सी सुन्दरियाँ नाच रही हैं। मलय समीरण का संचार हो रहा है, अतएव उन्हें विश्वास हो जाता था कि वे बैकुण्ठ में हैं, इस तरह उसने वहाँ के निवासियों के हृदय पर यह बात बैठा दी थी कि "हम नबी हैं"। जब वह किसी आदमी को कहीं भेजना चाहता तो उसे भंग पिला कर तथा बेहोश करके क़िले में ले आता, जागने पर वह आदमी अपने को एक ऐसे स्थान पर पाता जो उसके ख्याल से बाहर था और इसलिये वह घबड़ा जाता, इस पर वह अलाउद्दीन के सम्मुख उपस्थित किया जाता। अलाउद्दीन पूछता कि "तू कहाँ से आया है?" वह जवाब देता कि "बिहिश्त (स्वर्ग) से—जैसा कि मुहम्मद साहब ने बताया है।" इन सब विचित्र बातों के कारण जो लोग अब तक उसमें नहीं प्रवेश कर सके थे, उन्हें भी उसे देखने की इच्छा होती। इस ढंग से उस धोखेबाज़ अलाउद्दीन ने अपने शत्रु शासकों को दबाने की एक विचित्र युक्ति निकाली थी। जब उसे किसी समान शक्ति वाले शासक को मारना होता तो वह किसी जवान को आज्ञा देता कि "जाओ, अमुक मनुष्य को मार आओ, लौटने पर फिरिश्ते तुझे स्वर्ग में पहुँचा देंगे।" वह युवक स्वर्ग तक पहुँचने की उत्कण्ठा में सम्पूर्ण कठिनाइयों का सामना करने को तैयार हो जाता था। इस युक्ति का फल यह

हुआ कि सम्पूर्ण शासक उससे पराजित हो गये और उसे कर देने लगे। उसके दो और भी प्रधान सहयोगी थे, जो लोगों को धोखा देकर इन्द्रजाल दिखाया करते थे। एक 'दमिश्क़' और दूसरा 'कुर्दिस्तान' में नियत किया गया था। किन्तु हलाकू खां* ने उसके इन अत्याचारों का हाल सुनकर अपने बहुत से सरदार १०७२ ई० में उसको पराजित करने के लिये नियत किये जिन्होंने तीन साल तक बराबर क़िला घेर रखा। जब गढ़ निवासियों के पास भोजन का कुछ सामान न रह गया सेना द्वारा सरदारों ने गढ़ जीत कर अलाउद्दीन को क़त्ल कर डाला और उस वाटिका को भी अपने अधिकार में कर लिया।

इस क़िले से आगे चल कर सुन्दर मैदानों, हरी-भरी घाटियों, खूबसूरत पहाड़ियों और मेवेदार बग़ीचों तथा कभी कभी पचास या साठ मील के जलहीन मरुस्थलों में होते हुये ६ दिन पश्चात् 'बुशहर गान' में (जो बलख़ से ९० मील पश्चिम है) पहुँचते हैं। यहाँ के ख़रबूजे दुनिया भर में सब से मीठे होते हैं।

यहाँ से आगे चल कर 'बलख़' आता है जो एक बहुत बड़ा शहर है। कहा जाता है कि सम्राट सिकन्दर ने दारा को लड़की से यहीं शादी की थी।

इसके पश्चात् 'दोगाना' ('दीहानाह') पड़ता है। 'बलख़' से यहाँ तक पहुँचने में १२ दिन लगते हैं किन्तु रास्ते में आबादी

* जान पड़ता है कि यह कोई दूसरा हलाकू खां था क्योंकि मार्को पोलो ने हलाकू ख़ां का होना तेरहवीं सदी में लिखा है। इस पुस्तक में इससे पूर्व दोनों यात्रियों का हलाकू ख़ां से भेंट होना लिखा गया है। और ये यात्री १२५५ के लगभग उससे मिले थे॥

का नाम भी नहीं है क्योंकि डाकुओं के डर से लोगों ने पहाड़ी क़िलों में निवास-स्थान बना लिया है। इसलिये मार्ग में शिकार और पानी के अतिरिक्त कोई चीज़ खाने को नहीं मिलती।

बारह दिन के बाद एक मोरचाबन्द स्थान 'टालीकान' में पहुँचते हैं जहाँ नमक के पहाड़ हैं। बहुत दूर दूर से लोग यहाँ नमक लेने आते हैं। दूसरे पर्वतों पर बादाम और पिस्ता बहुत ज्यादा पैदा होते हैं। यहाँ से चल कर तीन दिन पश्तात् एक ऐसा देश आता है जिसमें अंगूर, सेब, नासपाती इत्यादि सम्पूर्ण मेवे बहुत ज्यादा पैदा होते हैं।

आबादी बहुत अधिक है। निवासी मुसलमान हैं किन्तु बड़े झगड़ालू और दुष्ट हैं। शराब बहुत ज्यादा पीते हैं। सर पर केवल एक छोटी सी रस्सी लपेटे रहते हैं। ये लोग बड़े अच्छे शिकारी होते हैं और जानवरों के खाल के कपड़े तथा जूते बनाकर पहनते हैं। इसके पश्चात् 'कशम' नामक एक नगर आता है। इस शहर में से होकर (जो एक अमीर की राजधानी है) एक बड़ी नदी बहती है। 'कशम' अपने ही नाम के सूबे की राजधानी है। किसान पहाड़ों की कन्दराओं में रहते हैं। यहाँ से चलकर एक ऐसे प्रदेश में से होकर जाना पड़ता है जो बिलकुल उजाड़ है। तीन दिन में इसे पार करके 'बदख़शां' की सीमा में प्रवेश करते हैं।

बदख़शाँ

बदख़शां एक ऐश्वर्यशाली राज्य है और बहुत दिनों से एक ही वंश के हाथ में इसका अधिकार चला आता है। यह वंश, सम्राट सिकन्दर और दारा की बेटी के द्वारा उत्पन्न हुआ है। इस वंश के लोग अपने को 'ज़ूउल करनीन' कहते हैं। इस

राज्य में मुहम्मदी मज़हब के तुर्क, तातारी और अरब बसते हैं जो तुरकी और ईरानी भाषायें बोलते हैं। यहाँ का लाल (हीरे की जाति का एक मणि) प्रसिद्ध है। ये लाल अति सुन्दर एवं बहुमूल्य होते हैं और पास की एक पहाड़ी से निकाले जाते हैं किन्तु अमीर बदख़शां को छोड़कर और किसी को इसके खुदवाने की आज्ञा नहीं है। यदि कोई मनुष्य चोरी से ऐसा करे तो पता चल जाने पर उसे जान और माल दोनों से हाथ धोना पड़ता है। अमीर बदख़शां इन लालों को उपहार में देता तथा बेचता है।

इस देश में एक पहाड़ है जिसमें से नीलम निकाला जाता है। यहाँ का नीलम संसार में सबसे उत्तम होता है। दो चार पहाड़ियाँ ऐसी भी हैं जिसमें से कच्ची चाँदी निकलती है। यहाँ के घोड़े अपनी सुन्दरता और तेज़ चाल के लिये प्रसिद्ध हैं और ढालुवे पहाड़ी रास्तों पर काम देते हैं। मार्कोपोलो लिखता है कि इस प्रान्त में सिकन्दर (Alexander) के घोड़ों की नस्ल भी पाई जाती थी जिनके ललाट पर एक विशेष पैदाइशी निशान होता था। बदख़शां के अमीर के चचा के अधिकार में यह नस्ल थी। उससे बादशाह ने माँगा। उसने देने से इनकार कर दिया। इस पर बादशाह ने अपने चचा को क़त्ल कर डाला किन्तु उसे घोड़े न मिल सके क्योंकि उसकी विधवा चाची ने उन घोड़ों को क़त्ल करवा दिया। सम्राट सिकन्दर के इन घोड़ों के सम्बन्ध में एक किम्वदन्ती सुनी जाती है कि "एक कन्दरा में आकाश लोक से उतर कर हरसाल एक घोड़ा आता था। उस घोड़े के पास लोग अपनी अपनी घोड़ियाँ लाकर छोड़ जाते और उससे जो बच्चा पैदा होता था उसे ले जाते थे।" यह कहानी चीनियों की किम्बदन्तियों में से एक है।

इस देश के पहाड़ों में तेज़ बाज़, नाना प्रकार के पशु और

पत्ती, गेहूँ, जंगली भेड़ और वे छिलके के जौ पाये जाते हैं। इन सम्मिलित पहाड़ियों की चोटी पर एक मैदान है। एक दिन की चढ़ाई में वहाँ तक पहुँच सकते हैं। इस वृहत् मैदान में पौदे पाये जाते और अगणित सोते वहते हैं जिनमें भिन्न भिन्न, प्रकार की मछलियाँ होती हैं। हवा ऐसी स्वच्छ और स्वास्थ्यवर्धक है कि जो लोग पहाड़ के नीचे ज्वर इत्यादि रोगों से पीड़ित रहते हैं, वे पहाड़ के ऊपर के इस मैदान में चले जाते हैं और दो तीन दिन में स्वास्थ्य लाभ कर नीचे चले आते हैं। मार्कोपोलो अपनी डायरी में लिखता है कि "मैंने स्वयं अपनी वीमारी की अवस्था में इसका अनुभव किया था।"

इस देश के शहर और क़स्वे प्रायः पहाड़ों पर होते हैं। घाटियों, रास्तों तथा दर्रों के दुर्गम होने के कारण लोगों को वाहरी आक्रमण का कुछ डर नहीं हैं। निवासी अच्छे तीरन्दाज़ तथा शिकारी हैं। प्रायः लोग जानवरों की खाल के कपड़े पहनते हैं क्योंकि कपड़े वहाँ वहुत कम हैं तथा वहुत महँगे विकते हैं। स्त्रियाँ घेरेदार वड़ा पाजामा पहनती हैं।

वदख़्शां के दक्षिण में 'पाशायदेर' नामक प्रान्त है। वदख़्शां से दस दिन की यात्रा में वहाँ पहुँचते हैं। यहाँ के निवासी गन्दुमी (गेहूँ के सदृश) रंग के होते हैं। ये मूर्त्तिपूजक हैं। जादू और भूतप्रेत पर विश्वास करते हैं। पुरुष कानों में सोने की वालियाँ और गले में जवाहिरात जड़े सोने चाँदी के जुगनू पहनते हैं। ये लुटेरे और धोखेवाज़ हैं। यह देश अत्यन्त गर्म है। यहाँ से चल कर ७ दिन की यात्रा के पश्चात् दक्षिणपूर्व में काश्मीर सूवे में पहुँचते हैं।

कश्मीर में भी मूर्त्तिपूजक हैं। इनकी भाषा अलग २ है। ये

जादू और प्रेत विद्या के बड़े जानकार हैं। प्रेतों के द्वारा ये कितनी ही बातें मालूम कर लेते हैं। जादू से वह ऋतुएँ बदल देते, अन्धकार उत्पन्न कर देते तथा अनेक प्रकार की विचित्र बातें (जो असम्भव सी जान पड़ती हैं) कर दिखाते हैं। यहाँ के लोगों का विश्वास है कि सब से पहले हमीं लोगों ने दुनियाँ में मूर्त्ति पूजा का प्रचार किया*। यहाँ के मर्द दुबले पतले और गन्दुमी रंग के होते हैं किन्तु स्त्रियाँ उनकी अपेक्षा बहुत ज्यादा सुन्दर होती हैं। जलवायु उत्तम है। यह देश पहाड़ी है और अगम्य घाटियों तथा दर्रों के कारण बाहरी हमलों से सुरक्षित है। निवासी स्वतंत्र प्रकृति के हैं तथा सुखपूर्वक जीवन निर्वाह करते हैं। यहाँ एकान्त वासी योगी पाये जाते हैं जो संयम, इन्द्रियनिग्रह, उपासना तथा सन्तोष के साथ दिन बिताते हैं। उनकी आयु प्रायः लम्बी होती है और उन्हें लोग शुद्ध और निष्पाप समझते हैं। यहाँ के निवासी खून और बलि नहीं करते। यदि मांस कभी खाते भी हैं तो पड़ोसी मुसलमानों से कटवा कर। ये मूँगा बहुत पसंद करते हैं। किसी समय कश्मीर में बुद्ध धर्म का बड़ा ज़ोर था। हर्ष देव यहाँ का प्रसिद्ध राजा होगया है।

बदख़्शाँ से समरकंद

मार्कोपोलो लिखता है कि "इसके पश्चात् मैं बदख़शां गया और वहाँ से उत्तर पूर्व की ओर रवाना हुआ। बारह दिन

*प्रसिद्ध पुस्तक 'तारीख़ फ़िरिश्ता' में एक स्थान पर लिखा है कि "काश्मीर, जादू, मूर्त्तिपूजा और काल्पनिक शंकाओं का पिता है।" यद्यपि इस लेख से मार्कोपोलो के वर्णन का समर्थन होता है किन्तु हम इसे ठीक नहीं मान सकते।

की यात्रा के पश्चात् (जिसका मार्ग अमीर वदख़शां के देश में से होकर जाता है) एक छोटे से देश में जा पहुँचा और वहाँ से लगातार ३ दिन चलकर 'वख़ान' में प्रवेश किया। यहाँ के निवासी मुहम्मदी और वड़े वीर सैनिक होते हैं। उनका सरदार अमीर वदख़शां का कर्मचारी है। इस देश में हर तरह के जंगली रक्तलोलुप हिंसक पशु पाये जाते हैं। यहाँ से उत्तरपूर्व चलकर ३ दिन की पहाड़ी यात्रा के पश्चात् मैं उस उच्च स्थान पर पहुँचा जिसे 'वामे दुनिया' अर्थात् "संसार की छत" कहते हैं। इस जगह दो पहाड़ियों के वीच एक झील है जिससे एक नदी निकलकर सुन्दर मैदान में वहती हुई आगे निकल जाती है। यहाँ हर तरह के पशु पाये जाते हैं। भेड़ें वड़ी होती हैं और उनके सींग ६ बित्ते=१½ गज़ लम्बे होते हैं। उन सींगों से चरवाहे पानी पीने के प्याले और पशुओं के लिए वाड़े वनाते हैं। इस देश में आवादी और हरियाली का नाम भी नहीं है। यह देश इतना ऊँचा है कि पक्षी वहुत कम दिखाई देते हैं। सरदी का इतना ज़ोर है कि आग अच्छी तरह नहीं जल सकती। यदि जलती भी है तो उससे गर्मी वहुत कम मिलती है और भोजन भी भलीभाँति नहीं पक सकता। यहाँ से मैं उत्तर-पूर्व की ओर रवाना हुआ। रास्ता विलकुल उजाड़ है। आवादी का कहीं निशान भी नहीं। इस देश को '*वूलर' कहते हैं। ४० दिन की लगातार यात्रा के पश्चात् इसे पार करके 'काशग़र' में प्रवेश किया।"

---

*—वूलर—'वूलर' अथवा 'विलोरिस्तान,' पामीर के दक्षिणी देश का नाम है। 'तारीखरशदी' में लिखा है कि 'वूलर' अथवा 'वूलर' एक देश है ज़िसमें कुछ समतल मैदान हैं। उसका घेरा, ४ मास की यात्रा के वरावर है। उसकी पूर्वी सीमा 'काशग़र' और 'यारक़न्द' है। उत्तर में

"काशग़र पहिले ज़माने में एक बड़ा राज्य था किन्तु इस समय वह 'ख़ां आज़म' को कर देता है। निवासी मुहम्मदी हैं। ये लोग व्यापार और कारीगरी अधिक करते हैं। देश में चारों ओर सुन्दर वाटिकायें और अंगूर के बड़े बड़े बगीचे हैं। कुछ समय पहले यहाँ थोड़े नस्तूरी इसाई रहते थे, उनके गिरजे भी थे किन्तु वे लोग बड़े गन्दे होते थे और अभक्ष्य वस्तुएँ खाते थे। इस देश को पार करने में मुझे पाँच दिन लगे।"

समरक़न्द और यारक़न्द का बयान

"समरक़न्द एक प्रसिद्ध धनी, नगर है। इसमें अधिकांश आबादी मुसलमानों की है। इनका राजा किबलाई खां का भतीजा 'कीदू खां' है, किन्तु दोनों में गहरी शत्रुता है।"

'समरकन्द' का सूबा ५ दिन की यात्रा में समाप्त हो जाता है। निवासी, मुहम्मदी नस्तूरी और याकूबी हैं। यहाँ सभी वस्तुएँ ख़ूब उत्पन्न होती हैं। जल वायु अधिक अच्छा नहीं हैं।"

"इस प्रदेश के पार करने के बाद मैं 'ख़ुतन' नामक देश में पहुँचा। यह देश बड़ा उपजाऊ तथा हरा-भरा है। हर तरह की चीज़ें पैदा होती हैं। अंगूर के बगीचों की गिनती नहीं। शहर और कसबे ख़ूब आबाद हैं। इस देश की राजधानी 'खुतन' नामक नगर है। निवासी सब मुहम्मदी हैं ये लोग बड़े व्यापारी और कारीगर हैं किन्तु अच्छे सैनिक नहीं हैं। यहाँ का राजा 'ख़ाँ आज़म' है।"

बदख़शां, पश्चिम में काबुल और दक्षिण में कश्मीर है।" अभिप्राय यह है कि 'बूलर' वह उजाड़ देश है जिसमें 'यारक़न्द', बालटी, यसीन और चित्राल आदि सम्मिलित हैं।

"ज़रा और आगे बढ़ने पर 'पीन' नाम का प्रान्त है जो क्षेत्रफल में 'ख़ुतन' से कम नहीं है। निवासी मुहम्मदी मत मानते, व्यापार तथा कारीगरी करते हैं। इन लोगों में एक विचित्र रीति प्रचलित है।" यदि कोई मनुष्य यात्रा के लिए बाहर जाता है और २० दिन तक नहीं लौटता तो स्त्री दूसरे मर्द से व्याह कर लेती है और मर्द वापसी पर जिससे चाहता है, शादी कर लेता है। इसी तरह यदि स्त्री भी कहीं जाती है और २० दिन के अन्दर नहीं लौटती तो मर्द दूसरी स्त्री से व्याह कर लेता है और लौटने पर वह स्त्री भी किसी से शादी कर लेती है।"

"यह देश बड़ा उपजाऊ है। चारों ओर हरियाली ही हरियाली दीख पड़ती है। यहाँ हर तरह की चीज़ पैदा होती है। काशग़र से 'लोब' तक सब देश क़िबलाई खां के अधिकार में हैं।"

"इसे पार करके मैंने तुर्कों के प्रसिद्ध सूबे 'ख़ाक़ान' में पैर रक्खा। इसके निवासी मुहम्मदी मत को मानते हैं। राजधानी का नाम भी 'ख़ाक़ान' ही है। इस सूबे का अधिकांश मरुस्थल है। पानी कड़वा है। 'ख़ाक़ान' से आगे ५ दिन चलकर 'लोब' नगर में पहुँचा। यह नगर चीन देश का पश्चिमी प्रवेश-द्वार अथवा फाटक है।

स्थान समझे जाते हैं। इसलिए 'तूराल' और 'गोबी' के मरुस्थलों को मध्य एशिया वाले प्राचीन काल से ही इनकी ख़ास जगह मानते आते हैं। उनका विश्वास है कि इन दो खण्डों में उन आत्माओं की संख्या बहुत अधिक है।" इस विवरण की पुष्टि चीनी इतिहासकार 'मात्वानलिन' के लेख से होती है। वह लिखता है :—

"चीन से काशग़र को दो रास्ते जाते हैं, जिनमें एक लम्बा चौड़ा और दूसरा छोटा है। इस छोटे रास्ते में एक मरुस्थल है जहाँ रेत और ऊपर आसमान के अतिरिक्त कोई वस्तु जहाँ तक दृष्टि जाती है, दिखाई नहीं देती और न तो रास्ते का कोई चिन्ह ही पाया जाता है। हाँ, कहीं कहीं उन अभागे यात्रियों और जानवरों की हड्डियाँ अवश्य मिलती हैं जो इस निर्दय मरुस्थल में आकर प्राण गँवा चुके हैं। इस मरुभूमि की यात्रा में यात्री को स्थान स्थान पर ज़ोर ज़ोर से हँसने की तथा रोने पीटने की आवाज़ें सुनाई देती हैं और यात्री जिन्हें, इन बातों को मालूम करने तथा पता लगाने का शौक़ होता है, प्रायः इन आवाज़ों के फेर में पड़कर रास्ते से भटककर इधर उधर जा रहते हैं और जान से हाथ धो बैठते हैं। ये आवाज़ें प्रेतात्माओं की धोखा देनेवाली आवाज़ें हैं।"

प्रसिद्ध चीनी यात्री 'ह्वानशांग' भी अपनी पुस्तक में मध्य एशिया की यात्रा का हाल लिखते हुए एक स्थान पर इस मरुभूमि के बारे में लिखता है :—

"इस बालुका-राशिमय उजाड़ खण्ड को पार करते समय मुझे सेनायें चलती और कूच करती हुई मालूम हुईं। हथियार चमकते और झण्डे हिलते हुए दिखाई दिये। आदमी दिखलाई देते और ग़ायब हो जाते थे। यह सब उन प्रेतात्माओं के कार्य थे जो यात्रियों के मर जाने से उत्पन्न हुई थीं। पीछे से एक आवाज़ आती थी कि "डरो नहीं, डरो नहीं" अतएव मैं अपने पवित्र धार्मिक ग्रंथ से एक ईश्वरीय मंत्र पढ़ने

लगा। मंत्र पढ़ते ही यह सब दृश्य ग़ायब हो गया और तब कहीं मैं आगे बढ़ने में समर्थ हुआ।"

आफ्रिका के प्रधान रेगिस्तान में भी प्रेतात्माओं का दिखलाई देना और फिर ग़ायब होना बयान किया जाता है। 'मसऊदी' लिखता है :—

"यात्रियों को रात के समय उनसे थोड़ी दूर पर रेगिस्तानों में प्रेतात्मायें चलती फिरती दिखाई देती हैं। मुसाफिर उन्हें साथी अथवा सहयात्री समझ उनके पीछे हो लेते हैं और रास्ते से भटक जाते हैं।"

इतिहासकार 'अपोलोयिनस' लिखता है :—

"उसने और उसके साथी यात्रियों ने 'इण्डस' (सिन्ध) नदी के किनारे रेगिस्तान में संध्यासमय (जब कि चाँदनी निकल आई थी) प्रेतात्माओं का एक झुण्ड देखा। ये आत्माएँ क्षण क्षण में अपना स्वरूप बदलती थीं।"

'इब्नबतूता' अपने यात्रा विवरण में आफ्रिका के मरुस्थल के सम्बन्ध में लिखता है :—

"अकेले यात्री को प्रेतात्मायें तरह तरह से सतातीं और रास्ता भुलाकर जान ले लेती हैं"।

'निकोलो कौंटी' जब 'चाल्डिया' के रेगिस्तान में से होकर यात्रा कर रहा था तो एक रात को शोर सुनकर सोते से उठ बैठा तो क्या देखता है कि आदमियों का एक गोल उसके पास होकर चला जा रहा है। साथी यात्रियों ने उसे बताया कि यह प्रेतात्माओं का झुण्ड है जो रेगिस्तानों में चक्कर लगाता रहता है और यात्रियों को भुलाकर उनकी जान ले लेता है।"

स्काटलैण्ड के पर्वतीय प्रदेश के पश्चिमी भाग में वहाँ के निवासी अब भी ऐसी बातें देखा करते हैं। जो आदमी उन्हें दिखाई देते हैं, उनमें से अधिक को एक हाथ, एक पाँव और एक आँख होती है।

सुनाई देती हैं। वह पिछड़ा यात्री उन आत्माओं को अपना सह-यात्री समझ बैठता है। कभी कभी आत्माएँ उनका नाम लेकर पुकारती हैं और इस प्रकार वह यात्री घबड़ाकर रास्ता छोड़ बैठता है और अपने साथी यात्रियों तक कभी नहीं पहुँचता। इस तरह बहुतों की जानें जा चुकी हैं। कभी कभी कुछ यात्रियों को रास्ते से थोड़े अन्तर पर आदमियों के झुण्ड के पैरों की आहट और आवाज़ें सुनाई देती हैं। वे लोग यह समझकर कि ये हमारे ही झुण्ड के आदमियों की आवाज़ें हैं (जो ज़रा आगे बढ़ गये हैं) उन आवाज़ों के सहारे उधर ही का रास्ता पकड़ते हैं जब सबेरा होता है तब उन्हें मालूम होता है कि हम धोखा खा गये और रास्ता भूलकर एक बला में आ फँसे। इन सूक्ष्म आत्माओं की आवाज़ें कभी कभी दिन में भी सुनाई देती हैं और कहीं कहीं तो अनेक प्रकार के सुरीले बाजों की मनोहारी तानें* सुन मन मुग्ध हो जाता है, इसलिये इस रेगिस्तान को पार करते समय प्रायः सब यात्री साथ ही चलते हैं और जानवरों की गर्दनों में घण्टियाँ बाँध दी जाती हैं जिससे वे रास्ता न भूल जायें और दूसरी

---

*—रेगिस्तानों की एक और बात बाजों की आवाज़ है। यह आवाज़ रेत के चलने और उड़ने से पैदा होती है, यह वैज्ञानिकों का मत है। वे ऐसी रेत को 'रेगरवाँ' अथवा चलने वाली रेत कहते हैं। इस प्रकार के रेतीले टीले काबुल के उत्तर में पाये जाते हैं। भारत के प्रथम मुग़ल सम्राट बाबर ने एक ऐसे ही टीले का हाल लिखा है जो 'सीना' के रेगिस्तान में 'जब्लनाकूस' के नाम से प्रसिद्ध है। एक रेतीला टीला मक्का और मदीना के बीच में है। जिसे 'जब्लुलतवल' कहते हैं। सर० एफ० गोल्डस्मिथ ने अभी थोड़े दिन हुए एक 'रेगेरवाँ' का पता लगाया है जो 'सीसतान' के उत्तर में उस स्थान पर स्थित है जहाँ ईरान और अफ़ग़ानिस्तान की सीमायें मिलती हैं।

मंज़िल के आदमियों के लिये रात के समय एक बड़े लट्ठे में लालटेन बाँधकर इस तरह गाड़ देते हैं कि जिससे दूर दूर तक के पिछड़े हुये यात्रियों को रास्ता मालूम हो जाय और वे भूल कर अपनी जान न खो बैठें। इस तरह से गोबी का यह भयानक मरुस्थल पार किया जाता है।"

इस रेगिस्तान को पार करके 'शाचू' में प्रवेश करते हैं जो 'तांगत' नामक सूबे में 'खाँ आज़म' के अधीन है। अधिकांश निवासी बुद्ध धर्म मानते हैं। कहीं कहीं दो चार नस्तूरी इसाई और मुहम्मदी भी पाये जाते हैं। बौद्ध लोग प्रायः कृषक हैं। उनके बहुत से मन्दिर हैं जिनमें नाना प्रकार की मूर्तियाँ रक्खी हुई हैं। बौद्ध लोग उनकी बड़ी भक्ति के साथ उपासना करते हैं और बलि चढ़ाते हैं। एक प्रसिद्ध त्योहार को लोग अपने बच्चों के साथ एक भेंड़ को लेकर मूर्ति के सामने उपस्थित होते हैं। भेड़ को बलि देकर उसे मूर्ति के सामने रखकर भाँति-भाँति की प्रार्थनायें करते हैं और थोड़ी देर बाद उस कटी हुई भेंड़ को लेकर अपने घर जाते हैं और अपने हित मित्रों के साथ बाँटकर खा डालते हैं। किसी के मरने पर एक जनाज़ा तैयार करके रेशमी और ज़री के कपड़ों से मँढ़ा जाता है। मुर्दे के आगे शराब, गोश्त तथा अन्यान्य वस्तुएँ रक्खी जाती हैं। जनाज़े के आगे-आगे नगर भर के गवैये गाते जाते हैं। जब जनाज़ा मरघट में पहुँचता है तो उसके सम्बन्धी चमड़े या काग़ज़ के घोड़े, ऊँट और अशर्फियाँ मुर्दे के पास इस विचार से रखते हैं कि उसका जितना हिस्सा जल जायगा उसी के अनुसार उस मृत व्यक्ति को स्वर्ग में गुलाम, मवेशी और नक़दी मिलेगी किन्तु जब तक ज्योतिषी से मृत व्यक्ति की उत्पत्ति का साल, दिन, घण्टा राशि और नक्षत्र नहीं पूछ लेते, उसे नहीं जलाते।

ज्योतिषी से पूछने के बाद उसके जलाने की तिथि नियत की जाती है। कभी कभी यह तिथि ६ महीने बाद पड़ती है। उस समय तक उसके सम्बन्धी, जनाज़े पर भाँति-भाँति के बेल-बूटे बनाते और उसे तरह तरह की सुगन्धिपूर्ण वस्तुओं से सुगन्धित करते रहते हैं और उस मृत व्यक्ति के शरीर में एक प्रकार का मसाला लगाते हैं जिससे वह सड़ने न पाये। प्रतिदिन उस लाश के आगे खाने की चीज़ें रखी जाती हैं। कभी कभी ज्योतिषी, मुर्दे का दरवाज़े से निकालना विपत्ति पड़ने का कारण बतलाते हैं, उस समय दीवार में नया दरवाजा निकालकर मुर्दा घर से बाहर किया जाता है यह रीति अबतक चीन में प्रचलित है। इस रीति का नाम 'दोहलाई' है।

'कोमल' प्रान्त की राजधानी 'कोमल' नगर है। इस सूबे में नगर और क़स्बे अधिक संख्या में हैं। निवासी बुद्ध धर्म मानते हैं। कृषि करके वे जीवन निर्वाह करते हैं। अनाज, यात्रियों के हाथ भी बेचते हैं। वे किसी बात को शीघ्र स्वीकार कर लेते हैं। उन्हें खेल-कूद तथा प्रसन्नतापूर्वक जीवन बिताने के अतिरिक्त और कोई काम नहीं है। यह सूबा, दो रेगिस्तानों के बीच में फैला हुआ है। जिनमें से एक 'रेगिस्तान लोब' कहलाता है। जब कोई नया आदमी घर आता है तो यहाँ के लोग उसे अपनी स्त्री सौंप देते हैं कि वह नया आदमी उस स्त्री के साथ ख़ूब मज़े उड़ाये। स्वयं घर से निकल जाते हैं और तब तक वापस नहीं आते जब तक कि वह नया आदमी वहाँ रहता है। इसे वे बेहयाई नहीं वरन् बड़ी इज़्ज़त समझते हैं। 'मंगो खाँ' ने अपने शासनकाल में नियम बनाकर इस अनर्थकारी रीति को एक दम बन्द कर दिया था। तीन साल तक तो लोगों ने किसी तरह इस आज्ञा का पालन किया किन्तु जब देखा कि ज़मीन से अब अच्छी पैदावार

नहीं होती और तरह तरह की दैवी विपत्तियाँ पड़ती हैं तो एक उपहार योग्य वस्तु लेकर बादशाह के पास गये और उससे प्रार्थना की कि "यह रीति हमारे पूर्वजों के समय से चली आई है और इस रीति से उनके देवता प्रसन्न होकर उन्हें हर तरह की अच्छी-अच्छी वस्तुएँ देते हैं। इस रीति के विना हम लोग जीवित नहीं रह सकते। अतएव कृपया आप अपना नियम उठा लीलिये।" 'मंगों खाँ' ने विवश होकर उनकी प्रार्थना स्वीकार करली और नियम हटा लिया। यह भयंकर रीति अब तक उनमें प्रचलित है।

"सूबा 'शंगुन्तला' ('आज कल इसे मंगोलिया कहते हैं) गोबी मरुस्थल के किनारे है। यह १६ दिन की यात्रा में समाप्त होता है। शहर और कस्बों की ज़्यादती है। निवासी मुसलमान हैं पर बुद्ध धर्म मानते हैं। कहीं कहीं नस्तूरी इसाई भी पाये जाते हैं। यह देश 'खाँ आज़म' के अधिकार में है। इस देश की उत्तरी सीमा पर एक पहाड़ है जिसमें से अच्छा फौलाद निकलता है। लोगों का कथन है कि इस पहाड़ में से एक चीज़ निकलती है जिसे 'सलामन्दर' या 'समन्दर'* कहते हैं। वह धातु है। मुझे अपने '.ज़ुलफिक़ार' नामक एक मित्र से—(जिसके आधीन 'ख़ां आज़म' की ओर से इस धातु के निकलवाने का काम था)—इस धातु के बारे में ज्ञात हुआ कि जब इस धातु (समन्दर) को दबाया जाता है तो उसमें से ऊन के से रेशे निकलते हैं।

*समन्दर—कुछ लोगों के कथनानुसार समन्दर चूहे की तरह का एक जानवर है जो 'हिरात' के समीप पाया जाता है। उसके बालों (रोओं) पर आग का कुछ प्रभाव नहीं पड़ता। कुछ लोग इसे एक प्रकार का पक्षी भी बताते हैं।

वे रेशे सुखाकर तांबे के एक खरल में कूटे जाते हैं और फिर पानी से धोने पर वे ऊन की तरह हो जाते हैं। इस ऊन के रुमाल बनाये जाते तथा आग पर रखकर सफ़ेद कर लिये जाते हैं। पर जब मैले हो जाते हैं तो आग रखने से ही उनकी मैल गायब हो जाती है और वे पुनः ज्यों के त्यों हो जाते हैं।" जैसा मार्कोपोलो ने लिखा है वैसा ही किस्सा अब भी 'समन्दर' के बारे में कहा जाता है। रूम में भी 'समन्दर' का बना हुआ एक रुमाल है जिसे 'ख़ाँ आज़म' ने पोप की सेवा में भेजा था।

"इस सूबे से चलकर दस दिन की यात्रा के पश्चात् मैंने 'सोहचू' नामक प्रान्त में पैर रखा। इस सूबे की राजधानी का नाम भी 'सोहचू' ही है। निवासी प्रायः बौद्ध हैं। यात्री अपने साथ मवेशी नहीं ले जाते क्योंकि यहाँ एक प्रकार की ज़हरीली घास होती है जो जानवरों को बेकाम कर देती है। इस देश के पशु उसे पहचानते हैं और सर्वदा उससे दूर रहते हैं। निवासी पीलापन लिये हुए गेहूँ के रंग के होते हैं। ये लोग खेती और व्यापार करके अपना निर्वाह करते हैं।"

'काचू' या 'कामीचू', 'तांगत' सूबे की राजधानी है। यह सूबा कई छोटे छोटे सूबों से मिलकर बना है। निवासी बौद्ध, मुसलमान तथा ईसाई हैं। बौद्धों के मन्दिर में तरह तरह की मूर्त्तियाँ रक्खी हुई हैं जो लकड़ी और पत्थर की बनी हुई हैं। उन पर बढ़िया चित्रकारी की हुई है। बहुतेरी मूर्त्तियाँ सोने में मढ़ी हुई हैं। बौद्धों के महन्त राजसी ठाट बाट के साथ जीवन व्यतीत करते हैं। यद्यपि भोग विलास को बुरा नहीं समझते फिर भी उससे दूर रहते हैं। प्रति मास में ५ दिन पवित्र माने जाते हैं। उनमें न तो जानवर काटे जाते हैं और न गोश्त

खाया ही जाता है। एक पुरुष ३० स्त्रियाँ तक रख सकता है परन्तु यदि खिला पिला सके। पहली बीबी का बड़ा सन्मान किया जाता है। पति उसे मवेशी, गुलाम तथा नक़दी देता है। यदि किसी को अपनी बीवी पसन्द न आये तो वह उसे छोड़ सकता है। ये लोग सिवाय अपनी माँ के (यहाँ तक कि बाप की विधवा को भी) रिश्ते की सब औरतों को बीबी बना सकते हैं। और भी कितने ही भयंकर नियम इनमें प्रचलित हैं।"

"'कामू' से बारह दिन की यात्रा के पश्चात् 'तपसना' पहुँचते हैं जो गोबी मरुस्थल के उत्तरी सीमा पर सूबा 'तांगत' में है। निवासी बौद्ध हैं। ये लोग पशुओं को पालते और खेती करते हैं। 'तपसना' से चलकर चालीस दिन एक उजाड़ खण्ड में यात्रा करते हैं; जहाँ न आबादी का चिन्ह है न रहने का सुभीता। गर्मियों में कहीं कहीं दो एक आदमी मिल जाते हैं।"

'क़राक़ुरम' तीन मील लम्बा चौड़ा है और उसके चारों ओर मिट्टी की चहारदीवारी है। भीतर एक सुन्दर महल है जहाँ व्यवस्थापक (गवर्नर Governor) रहता है। तातारी अपने देश से निकलकर पहले यहीं आये और यहीं उन्होंने पहला आक्रमण करके इस पर अपना अधिकार जमा लिया। तातारी एक लम्बे चौड़े देश में रहते थे जिसमें चारों ओर हरियाली थी। नदियाँ बहती थीं किन्तु नगर, गांव या क़सबे न थे। उनका कोई राजा या शासक न था। हाँ वे एक आदमी को कर अवश्य देते थे जिसका नाम 'वांग खाँ' था और जिसे योरोप वाले *'प्रेस्टर जान' कहते हैं।

---

* —'प्रेस्टर जान'—यद्यपि योरोप निवासी 'मंगलों' को ईसाई

जब तातारियों की संख्या बहुत बढ़ गई तो 'वांग खां' को उनसे भय उत्पन्न हुआ अतएव उसने तातारियों को रेगिस्तानों में निकाल देना चाहा और इस काम पर अपने एक 'अमीर' को नियत किया। 'वांगखां' की इस घृणित वासना को जान लेने पर तातारियों को बहुत बुरा मालूम हुआ और सब तातारियों ने एक दल बनाकर एक साथ ही उस देश को छोड़ दिया और फिर उसे कर न दिया।

—

समझते और ईसाई नाम से याद करते हैं किन्तु यह उनकी ग़लती है। वह ईसाई न था क्योंकि वह सबसे पहला तातारी विजयी शासक था और इतिहास इसका साक्षी है कि सब से पहला तातारी विजेता बौद्ध था। उसने 'गुरखा' नाम राजा होने के कारण रक्खा था, जिसका अर्थ उनकी भाषा में 'बादशाह' होता है। यह शब्द बिगड़ते २, 'कुरखां,' 'यरकान' फिर 'यूकानान' और अन्त में 'जाहानास हो गया। 'जोहान' से 'जान' होगया।

चंगेज़ खां और तातारी

तातारियों ने ११८७ ई० में चंगेज़ खां को अपना बादशाह बना लिया जोकि बड़ा साहसी और वीर था। जब यह समाचार दूर दूर तक फैला तो झुण्ड के झुण्ड तातारी आकर उसके दल में सम्मिलित होने लगे। चंगेज़ खां ने सब तातारियों को सैनिक शिक्षा दी और उन्हें अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित करके आस पास के देशों पर टूट पड़ा। थोड़े ही समय में उसने ८ सूबे जीत लिये। चंगेज़ खाँ जिस सूबे को जीतता था, वहाँ के निवासियों को सताता नहीं था वरन् उनके और अपने आदमियों में से कुछ को चुन कर शासन-भार सौंप देता था। उसके नियम ऐसे थे जिससे प्रजा बड़ी प्रसन्न हुई। प्रजा को अपनी ओर मिलाकर उसने और भी बड़े बड़े देश विजय किये। सन् १२०० ई० में उसने 'वांगखां' के दरबार में अपना दूत भेजकर उससे यह इच्छा प्रकट की कि 'वांगखां' अपनी लड़की का ब्याह उससे करे किन्तु 'वांगखां' ने उसे बहुत बुरा भला कहा और दूत को आज्ञा दी कि अभी देश से निकल जाये। अतएव दूत ने लौटकर जो कुछ वांगखां ने कहा था, कह सुनाया। चंगेज खां सुनते ही बड़ा क्रोधित हुआ और उसके इस अनादरपूर्ण व्यवहार का समुचित दण्ड देने के लिये एक बड़ी सेना लेकर उस पर आक्रमण कर दिया। 'वांगखां' ने भी खूब सेना इकट्ठी की और दोनों सेनाओं का सामना 'तान्दक' पर हुआ। दो दिन विश्राम करके युद्ध आरम्भ

हुआ। दोनों ओर के असंख्य सैनिक मारे गये। अन्त में चंगेज़ खां की विजय हुई, 'वांगखां' लड़ाई में मारा गया। उसके राज्य पर चंगेज़ खां का अधिकार हो गया। इस लड़ाई के पश्चात् चंगेज़ खां छः वर्ष तक जीवित रहा और इतने समय में उसने अनेक देश विजय किये। 'क्यागो' नाम का प्रसिद्ध गढ़ भी उसके अधिकार में आ गया किन्तु 'क्यागो' के इस प्रसिद्ध गढ़ के युद्ध के समय उसके घुटने में एक तीर लगा जिसकी चोट से ही अन्त में उसके प्राण गये।

चंगेज़ खां के बाद उसके वंशजों तथा राज्य के अधिकारियों में क्रमशः 'कोएखां', 'बातूखां', 'हलाकूखां', 'मंगोखां' और क़िब-लाई खां *हुए। क़िब्लाईखां का राज्य संसार के सभी इसाई तथा अन्यान्य राज्यों से अधिक शक्तिशाली है। चंगेज़ खाँ और उसके राज्याधिकारी वंशजों का मदफ़न (दफ़न करने अथवा गाड़ने का स्थान) अल्टाई पर्वत है। यह वह अल्टाई नहीं जो साइबेरिया की पर्वत माला के दक्षिण में हैं वरन् यह पर्वत, 'खंगान' नामक पर्वत का एक भाग है। अल्टाई पर्वत का वह भाग जहाँ ये लोग दफ़न किये गये हैं—राजधानी से १०० मील के रास्ते पर है। तातारी बादशाहों के जनाज़े के सम्बन्ध में एक विचित्र रीति पाई जाती है कि जितने आदमी रास्ते में मिलते हैं, वे इस विचार से क़त्ल कर दिये जाते हैं कि परलोक में वे मृत

---

*चंगेज़ खां के पश्चात् वास्तव में आरम्भ के तीन व्यक्ति (कोए खां बातू खां, हलाकू खां) उसके राज्य के उत्तराधिकारी नहीं हुए। उस समय 'बातू खाँ,' 'कपचाक' का अधिकारी था और हलाकू खां ईरान का। चंगेज़ खां के चार उत्तराधिकारियों के नाम ये हैं :—

(१) ओफादी खां (२) क्यूयक खां (३) मंगोखां (४) किबलाई खां।

बादशाह की प्रजा बनेंगे। इसी प्रकार उनकी सवारी के घोड़े भी क़त्ल कर दिये जाते हैं। 'मंगोखां' का जनाज़ा ले जाते समय रास्ते में २०००० (बीस हज़ार) आदमी क़त्ल किये गये थे।

तातारियों की यह रीति है कि गरमी के दिन तो मैदान में बिताते हैं जहाँ उन्हें पशुओं के लिये चरागाहें मिल सकें किन्तु जाड़े में वह पहाड़ों और घाटियों में चले जाते हैं जहाँ पानी के अतिरिक्त जलाने के लिये लकड़ी, छाया के लिये जंगली वृक्ष तथा मवेशियों के लिये चरागाहें मिल सकें। उनके रहने के घर नमदे से बनाए जाते हैं। वे गाड़ियों पर (जिन्हें बैल खींचते हैं) लकड़ियाँ लगाकर उनपर नमदे मढ़ लेते हैं और इस भाँति एक सुखप्रद घर बना लेते हैं जिनमें औरतें और बच्चे यात्रा कर सकते हैं। स्त्रियाँ क्रय विक्रय करतीं और अपने २ पतियों तथा घर वालों के लिये भोजन की वस्तुएँ एकत्र करती हैं। मर्द शिकार खेलते; आवश्यकता आ पड़ने पर युद्ध में सम्मिलित होते अथवा जंगली करतबों का अभ्यास करते हैं। उनका निर्वाह पालतू पशुओं के दूध और शिकार के गोश्त पर होता है। वे हर तरह का गोश्त खाते हैं यहाँ तक कि घोड़े और कुत्ते का भी। वे घोड़ियों का दूध पीते हैं। एक प्रकार के चूहे का गोश्त भी खाते हैं जिसे वे 'फ़िरऊन का चूहा' कहकर पुकारते हैं। यह चूहा इस देश में बहुत पाया जाता है। तातारी किसी दूसरे की स्त्री से किसी प्रकार की हँसी दिल्लगी नहीं करते और न तो उसे छेड़ते ही हैं क्योंकि इन सब बातों को वे बहुत बुरा समझते हैं। स्त्रियाँ पतिव्रता होती हैं। वे गृहस्थी के कार्यों में निपुण तथा घर सजाने में तेज़ हैं। दस दस, बीस बीस स्त्रियाँ एक जगह शान्ति के साथ रहती हैं। उनमें किसी प्रकार का झगड़ा, द्वेष अथवा गाली गलौज़

नहीं देखा जाता। दूसरे के प्रति बुरे शब्दों का प्रयोग वे पाप समझती हैं।

तातारी, जी चाहे जितनी औरतों से शादी कर सकते हैं इसकी सीमा १०० तक है यदि वे उनका पालन भली भाँति कर सकें किन्तु पहली स्त्री और उसके लड़कों का आदर विशेष होता है। वारिस वही होते हैं। पति अपनी सास को, व्याह में खूब धन देता है और बीवी अपने साथ घर से कुछ भी रुपये अथवा गहने नहीं लाती। अधिक स्त्रियों से शादी करने के कारण उनमें संतान भी अधिक होती है। तातारी अपनी चचेरी बहन से भी शादी कर लेते हैं और यदि बाप मर जाय तो बड़े बेटे को अपनी मां के अतिरिक्त बाप की सब स्त्रियों से शादी कर लेने का अधिकार है, किन्तु यह अधिकार केवल सब से बड़े बेटे को होता है। एक भाई दूसरे की मृत्यु पर उसकी स्त्री से व्याह कर सकता है। उनके यहाँ शादियाँ बड़ी धूम-धाम से होती हैं।

तातारी एक ईश्वर को मानते और पूजते हैं। उनकी पूजा का उद्देश्य केवल यह होता है कि वह, उन्हें शारीरिक और मानसिक शक्तियाँ दे। उनके यहाँ एक देवता माना जाता है जिसे वह 'नातेके' कहते हैं। यह देवता पृथ्वी का स्वामी है और उनके बच्चों, मवेशियों और फ़सल की रक्षा करता है। तातारी उसका बड़ा आदर सम्मान करते और पूजते हैं। घर में उस देवता की एक मूर्ति होती है जो नमदे या कपड़े से बनाई जाती है। स्त्री और बच्चों की मूर्त्तियाँ भी होती हैं जो एक ही जगह रख दी जाती हैं। देवता की मूर्त्ति दाहिने हाथ, स्त्री की बायें हाथ और बच्चों की मूर्त्तियाँ, देवता के सम्मुख रक्खी जाती हैं। जब तातारी भोजन करने बैठते हैं तो मांस की चिकनाई लेकर, देवता, उसकी बीबी

और उनके बच्चों की मूर्तियों के मुँह से मिला देते हैं और वहीं थोड़ा सा अलग निकाल एक जगह रख देते हैं। ऐसा करने से वे समझते हैं कि देवताओं को उनका भाग मिल गया।

धनवान तातारी ज़रदोज़ी के और रेशमी कपड़े पहनते हैं, उनमें जानवरों के समूर लगाते हैं। वे घोड़ी का दूध पीते हैं। और उससे सफ़ेद शराब की तरह की चीज पीने के लिये बनाते हैं जिसे वह 'कोमजन'* या 'केमज' कहते हैं। यह 'केमजन' उनके बड़े काम आता है। उसे वह भिन्न २ स्थानों पर व्यवहृत करते हैं।

तातारियों का युद्ध-कौशल प्रशंसनीय है। युद्ध के सामान बहुमूल्य उपयोगी तथा सुन्दर होते हैं। तीर, कमान और तलवार तथा और कितने ही प्रकार के हथियार उनके पास होते हैं। तातारी, तीर चलाने में निपुण होते हैं। उनका निशाना अचूक होता है। वे पीठ पर चमड़े का एक कपड़ा कवच की भाँति पहनते हैं जो भैंस अथवा किसी और जानवर की खाल को उबाल कर बनाया जाता है और उसपर खूब चित्रकारी की जाती है। वे बड़े अच्छे सिपाही होते और रणक्षेत्र में बड़ी वीरता से लड़ते हैं।

---

*केमज़ बनाने में पहले घोड़ी के दूध को एक बरतन में रखकर उसमें [illegible] की भाँति डाल देते हैं और उसे आग पर रख देते हैं। जब उसमें उबाल आता है तो उसमें एक और चीज़ डाल कर खूब मिलाते हैं। फिर उसे सुखा डालते हैं। जब काम पड़ता है तो ज़रा सा सूखा दूध पानी में घोल लेते हैं और पी जाते हैं। इसी का नाम 'केमज़' है। लड़ाई के समय तातारी इसे काम में लाते हैं, इससे वे भोजन का बहुत सा सामान साथ ले जाने से बच जाते हैं। यह 'केमज़,' आज कल के Horlick's Malted Milk की भाँति होता था।

महीनों, घोड़े के ऊपर सवार चले जाते हैं और यदि खाने को न मिले तो कोई परवाह नहीं। रास्ते में जो पशु अथवा पक्षी मिलते हैं उनका शिकार करके निर्वाह करते हैं। उनकी तरह उनके घोड़े भी विपत्ति झेलने में तेज होते हैं। उनको दाना देने की आवश्यकता नहीं होती। मैदान की घास से ही उनकी भूख मिट जाती है। अपने सवार को वे बहुत प्यार करते हैं और उनसे शरारत नहीं करते। कभी कभी, आवश्यकता पड़ने पर सवार घोड़े पर ही रात बिता देता है और घोड़ा चरता रहता है।

संसार भर की सेनाओं से तातारियों की सेना सुसङ्गठित और उत्तम है। वह अधिक परिश्रम और थकावट बर्दाश्त कर सकती है। जब कोई तातारी शासक कोई देश विजय करने जाता है तो अपने साथ लगभग एक लाख सेना रखता है। १० सैनिक के हर एक झुंड पर एक नायक नियत किया जाता है। फिर सौ सौ सिपाहियों पर एक अफसर होता है। हज़ार जवानों पर एक छोटा सेनापति और दश हज़ार पर एक साधारण सेनापति होता है। इस प्रबंध में एक विशेषता यह है कि प्रत्येक बड़े अफ़सर को केवल दश ही आदमियों को आज्ञा देनी पड़ती है। और यों ही क्रम से सब प्रबन्ध ठीक हो जाता है। तातारी अपने अफ़सरों के बड़े आज्ञापात्र होते हैं।

जब उनकी फौज़ कूच करती है तो चुने हुये दो सौ सवार 'हरावल' या 'लैन्डोरी' को भाँति दो मंजिल आगे चले जाते हैं। वे देश को अच्छी तरह देखते भालते हैं। इसी प्रकार दो दो सौ सवार इधर उधर भी चलते हैं। ऐसा इसलिये किया जाता है कि एकाएक शत्रु उन पर हमला न कर सकें। जब वे बहुत दूर किसी लड़ाई पर जाते हैं तो चमड़े की दो बोतलें पानी के लिये और एक बर्तन खाना पकाने के लिये तथा एक हलका

सा खेमा धूप और बर्षा से अपनी रक्षा के लिये साथ ले लेते हैं। आवश्यकता पड़ने पर वे दस दस, बारह बारह दिन तक सवार चले जाते हैं और खाना भी नहीं खाते। ऐसे समय पर वे सिर्फ़ अपने घोड़े के ख़ून पर निर्वाह करते हैं। वह उनकी रगें खोल देते हैं और ख़ून पी लेते हैं। ख़ून पी लेने पर रगें बन्द कर देते हैं।

तातारी केवल थोड़ा सा 'केमज़न' पानी में घोलकर पी लेने हो से कई दिन तक रह सकते हैं इसीलिए जब वे किसी लड़ाई में जाते हैं तो लगभग ५ सेर 'केम्ज़' अपने साथ ले जाते हैं। जब वे शत्रुओं पर आक्रमण करते हैं तो विचित्ररीति से उन पर विजय प्राप्त करते हैं।

पहले तो वे चक्कर लगाते और चारों ओर बाणों की वर्षा करते हैं और फिर शत्रु को धोका देने के लिये एक साथ युद्ध स्थल से भाग निकलते हैं। शत्रुदल के सैनिक यह समझकर कि ये लोग हार मानकर भाग रहे हैं, ढीले और सुस्त हो जाते हैं। ऐसे ही समय वे अपने मुँह घोड़े की पिछाड़ी की ओर कर लेते हैं और शत्रु दल पर बाणों की वर्षा करने लगते हैं। इस तरह शत्रु दल के बहुतेरे सैनिक आहत होकर बेकाम हो जाते हैं। उनके घोड़े बड़े मज़बूत और चलाक होते हैं। भागते समय ज़मीन से लग लग जाते और दुहरे हो हो जाते हैं। जब इस तरह शत्रु के बहुत से सैनिक घायल हो जाते हैं तो दल बाँधकर आगे बढ़ते हैं और इतनी तेज़ी के साथ बाणों की वर्षा करते हैं कि शत्रुदल के सैनिक भाग खड़े होते हैं और इस भाँति वे शत्रुदल पर विजय प्राप्त कर लेते हैं। लड़ते समय वे ज़ोर ज़ोर से चिल्लाते हैं। उन तातारियों के

स्वभाव जो 'खता' (पश्चिमी मध्य एशिया) में जा बसे हैं, असली तातारियों से बदल गये हैं। 'खता' देश के तातारियों ने बुद्ध धर्म के आचार-विचार ग्रहण कर लिये हैं और दूसरे तातारी इस्लाम के भक्त हैं।

तातारियों में न्याय का ढंग भी निराला है। यदि कोई मनुष्य चोरी करता है तो उसे डण्डे लगाये जाते हैं। चोरी के माल के परिमाण के अनुसार सात, सत्रह, सत्ताईस, सैंतीस, सैंतालीस इसी भाँति १०७ डण्डे अथवा बेंत लगाये जाते हैं। इस सजा से कभी २ चोर मर जाता है। यदि कोई किसी तातारी घोड़े की चोरी करता है अथवा किसी गुरुतर अपराध में पकड़ा जाता है तो वह तलवार से दो टुकड़े करदिया जाता है किन्तु चोर यदि चोरी के माल से नौगुना धन दे और फिर चोरी न करने की प्रतिज्ञा करे तो उसे छोड़ दिया जाता है। जिन तातारियों के पास अधिक मवेशी होते हैं, वे उन पर एक विशेष चिन्ह कर देते हैं जिससे वे चुराये न जा सकें और खो जाने पर अथवा दूसरों के मवेशियों से मिल जाने पर सरलतापूर्वक पहचान लिये जाँय। उनकी भेड़ें और बकरियों को चरवाहे चराते हैं। तातार के मवेशी सुन्दर, मिहनती, सीधे और बड़े होते हैं।

व्याह के सम्बन्ध में तातारियों में एक विचित्र रीति प्रचलित है। यदि लड़की शादी होने से पहले मर जाय और लड़का भी मर जाय तो मरने पर भी वे एक दूसरे का व्याह कर देते हैं और उन दोनों के नाम के साथ एक प्रतिज्ञापत्र लिखा जाता है जो आग में इस विचार से जला दिया जाता है कि परलोक में दोनों को अपनी शादी की खबर हो जायेगी और दोनों में स्त्री पुरुष का सम्बन्ध स्थापित रहेगा। जो कुछ दहेज (यौतुक) ऐसी

शादियों में दिया जाता है उसकी तस्वीरें काग़ज़ पर बनाकर आग में इस विचार से जलाई जाती हैं कि ये चीज़ें उन्हें मिल जायँगी।

'कराकुरम' से रवाना होकर (जहाँ तातारी बादशाह दफ़न किए जाते हैं) चालीस दिन तक उत्तर की ओर यात्रा करने के पश्चात् 'बराकू' मैदान मिलता है। जहाँ 'मेकरत' जाति बसी है। यह एक जंगली जाति है। इनका निर्वाह केवल मवेशियों पर होता है, विशेषतः बारहसिंघों पर, जिन पर कि ये सवारी भी करते हैं। इनकी रीति, नीति, आचार-विचार तातारियों ही जैसे हैं। ये 'ख़ांआज़म की प्रजा हैं। उनके देश में न अनाज पैदा होता है न शराब बनती है। ये लोग पक्षी और मछलियाँ भी खाते हैं।

चालीस दिन और यात्रा करने के बाद एक पहाड़ी देश आता है जो समुद्र तट से अधिक दूर नहीं है। यहाँ इतनी सर्दी पड़ती है कि मनुष्यों और पशुओं का नाम तक नहीं। हाँ एक प्रकार का पक्षी बहुत पाया जाता है। 'बाज़' भी होता है। 'ख़ां आज़म' यहीं से 'बाज़' पकड़कर मँगाता है। यह देश इतने उत्तर में है कि यहाँ से 'कुतुब तारा' दक्षिण की ओर दिखाई देता है।

अब हम यहाँ 'खां आज़म' के देश का वर्णन करेंगे अतएव हम पुनः 'कामेचू' लौटते हैं। 'कामेचू' से ५ दिन की यात्रा के पश्चात् हम 'तांगक्यूयल' नामक सूबे में प्रवेश करते हैं जो 'तांगत' नामक बड़े सूबे का एक भाग है। यहाँ के निवासी नस्तूरी इसाई, मुसलमान और बौद्ध हैं। इस सूबे में नगरों की संख्या अधिक है। 'तांगक्यूयल' राजधानी है। राजधानी से थोड़ा दक्षिणपूर्व चलने से ही मुल्क 'ख़ता' में पहुँच जाओगे और अगर

एक दम दक्षिणपूर्व चले जाओ तो 'सचूं' (जिसे 'सनंग' अथवा 'रलंग' कहते हैं) देश में जा निकलोगे। यह देश भी सूबा 'तांगत' में सम्मिलित और 'खां आज़म' के अधिकार में है। इसमें भी इसाई, मुसलमान और बौद्ध रहते हैं। यहाँ हाथी के डीलडौल के मवेशी होते हैं। उनके रोएँ रेशम की भाँति मुलायम होते हैं। इनसे यहाँ के निवासियों का बड़ा काम निकलता है। ये जानवर बोझ ढोने और हल जोतने के काम में भी आते हैं।

'तांगत' में उत्तम कस्तूरी पाई जाती है। निवासी व्यापारी, कारीगर और कृषक होते हैं। ऊपर के ओष्ठ भाग पर थोड़े वाल होते हैं। नाक चिपटी होती है। वाल काले होते हैं। स्त्रियाँ प्रायः चंचल और सुन्दर होती हैं। सुन्दर स्त्रियों का उनके समाज में बड़ा आदर है। वे चाहे कितने ही नीच कुल में उत्पन्न हों, बड़े से बड़े मनुष्य के साथ भी इच्छानुसार शादी हो सकती है। पुरुष कई स्त्रियों से शादी कर सकता है। तीतर यहाँ वहुत होते हैं। किसी किसी की दुम ५ हाथ लम्बी होती है। उनके मोर के से रंगीन पर होते हैं। वहुतेरे साधारण तीतरों की भाँति होते हैं।

'तांगक्यूयल' से चलकर पूर्व की ओर ८ दिन की यात्रा के पश्चात् 'अरकामा' में प्रवेश करते हैं। यह सूबा 'तांगत' का एक भाग है। राजधानी 'कालाजान' है। निवासी अधिकांश बौद्ध हैं। इस देश पर भी 'खां आज़म' का ही अधिकार है। वहुतेरे ऊँट की ऊन के कम्बल वनाते हैं जो विभिन्न देशों को भेजे जाते हैं।

'तूज़न' का वर्णन

'तूज़न' पूर्व में है और उसकी राजधानी भी उसी नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ का बादशाह 'वांगखां' के वंश में है और इसाई उसे 'प्रेस्टर जान ज्योर्ज' के नाम से पुकारते हैं। इस देश के शासक, खां आज़म क़िबलाई खां अथवा उसी वंश के अन्य शासकों की लड़कियों से शादी करते हैं। इस देश में खानों से उत्तम जाति का 'नीलम' निकलता है। यहाँ के कम्बल बहुत अच्छे होते हैं। मुसलमान, बौद्ध और इसाई यहाँ के बाशिन्दे हैं।

शंकर वर्ण (दोगले) के कुछ लोग भी हैं जो 'अरगोन' कहलाते हैं और मुहम्मदियों एवं बौद्धों के सम्मिलन से उत्पन्न हुए हैं। इन लोगों में बड़े २ व्यापारी होते हैं। वे औरों की अपेक्षा अधिक सुन्दर होते हैं और अपनी बुद्धिमानी तथा परिश्रम से ऊँचे से ऊँचे दरजे पर पहुँच जाते हैं।

'गोग' और 'मीगोक' नाम के प्रान्त भी इसी देश में सम्मिलित हैं जिन्हें 'सदयाजोज'* और 'माजोज' भी कहते हैं। यहां से

---

* 'गोग' और 'मीगोग' को 'आंग' और 'मंगोल' नाम से भी याद करते हैं। ये स्थान चाहे जिन नामों से पुकारे जाँय परन्तु इसमें सम्पूर्ण इतिहासकारों और यात्रियों की राय एक है कि ये दोनों स्थान चीन की बड़ी दीवार के किनारे हैं। 'अबुल फ़िदा' और 'इब्न बतूता' के कथनानुसार इनके नाम 'सदयाजोज' और 'माजोज' ही होने चाहिये।

७ दिन की यात्रा के पश्चात् 'ख़ता' नामक सूबे में पहुँच जाते हैं। इस यात्रा में बहुत से गाँव और क़सबे मिलते हैं। इन गाँवों और क़सबों के निवासी ही प्रायः व्यापारी और कारीगर हैं। वे 'ज़रबफ़्' (सुनहला रेशमी कपड़ा) के बहुमूल्य कपड़े पहनते हैं जिन्हें वे 'नाख़' और 'नासज' के नाम से पुकारते हैं। जिस प्रकार हमारे देश में अनेक प्रकार के ऊनी और सूती कपड़े बनते हैं उसी तरह उस देश में रेशम और 'ज़रबफ़्' के कपड़े। इस देश की पर्वत माला में 'आयफो' स्थान पर चांदी की खान है। यहां से चलकर ३ दिन में 'चाग़ाननूर' पहुँचते हैं।

'चाग़ाननूर' में 'खां आज़म' का एक सुन्दर महल है। यह महल अपने समीप की झीलों और नदियों के कारण 'चाग़ानेनूर' अर्थात् 'स्वेतझील' कहलाता है। यहाँ जलीय जन्तुओं की अधिकता है अतएव 'खां आज़म' प्रायः शिकार के शौक में यहीं पड़ा रहता है। महल के पास एक घाटी है जहाँ बहुत से मकान चकोरों के लिये बनाये गये हैं।

ख़ाँ आज़म ग्रीष्म भवन

क़िवलाई खां का ग्रीष्म महल शांगटो में है। यह महल संग-मरमर का वना हुआ है। कमरों में सुनहरा पानी फेरा गया है और मनुष्य, जानवर, पशु, पत्ती, वृक्ष, तथा नाना प्रकार के फूल पत्तों के सुन्दर चित्र दीवारों पर खींचे गये हैं जिनके देखने से हृदय नाच उठता है। यह महल सोलह मील के घेरे में फैला हुआ है और उसके भीतर अनेक चश्मे, नदियाँ, फव्वारे और हरे भरे मैदान हैं जिनमें हिंसक पशुओं के अतिरिक्त सभी प्रकार के जान-वर पाये जाते हैं। खां आज़म को वाजों के पालने का वड़ा शौक है। ये जानवर उनकी ख़ूराक के लिये रक्खे गये हैं। कभी कभी खां आज़म इस हरे भरे मैदान में अपने घोड़े पर सवार होकर और एक पालतू चीते को अपने पीछे विठा कर सैर करने जाता है और जो जानवर दिखाई देता है उसे चीते के द्वारा शिकार कर के वाज़ों को खिला देता है।

मैदान में एक जगह एक सुन्दर कुंज है। उसमें एक छोटा सुन्दर महल वनाया गया है जिस पर सुनहरा झूला चढ़ाया गया है। यह महल वड़ी चतुराई और कारीगरी से बनाया गया है। वह कई खंभों पर खड़ा किया गया है जिन पर सुनहरी कलई की गई है। हर खंभे पर एक अज़दहा (अजगर) है जिस पर सोने की कारीगरी की गई है। उसकी दुम खंभे से लगी हुई है। और सर तथा पंजों पर महल की इमारत उठाई गई है। छत, बनेतों से

बनाई गई है और उसमें एक ऐसा मसाला लगाया गया है कि पानी का उस पर कुछ प्रभाव नहीं पड़ता। इन बनेतों* का घेरा १-१।२ हाथ और लंबाई १० से १५ कदम तक है। बनेतों के गांठों पर से टुकड़े कर लिये जाते हैं। टुकड़ों को बीच से चीर कर खपरैलें बनाई जाती हैं। और तब उनसे छत मढ़ी जाती हैं। फिर वह केलों से पाट दी जाती है। यह महल बड़े काम का है और इस तरह बनाया गया है कि जब चाहे बड़ी सरलता से उखड़ सकता और फिर खड़ा किया जा सकता है, उसे टुकड़े २ करके जहाँ चाहे ले जा सकते हैं। इस स्थान पर 'खां आज़म' हर साल ३ महीने अर्थात् जून, जुलाई और अगस्त में रहता है क्योंकि यहाँ गरमी का बहुत कम प्रभाव पड़ता है। जब अगस्त का अंतिम सप्ताह बीतने को होता है तो यह महल उखाड़ दिया जाता है और 'खां आज़म' यहाँ से चला जाता है। जिस दिन 'खां आज़म' रवाना होता है उस दिन एक विचित्र रीति पूरी की जाती है। जिसका वर्णन नीचे किया गया है।

'खां आज़म' के पास बहुत से सफेद घोड़े और घोड़ियाँ हैं जिनके शरीर पर कोई दाग नहीं। इनकी संख्या १०००० हजार से अधिक है। इन घोड़ियों का दूध खां आजम तथा उसके घराने के लोग पीते हैं। एक और गिरोह भी है जो इसे पीता है। उसे इसके पीनेका स्वत्व प्राप्त है। यह अधिकार उस गिरोह को चंगेज़ खां ने प्रदान किया था क्योंकि इस गिरोह के लोगों की सहायता से चंगेज़ खां ने एक बड़ी लड़ाई में विजय प्राप्त की थी।

---

*बनेते नहीं वरन बाँस ठीक होगा क्योंकि अब तक जो जातियाँ चीन और भारतवर्ष के बीच में बसी हुई हैं, वे बांसों के घर बनाती हैं। वे बांसों से जीवन की अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति करती हैं।

इस झुंड का नाम हरीद है। जब ये घोड़ियाँ यात्रा में होती हैं तो उस देश का बड़े से बड़ा सरदार भी उनके समीप नहीं जाने पाता। यदि कोई मनुष्य यात्रा कर रहा हो और उसे घोडियाँ मिल जाँय तो वह आदमी या तो उनके (घोड़ियों के) आगे निकल जाने तक ठहरा रहता है या आधे दिन का चक्कर लगा कर निकल जाता है। इन घोड़ियों का बहुत आदर सम्मान किया जाता है अतएव कोई मनुष्य उनके समीप नहीं जाने पाता। जब २८ अगस्त को 'खां आज़म' इस मैदान से रवाना होता है तो इन घोड़ियों का दूध दुहकर जमीन पर छिड़का जाता है। यह बुद्धमत की रीति है। उनका यह विश्वास है कि उस दिन उस दूध को जमीन पर छिड़कना चाहिये, इससे ज़मीन, हवा और पितरादि सब अपना २ हिस्सा ले लेते हैं और ऐसा करने से 'खां आज़म', उसके परिवार, उसकी स्त्रियों तथा उसके धन धान्य की, देवता लोग रक्षा करते हैं*। यह रीति पूरी करके 'खां आज़म' वहाँ से चल देता है।

इन तीन महीनों में यदि पानी बरसता रहे या आकाश स्वच्छ न रहे तो ज्योतिषी और †जादूगर जो 'खां आजम' के

---

*'बाबर' लिखता है कि मुग़ल फौज़ में भी यों ही केम्ज छिड़कते हैं। इस समय के एक आरमीनियन यात्री ने लिखा है कि "तातारी किसी वस्तु को पीने से पहले चारों दिशाओं में तथा आकाश की ओर छिड़कते थे।" मिस्टर 'अटकिंस' ने लिखा है कि 'करगज़' जाति में भी यही रीति पाई जाती थी।" और कर्नल यूल लिखते हैं:—"बंगाल में खसिया पहाड़ी के निवासी प्राचीन समय में पीने से पहले वह वस्तु चारों ओर छिड़कते थे।"

†जादूगर—मुग़लों में 'यादह' अथवा 'जादहताश' एक पत्थर था जिसमें जादू के गुण पाये जाते थे और ऐसे काम करते समय कुछ अन्य

साथ रहते हैं, बादलों, तूफ़ानों और वर्षा सम्बन्धी अन्य आपत्तियों को अपनी जादू विद्या के बल से महल से दूर रखते हैं। ये जादूगर कश्मीरी अथवा तिब्बती होते हैं और जो कुछ वे करते हैं, शैतान अथवा प्रेतात्माओं की सहायता से करते हैं किन्तु लोगों का ऐसा विचार है कि वे, यह सब आश्चर्यमयी बातें अपनी शक्ति तथा ईश्वरीय सहायता के बल पर करते हैं। ये लोग गन्दे रहते हैं, नहाते नहीं और मैले कुचैले कपड़े पहनते हैं। यदि कोई मनुष्य क़त्ल किया जाता है तो ये लोग

क्रियायें कर के उसे पानी के एक वर्तन पर लटका दिया जाता था अथवा वर्तन में रख दिया जाता था। 'जादह' 'यादह' 'यादुशी' 'जादूगरी' इन सब शब्दों को 'जादू, अथवा 'जादूगरी' के अर्थ में प्रयुक्त करना उचित होगा। एक अरेबियन समुद्र यात्री 'इग्न महलुल' ने लिखा है कि "इस तरह का एक पत्थर तुर्कों के 'क़ीमाक़' नामी एक झुण्ड के पास भी था और जब चंगेज़ खां तथा 'वांगखां' के बेटे 'संगीनखां' में लड़ाई हुई तो "संगीन खां ने जादू के द्वारा वर्फ़, पाला और अंधकार उत्पन्न कर चंगेज़ खां की सेना का नाश कर दिया।" रशीदुद्दीन लिखता है कि "जब सन् १२३१–१२३२ ई० में तुलाई खां ने 'हवनान' पर चढ़ाई की तो उसे जादू के पत्थर ही के कारण विजय प्राप्त हुई। तैमूर लिखता है:—"जाटों ने जादू के बल से पानी बरसाकर मेरी फ़ौज को आगे बढ़ने से रोक दिया। जब उनमें से एक जादूगर को क़त्ल कर दिया गया तो तूफ़ान जाता रहा।" बाबर ने एक स्थान पर लिखा है कि "मेरा एक मित्र जादू से मेह और बर्फ़ पैदा कर देता है।" चीन के बादशाह 'शीशंग' ने (सन् १७२४—२५ ई०) मंगोलों के नाम यह हुक्म जारी किया कि "अब से वे मेह पर जादू न किया करें।" अब भी तातार में जादू की यह प्रथा पाई जाती है।

उसका मांस खा लेते हैं किन्तु जो मनुष्य अपनी मौत से मरता है उसे नहीं खाते।

'खां आज़म' के सम्बन्ध में एक और विचित्र रस्म का उल्लेख किया जाता है। उसे 'बख्शी' *लोग करते हैं। जब 'ख़ां आज़म" राजधानी अथवा ग्रीष्म प्रासाद में दस्तर-ख़ान (पाक-वस्त्र) पर भोजन करने बैठता है (जो ज़मीन से आठ हाथ ऊँचा होता है) तो उसके सामने दस कदम के अन्तर पर प्याले रखे जाते हैं जिनमें अनेक प्रकार की शराबें भरी होती हैं। जब ख़ां आज़म प्याले की शराब पीना चाहता है तो जादूगर, जादू के बल से प्याले को चलाते हैं और वे प्याले बिना हाथ लगाये 'खां आज़म" के पास चले जाते हैं। यह बात झूठ नहीं, बिल्कुल सच है और इसे हज़ारों आदमियों ने देखा है। मार्कोपोलो लिखता है कि "मेरे देश में भी लोग ऐसा करते हैं"। अभी तक भारतवर्ष के अनेक स्थानों में ऐसे जादूगर मौजूद हैं जो ऐसा करते हैं।"

जब किसी देवता के सम्बन्ध का कोई त्योहार पड़ता है तो बख्शी 'ख़ां आज़म' के सामने उपस्थित होकर उससे कहते हैं कि "आज इस देवता का त्योहार है। यदि उसे (देवता को)

---

*—बख्शी—बख्शी शब्द वस्तुतः संस्कृत 'भिक्षु' से निकलता है जिसका अर्थ धार्मिक 'उपदेशक' अथवा 'फकीर' है। यह शब्द मंगोल (मुग़ल) जाति में 'जानकार' के अर्थ में प्रयुक्त होता था और फ़ारसी-भाषा में 'लेखक' के अर्थ में और मुसलमानों के शासन काल में भारतवर्ष में एक विशेष प्रकार के अफसर के लिए प्रचलित था और अब भारतीय सेना में वेतन बाँटने वाले के अर्थ में आता है किन्तु पहले तिब्बत में लामाओं के लिये और फ़ारस तथा अरब में विद्वान के लिये प्रयुक्त होता था।

भेंट न मिलेगी तो वह खराबी करेगा।" अतएव 'खां आज़म' से पूछकर वे जितनी भेड़ें, सुगन्धित वस्तुएँ तथा अन्य चीजें चाहते हैं, लेकर उस देवता का त्योहार मनाते हैं। इस त्योहार में वे फ़क़ीरों को खिलाते भी हैं परन्तु पहले भोजन बनाकर उसमें से थोड़ी २ चीजें देवता की मूर्त्ति के आगे रक्खी जाती हैं और इस प्रकार उनकी पूजा कर लेने के बाद तब लोग खाते पीते हैं। उस दिन खूब रोशनी की जाती है।

बख्शियों के बड़े २ मठ होते हैं। कितने ही तो छोटे नगर के बराबर होते हैं और उनमें दो दो हज़ार से भी अधिक भक्त रहते हैं जो औरों की अपेक्षा मैले कुचैले कपड़े पहनते और सर तथा दाढ़ियाँ मुड़ाये रहते हैं। उनमें से कोई कोई शादी भी कर लेते हैं और कई स्त्रियाँ रखते हैं।

तातारियों में एक और तरह के फ़कीर होते हैं जिनको तातारी भाषा में *'शनशन' (संन्यासी) कहते हैं। ये बड़े त्यागी होते हैं। सब दिन पानी में चोकर मिलाकर खाते और पानी पीकर निर्वाह करते हैं। बौद्ध लोग उन्हें 'बटारनस' कहते हैं। ये लोग शादी कभी नहीं करते। और 'पटसन' का बना हुआ काला अथवा नीला वस्त्र पहनते हैं। चटाई पर सोते हैं। उनकी देवमूर्त्तियाँ स्त्रियों की होती हैं अर्थात् मूर्त्तियाँ स्त्रियों के नाम से पुकारी जाती हैं।

---

*—शनशन—'ताव' नामक दर्शनिक का सिद्धान्त था कि 'जो लोग मुक्ति प्राप्त कर लेते हैं वे 'शीनशीन' में पहुँच जाते हैं अतएव पीछे से उनके अनुगामियों का नाम 'शनशन' पड़ गया जिसका अर्थ संन्यासी भी है।

क़िबलाई ख़ां का दरबार

किबलाई खां, चंगेज़ की छठी पीढ़ी में है। वह सन् १२५६ ई० में गद्दी पर बैठा। उसे राज्याधिकार उसकी शक्ति के कारण मिला। यद्यपि उसके भाइयों तथा अन्य सम्बन्धियों ने राज्य के लिये झगड़ा किया परन्तु अन्त में विजय क़िबलाई खां की ही हुई। सन् १२९८ ई० तक उसे राज्य करते हुए ४२ वर्ष बीत चुके हैं। इस समय उसकी अवस्था ८५ साल * की है, इससे जान पड़ता है कि गद्दी पर बैठते समय उसकी अवस्था ४३ साल की रही होगी। राज्य पाने से पहले उसे कई बार युद्ध में सम्मिलित होना पड़ा था। जहाँ जहाँ वह गया वहीं उसे अपनी वीरता और अद्भुत् सैनिक शक्ति दिखाने का अवसर मिला था किन्तु सिंहासन पर बैठने के पश्चात् वह केवल एक बार सन् १२८६ ई० में युद्ध में सम्मिलित हो सका।

क़िबलाई खाँ का एक चचा था (चचा नहीं चचेरा भाई, जो चंगेज़ के छोटे लड़के के वंश में था) उसकी अवस्था ३० वर्ष की थी। वह कई देशों का शासन करता था। यद्यपि वह क़िबलाई खां के अधीन था और उसे कर देता था परन्तु धनमद

---

* क़िबलाईखां का जन्म अगस्त १२१६ ई० में हुआ था अतएव १२८६ ई० तक उसकी अवस्था ८२ साल की होती है किन्तु मुहम्मदी इतिहासकार उसकी तत्कालीन अवस्था ८५ साल ही बताते हैं।

तथा सेना की अधिकता के कारण वह अभिमानी हो गया। उसके पास ३ लाख से भी अधिक सवार थे और बहुत अधिक पैदल सेना थी अतएव वह क़िबलाई ख़ाँ को तंग करने लगा। उसने एक तातारी शासक कीडू ख़ाँ के पास (जो ख़ाँ आज़म को कर देता था परन्तु भीतर ही भीतर उससे जलता था) यह समाचार भेजा कि "मैं ख़ाँ आजम के विरुद्ध हो गया हूँ क्योंकि उससे मेरी हार्दिक शत्रुता है। मैं एक बड़ी सेना लेकर 'ख़ाँ आज़म' पर आक्रमण करने जा रहा हूँ। तुम भी शीघ्र एक बड़ी सेना लेकर आ जाओ जिससे दोनों सेनाएँ मिलकर उसका देश छीन लें।" जब कीडू ख़ाँ के पास यह समाचार पहुँचा तो वह बहुत प्रसन्न हुआ और सोचने लगा कि बदला लेने और अपनी आकांक्षा पूरी करने का समय आ गया है। उसने शीघ्र उत्तर भेज दिया कि "मैं आ रहा हूँ" और कई लाख सेना लेकर कूच कर दिया।

जब 'ख़ाँ आज़म' को इस षड्यन्त्र का पता चला तो वह ज़रा भी विचलित नहीं हुआ। उसे अपनी योग्यता, सैनिक शक्ति और साहस पर बड़ा विश्वास था। वह ज़रा भी न घबड़ाया वरन् उसने प्रतिज्ञा की कि "जब तक मैं इन दोनों कृतघ्न विश्वासघातकों को तहस नहस नहीं कर दूँगा छत्र सिर पर न रक्खूँगा।" प्रतिज्ञा करके वह युद्ध की तैयारियाँ करने लगा। तैयारियाँ इस ढंग से की गईं कि उसके मुख्य मुख्य सरदारों के अतिरिक्त किसी को कुछ ख़बर न हुई। १० ही १२ दिन में सब काम ठीक हो गया और इतने ही समय में पास के देशों से तीन लाख ६० हज़ार सवार और एक लाख पैदल सेना इकट्ठी हो गई। उसकी सेना इतनी अधिक थी कि इतनी सेना उसके आगे कुछ न थी परन्तु सेना का अधिकांश दूर दूर देशों को विजय करने के लिये गया हुआ था और उसके आने में विलम्ब था। यदि ख़ाँ आजम सम्पूर्ण सेना के

लौट आने की प्रतीक्षा करता तो उसकी संख्या इतनी अधिक हो जाती कि जिसका गिनना असम्भव था।

कूच करते समय उसने ज्योतिषियों से पूछा कि उसकी विजय होगी या पराजय। ज्योतिषियों ने सोच विचार कर उत्तर दिया कि विजय होगी। इस पर वह अत्यंत प्रसन्न हुआ और सेना को कूच की आज्ञा दे दी और लगातार २० दिन की यात्रा के पश्चात् उस स्थान पर जा पहुँचा जहाँ 'नायन खाँ' ४ लाख सवारों की सेना लिये पड़ा हुआ था। खाँ आज़म की सेनाएँ इतनी जल्द वहाँ जा पहुँची कि दूसरों को खबर भी न हुई। विपक्षियों के जासूसों पर खाँ आज़म की बड़ी कड़ी निगाह थी। वे जहाँ कहीं मिलते पकड़ लिये जाते थे। यही कारण था कि खाँ आजम के आने की खबर भी उसके विपक्षियों को न हुई और इस तरह उसने 'नायन खाँ' को अचानक धर दबाया। जिस समय 'नायन खाँ' क़ैद किया गया उस समय वह अपनी एक नव-विवाहिता बेगम के साथ भोग-विलास में लिप्त था।

जब दिन भली भाँति निकल आया तो 'खाँ आज़म' अपनी सेना के साथ पहाड़ी पर डटा हुआ दिखाई पड़ा जहाँ से वह सम्पूर्ण मैदान दिखाई देता था जिसमें 'नायन खाँ' खीमा डाले पड़ा था। उसे ज़रा भी ख्याल नहीं था कि कोई उस पर चढ़ा चला आता है। इस बात से वह इतना निश्चिंत था कि इधर उधर कहीं चौकी-पहरा कुछ नहीं रक्खा था। सब रास्तों पर उसने अधिकार कर लिया था और उसे 'खाँ आज़म' के एकाएक यों आ जाने का कुछ पता न था क्योंकि यह मैदान बिलकुल उजाड़ और 'खाँ आज़म' की राजधानी से तीस दिन की यात्रा पर था।

पहाड़ी के ऊपर 'खाँ आज़म' एक अम्बारी में सवार था जो

चार चार हाथियों के ऊपर कसी गई थी। अम्बारी के ऊपर ऊँचा झण्डा लहरा रहा था जो चारों ओर से दिखाई पड़ता था। फ़ौज तीन तीन हज़ार की टोलियों में विभक्त की गई थी और प्रत्येक सवार के पीछे एक 'भालाबरदार' प्यादा खड़ा किया गया था। खाँ आजम ने इस तरह सेना-व्यूह की रचना की थी कि सारे मैदान में फौज ही फौज नज़र आती थी।

जिस समय 'नायन' और उसकी सेना ने यह देखा तो पहले घबड़ा गई परन्तु फिर हथियार ठीक करने लगी और थोड़ी ही देर में तैयार होकर क़तार से खड़ी हो गई। जब दोनों सेनाएँ एक दूसरे के सामने खड़ी हो गईं तो अनेक प्रकार के बाजे बजने लगे और दोनों सेनाएँ गाने लगीं क्योंकि तातारियों की यह रीति है कि जब तक डंके (नक्कारे) पर चोट नहीं पड़ती, तब तक दोनों सेनाएँ दो तारे पर गाना गाती रहती हैं। नक्कारे पर चोट पड़ते ही सेनाएँ लड़ने लगती हैं।

जब लोग गा रहे थे उसी समय दोनों ओर से रण-वाद्य बजने लगे। लड़ाई आरम्भ हुई। सैनिक धनुष, बाण, गदा, बर्छियाँ और तलवारें ले आगे को झपटे। दोनों ओर से बाणों की वर्षा होने लगी। शत-शत सैनिक कट-कटकर गिरने लगे। घायलों के आर्तनाद से आकाश गूँज उठा। जहाँ तहाँ नर-मुण्ड लोटने लगे। खून की नदियाँ बह चलीं। रण-भूमि अत्यंत भयंकर बोध होने लगी।

मारकाट का बाज़ार बहुत गर्म था। प्राण हथेली पर रख दोनों सेनाएँ लड़ रहीं थीं। बड़ी भयंकर लड़ाई थी क्योंकि दोनों ओर से ७ लाख ६० हज़ार सवार लड़ रहे थे! पैदल फौज़ की तो गिनती ही न थी। दोपहर तक घमासान युद्ध होता रहा। किसी की विजय के लक्षण दिखाई न पड़ते थे किन्तु दोपहर के बाद

'खाँ आज़म' के भाग्य ने पलटा खाया और उसकी सेना एक नये उत्साह के साथ लड़ने लगी। उसके सामने 'नायन' की फौज टिकी न रह सकी, उसके पैर उखड़ गये और भगदड़ पड़ गई। 'नायन खां' अपने सरदारों के साथ वन्दी कर लिया गया।

वन्दी होने के पश्चात् ही वह मार डाला गया। उसे एक कालीन में लपेटकर इधर उधर ज़मीन पर पटका गया, यहाँ तक कि वह मर गया। इस ढंग से मारने का कारण यह था कि राजवंश का खून पृथ्वी और सूर्य के सामने न वहने पाये×। 'नायन' की सम्पूर्ण प्रजा ने खांआजम की अधीनता स्वीकार कर ली और यों नायनखां का देश उसके अधिकार में आ गया जिसमें चार सूवे थे। (१) चोरचा (२) कोरिया (३) वारकोल (४) सिकंग तंग कंग।

विजय के पश्चात् 'खां आजम' राजधानी को लौट गया। कीदूखां ने जब 'नायन' की पराजय और मृत्यु का समाचार सुना तो वहुत घवड़ाया। 'खां आज़म' इस युद्ध के अतिरिक्त किसी युद्ध में स्वयं कभी सम्मिलित नहीं हुआ। जब काम पड़ता था तो अपने लड़कों अथवा सेनापतियों को ही भेज दिया करता था। इस युद्ध को भयानक समझकर वह इसमें स्वयं सम्मिलित हुआ था।

× तातारियों की यह रीति है कि एक शासक दूसरे को क़त्ल करके उस पर अधिकार जमा लेगा किन्तु इसका वड़ा ध्यान रक्खेगा कि खून ज़मीन पर न गिरने पावे क्योंकि वे इसे वुरा समझते हैं अतएव वे किसी विजित वादशाह को इस ढंग से मारते हैं कि खून न निकलने पाये। मिस्टर कैम्फर अपनी यात्रा-पुस्तक के प्रथम भाग पेज १६ पर लिखते हैं कि स्याम के वादशाह के दो भाई, राजगद्दी पर अधिकार जमाने के षड़यन्त्र के दण्ड में चन्दन की लकड़ियों से पटवा कर मार डाले गये।

राजधानी में पहुँचकर 'खां आज़म' ने उन लोगों को जो युद्ध में दिल खोलकर लड़े थे पुरस्कार दिये और उनके दर्जे बढ़ाये। जो सौ पर थे उन्हें हज़ार पर और जो हज़ार पर थे उन्हें दस हज़ार पर सेनाध्यक्ष नियुक्त किया। प्रत्येक सैनिक को उसकी वैयक्तिक वीरता के अनुसार ऊंचे दर्जे दिये गये। खूब धन बाँटा गया। सौ के अफ़सर को चांदी, हज़ार को नक़ली सुनहली ज़ेवर दस हज़ार के अफ़सर को सोने की तख्तियाँ मिलीं, जिनपर तातारी भाषा में इस आशय के वाक्य लिखे हुये थे कि—"ईश्वर सर्वदा हमारे सम्राट् को सुरक्षित रक्खे और उसके शत्रुओं का नाश हो।" सब तख़्तियों पर ये वाक्य लिखे हुए हैं किन्तु दस हज़ार के सेनानायक की तख़्ती पर इन वाक्यों के नीचे शेर की और उसके नीचे सूर्य तथा चन्द्र की तस्वीर बनी हुई है। जिसके पास दस हज़ार की यह तख़्ती है वह जहाँ कहीं जाता है उसके सर पर एक प्रकार का छत्र होता है और उसे सुन्दर कुर्सी पर जगह दी जाती है। इसके अतिरिक्त खां आज़म के मुख्य २ सदस्यों के पास भी तख्तियाँ हैं जिनपर उनके नाम, दर्जे और अधिकार खुदे हुए हैं। यदि इन विशेष सदस्यों में से कोई कहीं हरकारा भेजना चाहे तो जो चाहे जिसका घोड़ा, हरकारे को पकड़कर दे सकता है—चाहे वह बादशाह ही का क्यों न हो।

'खां आज़म', मझोले क़द का प्रतिभाशाली जवान है। उसका शरीर सुडौल, रंग लालिमामय श्वेत, आँखें काली और बड़ी तथा नाक सुन्दर है। उसकी चार बेगमें हैं। हरएक के लिये तीन तीन सौ लौंड़ियाँ, बहुतेरे सेवक तथा 'दास' नियत है। प्रत्येक बेगम के अधिकार में लग-भग दस हज़ार आदमी हो जाते हैं। बेगमों के महल अलग अलग हैं। जब वह (खां आज़म) किसी बेगम से भेंट करना चाहता है तो उसे अपने यहाँ बुलवा लेता है

अथवा स्वयं उसके महल में चला जाता है। इन वेगमों की संतान में सवसे वड़ा बेटा गद्दी का अधिकारी माना जाता है। 'ख़ाँ आज़म' के रनिवास में और भी कितनी ही सुन्दरी स्त्रियाँ हैं। प्रतिवर्ष सौ सुन्दर तातारी स्त्रियाँ चुनकर 'ख़ां आज़म' की सेवा में भेजी जाती हैं जो पहले लौंड़ियों के पास इस विचार से सुलाई जाती हैं कि उनके शरीर से दुर्गन्धि तो नहीं निकलती और उनके अंग सुडौल हैं या नहीं। इस परीक्षा में जो अच्छी निकलती हैं वे बारी बारी से 'ख़ाँ आज़म' के पास भेजी जाती हैं। ६, ६ एक साथ उसके सामने उपस्थित की जाती हैं। तीन दिन को और तीन रात को उसकी सेवा के लिये उपस्थित रहती और उसकी आज्ञा का पालन करती रहती हैं।

चारों बेगमों से 'ख़ाँ आज़म' को बाईस बेटे हैं जिनमें सबसे बड़े का नाम 'तरज़ीखां' था, वही 'ख़ां आज़म' के पश्चात् गद्दी पर बैठता परन्तु 'ख़ां आज़म' के सामने ही मर गया। 'तरजी खां' से 'तैमूर' नाम का एक लड़का है जो 'ख़ा आज़म' के पश्चात् राज्य का स्वामी होगा। २२ बेटों में से ७ बड़े २ सूबों में शासन करते हैं और बड़े वीर, साहसी तथा सुन्दर हैं।

'खाँ आजम' दिसम्वर, जनवरी और फरवरी में 'ख़ता' देश की राजधानी 'कम्बालोक' में रहता है। इस नगर के भीतर एक राज प्रासाद (शाही महल) है जिसके चारों ओर एक वर्गाकार मैदान है। चहार दीवारी की हरएक दीवार एक मील लम्बी है जो बहुत मोटी और दस क़दम ऊँची है। प्रत्येक कोने पर एक सुन्दर महल है जिसमें 'खाँ आजम' के सुशिक्षित सैनिक रहते हैं। हर दो किनारों के बीच में भी एक एक महल है। इस

प्रकार महल के रूप में आठ प्रबल शस्त्रागार बन गए हैं। एक में एक ही तरह का हथियार है जैसे एक में बिलकुल तलवार ही तलवार है। इस हाते की दक्षिणी दीवार में पाँच बड़े बड़े दरवाजे हैं। बीच का तीसरा दरवाजा तभी खुलता है जब खाँ आजम बाहर जाता अथवा बाहर से भीतर आता है। बड़े हाते के भीतर एक और छोटा हाता है जिसकी सभी बातें पहले की सी हैं। अन्तर केवल इतना ही है कि वह वर्गाकार न होकर आयताकार है।

यह महल बहुत बड़ा है। उत्तर की ओर वह दीवार से मिला हुआ है किन्तु दक्षिण ओर कुछ जगह खाली है। महल दो मंजिला नहीं है वरन् वह एक २½ गज ऊँचे फ़र्श पर है। महलकी छत बहुत ऊँची है और दीवारें सोने चाँदी से मढ़ी हुई हैं, उनपर नाना प्रकार के पशुओं, जंगल, पहाड़, नदी, झील तथा फल फूलों के चित्र बने हुये हैं। महल की चारों दीवारों पर संगमरमर की सीढ़ियाँ दीवार की चोटी पर पहुँचने के लिये लगाई गई हैं।

महल का एक कमरा इतना बड़ा है कि साठ हजार आदमी उसमें बैठकर खाना खा सकते हैं। महल की इमारत इतनी सुन्दर बनी है कि शायद सम्पूर्ण संसार में उससे सुन्दर इमारत न मिलेगी। दीवार के बाहरी हिस्से भी पीले, नीले, हरे लाल तथा कितने ही रंगों से इस ढंग से रंगे हुए हैं कि दूर से ही चमकते हैं। महल की छत बहुत मजबूत और सुन्दर है।

महल के भीतर बहुत सी इमारतें हैं जिनमें बेगमें और खाँ आजम की जरूरी चीजें रहती हैं। खाँ आजम के अतिरिक्त अथवा बिना उसकी आज्ञा के कोई मनुष्य इनमें नहीं जा सकता। दो दो दीवारों के बीच में सुन्दर वाटिकाएं

हैं जिनमें भाँति-भाँति के मेवों के वृत्त लगे हुए हैं और वारहसिंघे, हिरन इत्यादि जानवर रहते हैं। इन वाटिकाओं की सड़कें पक्की और २ फीट ऊँची हैं और इस ढंग से बनाई गई हैं कि उन पर पानी न ठहर सके। हाते के उत्तर पश्चिम कोने के समीप एक झील है जिसमें से होकर एक नदी वहती है किन्तु उसमें लोहे के ऐसे जंगले लगे हुए हैं कि मछलियाँ झील से वाहर नहीं निकल सकतीं।

महल के उत्तर ओर एक पहाड़ी है जो झील की मिट्टी से बनाई गई है। यह कई सौ क़दम ऊँची और एक मील के घेरे में है। इस पहाड़ी पर सदा हरे रहने वाले वृत्त लगाये गये हैं। जहाँ कहीं किसी सुन्दर वृत्त का पता 'खांआज़म' को लगता है वह उसे खुदवाकर चाहे कितना ही वड़ा हो—मँगाता और पहाड़ी पर लगवाता है। इस तरह उसने दुनिया भर के सुन्दर वृत्तों का एक उपवन तैयार कर लिया है और सारी पहाड़ी को हरे रंग से ढक दिया है। पहाड़ी के वृत्त ही हरे नहीं हैं वरन् वहाँ की ज़मीन का रंग भी हरा है। इसीलिए इस पहाड़ी को 'कोह सब्ज़' अर्थात् 'हरित पर्वत' कहते हैं। इस पहाड़ी पर एक महल भी है जो वाहर भीतर चारों ओर हरे रंग से रंगा हुआ है।

खां आज़म ने अपने इस महल की भाँति एक और महल झील की दूसरी ओर अपने उत्तराधिकारी युवराज के लिये बनवाया है।

महल के समीप ही नगर है। ज्योतिषियों ने 'खां आज़म' को बताया था कि पुराने नगर के निवासी विद्रोह करेंगे अतएव उसने एक नया शहर नदी के उस पार बसाया जिसका नाम

'तीतू' रक्खा। कुछ लोग पुराने शहर के, शेष नये आदमी इस नगर में लाकर बसा दिये। यह नवीन नगर २४ वर्गमील के क्षेत्रफल में फैला हुआ है और उसके चारों ओर छः छः मील लम्बी 'शहर पनाह'— (नगर की रक्षा करने वाली मज़बूत चहारदीवारी) है जो दस क़दम ऊँची है। शहर पनाह पर मोरचे बने हुए हैं। इसमें (शहर पनाह में) १२ फाटक हैं। प्रत्येक फाटक के दोनों ओर दो दो बुर्ज़ हैं। इस तरह प्रत्येक दिशा में ३ फाटक और पाँच बुर्ज़ हैं। ये बुर्ज़ शस्त्रागार का काम देते हैं। नगर में जगह २, सुन्दर इमारत, मकान और सरायें हैं। सड़कें इतनी चौड़ी, साफ़ और सीधी हैं कि एक फाटक से ६—६ मील दूरी का दूसरा फाटक साफ़ दिखाई पड़ता है। सड़कों के द्वारा वर्गाकार मुहल्ले बनाये गये हैं और इस तरह वे शतरंज के खानों की भाँति वर्गाकार कट गये हैं। शहर में अनेक सुन्दर बगीचे हैं। शहर के बीच में एक घण्टा है जो रात में ३ बार बजाया जाता है जिसके पश्चात् कोई मनुष्य बाहर नहीं जाने पाता किन्तु बीमारों की चिकित्सा के लिये अथवा कोई बहुत आवश्यक काम एक बारगी आ पड़ने पर लालटेन साथ लेकर जा सकता है। प्रत्येक फाटक पर एक हज़ार सेना रहती है जो नगर रक्षा का काम करती है।

'ख़ां आज़म' के यहां बारह हज़ार सवारों का एक दल है जिसे 'कशीकान' कहते हैं। प्रति तीन हज़ार पर एक सेनाध्यक्ष होता है। हर तीन हज़ार को बारी बारी से तीन रात और तीन दिन तक 'ख़ां आज़म' के महल पर पहरा देना होता है।

जब खां आज़म किसी बड़े भोज में 'दस्तरख़ान' (भोजन का कपड़ा) पर बैठता है तो उसका 'दस्तरख़ान' सब से ऊँची

जगह पर उत्तर की ओर लगाया जाता है। उसकी बाईं ओर सबसे प्यारी बेगम बैठती है। उसके सीधे, ज़रा नीची जगह पर उसके बेटों और राजवंश के अन्य सम्बन्धियों के बैठने की जगह होती है। यह जगह इतनी नीची रखी जाती है कि बैठने पर नीचे की पंक्ति वालों के सर 'खां आज़म' के पैर तक रहते हैं। दूसरी पंक्ति वालों के नीचे बड़े २ सरदारों की जगह होती है। 'खां आज़म' के लड़कों की स्त्रियाँ, भतीजियाँ भांजियाँ और दूसरी सम्बन्धी स्त्रियाँ, उससे दहने हाथ के नीचे वाले 'दस्तरखान' पर बैठती हैं और उनसे भी नीचे सरदारों की बीवियाँ। ये बातें इस ढंग से की जाती हैं कि 'खां आज़म' की दृष्टि सब ओर पहुँचती रहे। कमरे के बाहर हज़ारों आदमी रहते हैं जो 'खां आज़म' को नज़रें देने आते हैं। 'खां आज़म' के पास ही तीन वर्गाकार तख्ते तीन तीन क़दम के अन्तर से लगे होते हैं जिनमें सोने का खोल चढ़ा होता है और बेल बूटे बने होते हैं। बीच का तख्ता खाली होता है जिसमें एक सुनहला चौड़ा पात्र रक्खा जाता है जिसके चारों कोनों पर चार छोटे २ पात्र होते हैं। बड़े पात्र में स्वादिष्ट और सुगन्धित शराब भरी जाती है जो अपने आप चारों छोटे पात्रों में चली जाती है शेष दो तख्तों पर 'खां आज़म' के सुनहले प्याले और सुराहियाँ रक्खी जाती हैं। एक सुराही आठ आदमियों के लिये काफ़ी होती है। दो दो आदमियों के बीच एक सुराही और दो दो दस्ते लगे हुए प्याले रखे जाते हैं। ये सुराहियाँ और प्याले मर्द औरत सभी के पास एक ही तरह से रखे जाते हैं।

किसी किसी सरदार को यह काम सौंपा जाता है कि वह दूसरे देशों के निवासियों को जो शाही क़ायदों से अपरिचित हैं यथायोग्य स्थान पर बिठावें। ये सरदार इधर उधर घूमकर

अभ्यागतों की आवश्यकताओं को देखते और नौकरों से उनकी पूर्त्ति कराते रहते हैं। हर दरवाजे पर और मुख्यत: 'ख़ाँ आज़म' के निकट के दर्वाज़ों के पास दो मजबूत जवान आसा (लाठी) लिये हुए खड़े रहते हैं। उनका काम है कि वे किसी को ड्योढ़ी पर पैर न रखने दें क्योंकि ड्योढ़ी पर पैर रखना बुरा समझा जाता है। यदि कोई भूल से पैर रख देता है तो उसे ख़ूब पीटते हैं अथवा उसके कपड़े उतार लेते हैं और जब तक वह क्षमा नहीं माँगता, कपड़े नहीं पा सकता। अपरिचित तथा अन्य देशों से आये हुए लोगों को पहले ही यह बतला दिया जाता है किन्तु शराब पीकर दर्वाज़े से निकलते समय इसका विचार नहीं किया जाता क्योंकि मेहमान नशे में होते हैं और उनके पैर ठीक नहीं पड़ते।

'खांआज़म' के सामने खाने की तश्तरियाँ और शराब की सुराहियाँ सरदार लोग उपस्थित करते हैं किन्तु उस समय उनके मुँह और नाक पर रेशमी रुमाल बँधे होते हैं जिससे कि उनकी साँस अथवा शरीर की दुर्गन्ध से खाने अथवा शराब को कुछ हानि न पहुँचे। जब 'खां आज़म' शराब का प्याला उठाता है तो अनेक प्रकार के बाजे बजने लगते हैं। उमरा और अभ्यागत सभी घुटनों के बल होकर उसे आशीर्वाद देते, उसकी प्रशंसा करते तथा 'शाही शिष्टाचार' पूरा करते हैं। खां आज़म के हर प्याले पर ऐसा ही होता है।

भोज के बाद 'बाजीगर' और तमाशा दिखाने वाले उपस्थित हो अनेक प्रकार के विचित्र करतब दिखा दिखाकर बादशाह तथा दर्शकों को प्रसन्न करते हैं। इसके पश्चात् सभा विसर्ज्जित होती और प्रत्येक मनुष्य अपने अपने घर चला जाता है।

राज्य कर्मचारी एक बड़े कमरे में 'खां आज़म' से थोड़ी दूर पर खड़े होते हैं और जब कभी कमरा भर जाता है तो उसके बाहर भी खड़े होते हैं। उस समय एक 'इमाम' खड़ा होकर उन लोगों से कहता है कि 'खां आज़म' के सामने सर नीचा करके उसकी वन्दना करो" अतएव सब लोग वन्दना के लिये चार बार झुकते हैं यहाँ तक कि उनके सर ज़मीन से लग जाते हैं। इसके बाद नज़रें दी जाती हैं, दावत होती है और सब के अन्त में तमाशे। उस रोज एक शेर खुला हुआ 'खां आज़म' के सम्मुख उपस्थित किया जाता है जो बड़े आदर के साथ पैर उठाकर सम्राट की वन्दना करता है।

दिसम्बर, जनवरी और फरवरी के महीने में 'खां आज़म' जब राजधानी में रहता है तो चारों ओर चालीस दिन की यात्रा के भीतर के देशों के रहने वाले लोग शिकार खेलते हैं और मार-मार कर नाना प्रकार के पशु पक्षी सम्राट के पास भेजते हैं। जो इससे अधिक दूर के रहने वाले हैं वे केवल खाल ही भेजते हैं। 'खां आज़म' के यहाँ बहुत से शिकारी तेंदुये, चीते, शेर और बाज़ इत्यादि भी हैं जो जंगली पशुओं—रीछों, गधों, सुअरों, हिरनों, बकरियों और लोमड़ियों का शिकार करते हैं।

'खां आजम' के दो सगे भाई हैं जो 'कोनेची' अर्थात् 'कुत्तों के सरदार' कहलाते हैं क्योंकि उनमें से प्रत्येक के अधिकार में दस हजार आदमी और पाँच हजार कुत्ते होते हैं। एक का नाम 'बायां खां' है और दूसरे का 'मनग़ार खां'। एक झुण्ड की वर्दी लाल और दूसरी की नीली है। दोनों अपने अपने दल को साथ लेकर हर साल अक्टूबर से मार्च तक शिकार खेलते हैं और एक एक हजार शिकार 'खां आजम' को भेंट स्वरूप देते हैं।

पहली मार्च को 'खां आज़म' दो दिन की यात्रा पूर्ण करके समुद्रतट पर पहुँचता और बाज़ों से पक्षियों का शिकार करता है, उस समय उसके साथ दस हज़ार आदमी होते हैं जिनको 'तूसकाऊँ' कहते हैं। सौ सौ बाज़ों की सैकड़ों टोलियाँ पक्षियों पर एक साथ छोड़ी जाती हैं। हर बाज़ के पैर में एक चिन्ह होता है जिस पर मालिक और पालक का नाम लिखा होता है, इससे बाज़ खोने नहीं पाते। जिन पर नाम इत्यादि नहीं होता वे एक अधिकारी के अधीन कर दिये जाते हैं जो 'बोल्जग़ोची' अर्थात् 'पता न लगने वाली वस्तुओं का कार्याधिकारी'—कहलाता है। जिस समय किसी मनुष्य को कोई वस्तु मिले और उसी समय उस अफसर के पास न पहुँचा जाय तो उस आदमी को सजा मिलती है।

'खां आज़म' को गठिया का रोग है अतएव वह अम्बारी में चलता है जो चार हाथियों पर कसी हुई होती है और उसके साथ कुछ चालाक शिक्षित बाज़ होते हैं। उसके दोनों ओर घोड़ों पर सरदार सवार होते हैं जिससे कि 'खां आज़म' उनसे बातचीत कर सके। जब सरदार किसी पक्षी को देखते हैं तो 'खां आज़म' को बता देते हैं और वह उन पर बाज़ छोड़ देते हैं।

एक स्थान पर जिसे 'कचार मूडन' अर्थात् 'वृक्षों का ग्राम' कहते हैं खां आज़म, उसके बेटों, सरदारों और बेगमों के दस हज़ार खीमे लगाये जाते हैं जहाँ वह शिकार के बाद कुछ दिन तक विश्राम करता है। इस स्थान पर उसका दरबार भी लगता है। ये खीमे बहुमूल्य होते हैं और चारों ओर समूरदार पशुओं की खालों से मढ़े हुये होते हैं। जितने लोग इस सेना में होते हैं,

उनके वंश के लोग भी साथ ही होते हैं। इतना बड़ा झुण्ड, एक शहर के समान जान पड़ता है।

इस स्थान के चारों ओर बीस दिन की यात्रा तक के स्थान में बाज़ नहीं पाला जाता और मार्च से अक्टूबर तक सम्पूर्ण साम्राज्य में किसी को भी ख़रगोश, बारहसिंघा और हिरन के शिकार की आज्ञा नहीं है। यहाँ तक कि यदि वे सड़क पर सोते हों तो उन्हें जगाया भी नहीं जाता। जो मनुष्य इसके विरुद्ध चलता है, दण्ड का भागी होता है। मई मास के मध्यांश में वह इस स्थान से शिकार खेलता हुआ चलकर राजधानी में पहुँच जाता है। 'खां आज़म' का वर्ष इस तरह बीत जाता है। छः महीने (सितम्बर से लेकर फ़रवरी तक) राजधानी में, तीन महीने (मार्च से मई तक) शिकार में और तीन महीने (जून से अगस्त तक) ग्रीष्म-प्रासाद में।

राजधानी की चहारदीवारी के बाहरी भाग में बारह मुहल्ले आबाद हैं। उनमें शहर से भी ज़्यादा बस्ती है और देश देश के मुसाफ़िरों और समुद्र यात्रियों के लिये सुन्दर निवास भवन बने हुये हैं। सरदारों के भी मकान हैं। शहर में मुरदे न तो गाड़े जाते हैं और न जलाये ही जाते हैं वरन् नगर के बाहर बौद्ध लोग तो एक स्मशान में जला दिये तथा मुहम्मदी एक क़ब्रस्तान में गाड़ दिये जाते हैं। शहर में वेश्यायें अथवा व्यभिचारिणी बाजारू स्त्रियाँ भी रहने नहीं पातीं। वे शहर से बाहर अलग रहती हैं। इनकी संख्या लगभग बीस हजार के है। रात को नगर में तीस तीस, चालीस चालीस आदमियों का गारद गश्त करता रहता है और जो मनुष्य घर से बाहर मिलता है उसे पकड़कर रात को हवालात में रक्खा जाता और दूसरे दिन

सवेरे न्यायाधिकारी के सम्मुख उपस्थित किया जाता है। यदि वह अपराधी सिद्ध होता है तो उसे दण्ड दिया जाता है।

राजधानी बहुत बड़ी है। प्रसिद्ध व्यापारी नगर होने के कारण समीपस्थ दो सौ शहरों तथा देशों से व्यापारी वहाँ इकट्ठे रहते हैं। ये लोग बाहर से माल लाते हैं। प्रतिदिन प्रायः एक हजार गाड़ी रेशम शहर में आता है। इसके कपड़े बनाये जाते हैं क्योंकि सारे देश में 'सन' बिलकुल नहीं होता। रुई और पटसन बहुत ही कम होते हैं।

खां आज़म के यहाँ बारह बड़े बड़े सरदार हैं जो शासन-प्रबंध करते हैं, उनमें एक व्यक्ति जिसका नाम 'अहमद' था, बड़ा शक्तिशाली था। उसने जादू के द्वारा खां आज़म को बस में कर लिया था, खां आज़म उसकी हर एक बात पर विश्वास कर लेता था। 'अहमद' जो चाहता, करा लेता। यदि किसी को क़त्ल कराना चाहता तो खां आज़म से उसकी शिकायत करता और वह आदमी क़त्ल कर दिया जाता। जिस मनुष्य पर वह दोषारोपण करता, उसकी ओर कोई खड़ा नहीं होता क्योंकि सब उससे डरते थे। यदि वह किसी स्त्री को चाहता और कुमारी होती थी तो उसे अपनी बीबी बना लेता था और यदि ब्याही होती तो उससे अपनी बुरी वासनायें पूरी कर लेता और उनके बाप भाइयों को अच्छे अच्छे ओहदे देकर सन्तुष्ट कर देता था। उसके लगभग पचीस बेटे थे जो ऊँचे ऊँचे ओहदों पर थे और सर्वदा नीच कर्मों में लीन रहते थे। इस प्रकार 'अहमद' ने बेईमानी और रिश्वत (घूस) से बड़ी दौलत पैदा कर ली थी।

इस तरह बेईमानी और अत्याचार करके वह बाईस साल

अपना आतंक जमाये रहा। प्रजा उसके अन्याय और अत्याचार से पीड़ित थी। अन्त में हार मानकर लोगों ने उसे क़त्ल करने और विद्रोह फैलाने का निश्चय किया। एक आदमी जो हजार का अफ़सर था और जिसका नाम 'शेंशो' था और दूसरा जो दस हजार का अफ़सर था और जिसका नाम 'वांशो' था—दोनों ने उसके क़त्ल की तैयारी की। उस समय ख़ां आज़म और उसके बेटे बहुत दूर ग्रीष्म प्रासाद में थे।

ख़ां आज़म ने 'ख़ता' देश तलवार के बलपर जीता था अतएव प्रजा पर उसका विश्वास न जम सका और उसने उनपर तातारी और मुहम्मदी अधिकारी नियत किये। उनके अत्याचारों से प्रजा घबड़ा गई थी। 'वांशो' और 'शेंशो' ने और सरदारों को भी अपने दल में सम्मिलित कर लिया और शहर शहर में ढिढोंरा पिटा दिया कि अमुक दिन अमुक समय विद्रोह फैला दो और जितने दाढ़ीवाले मिलें, उन्हें क़त्ल कर दो* अतएव दोनों विद्रोह नायकों ने नियत रात को महल में जाकर रोशनी की और अहमद के पास हुक्म भेजा कि "युवराज अचानक आ गये हैं और तुझे बुलाते हैं।" यह सुनकर अहमद महल को चला। जब वह फाटक पर पहुँचा तो उसे तातारी सरदार मिला जो बारह हजार सैनिकों का अध्यक्ष था। उसने अहमद से पूछा कि "कहाँ जा रहे हो"। अहमद ने सब हाल कह सुनाया। सब हाल सुनकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ और कुछ मित्रों को साथ ले, वह भी अहमद के साथ हो गया। वह महल के दर्वाजे ही पर खड़ा रहा। 'अहमद' भीतर गया। उस समय अहमद शराब के नशे में था। दूर

---

* 'ख़ता' देश के निवासियों को दाढ़ियाँ नहीं होतीं किन्तु मुहम्मदियों और तातारियों को होती हैं।

से उसने 'वांशो' को बैठा देख उसे ही शाहज़ादा समझा और ज्यों ही सर ज़मीन पर झुकाकर शाही सलाम करने लगा, 'शेंशो' ने जो उसी जगह छिपा हुआ था, झपटकर तलवार का एक भर-पूर हाथ उसकी गर्दन पर इस ज़ोर से लगाया कि उसका सर भुट्टे की तरह अलग छटक गया।

१२,००० सैनिकों का अधिकारी जो फाटक के पास खड़ा था, दूर से सब कुछ देख रहा था। पहले उसने भी 'वांशो' को शाहज़ादा ही समझा था परन्तु जब उसने ये बातें देखीं तो घटना की वास्तविकता उसकी समझ में आगई। उसने एक तीर से 'वांशो' को समाप्त किया और 'शेंशो' को पकड़कर अपने साथियों से कहा कि "जाओ और गारद से कहो कि 'ख़ता' निवासियों में से जो कोई रास्ते में मिले, क़त्ल कर दिया जाय।" जब 'ख़ता' वालों को मालूम हुआ कि सारा रहस्य खुल गया तो अपने घरों में ही बैठे रह गये। तातारी अफ़सर ने 'खां आजम' को इस घटना की ख़बर दी। वहाँ से उसे आज्ञा हुई कि अपराधियों को पर्याप्त दण्ड दिया जाय अतएव उसने पता लगाकर सम्पूर्ण विद्रोही नायकों को क़त्ल करा दिया।

जब 'खां आज़म' राजधानी में लौट आया तो उसे असल बात ज्ञात हुई अतएव उसने 'अहमद' का सब धन ज़ब्त कर लिया और उसके बदमाश लड़कों को क़त्ल करा दिया। उनका मांस शिकारी कुत्तों को खिलाया गया।

यहाँ आकर और यह जानकर धार्मिक सिद्धान्त से मुहम्मदियों में अधिक स्त्रियों से व्याह करना ठीक है उन्हें आज्ञा दी कि उसके राज्य के मुहम्मदी तातारी नियमों से शादियाँ किया करें। जानवर की गर्दन पर छुरी न फेरें वरन् उनके पेट फाड़कर उन्हें गोश्त खाने के काम में लावें।

राजधानी में ही 'खां आज़म' की टकसाल है। वह तूत के वृक्षों के भीतर की छाल से कागज़ बनवाकर और उनके छोटे बड़े टुकड़े कटवाकर उन पर सरदारों, सूबेदारों और उमरावों की मुहरें लगवा देता है। यही टुकड़े रुपये के स्थान पर साम्राज्य भर में प्रचलित हैं। जो मनुष्य इन्हें लेने से इन्कार करता है, उसका सर उड़ा दिया जाता है।

भारतवर्ष और अन्य देशों के व्यापारी केवल 'खां आजम' को अपनी चीज़ें बेचने पाते हैं। इस क्रय विक्रय के लिये 'ख़ां आज़म' के यहाँ बारह सुचतुर मनुष्य नियत हैं। जिस वस्तु को वे अच्छा बताते हैं, ख़रीद ली जाती है। चीज़ों के मूल्य में उन्हें क़ाग़ज़ी* रुपये (नोट) मिलते हैं जिनसे वे उस देश की वस्तुएँ खरीदते हैं।

साल भर में कई बार लोगों को यह सूचना दी जाती है कि जिनके पास सोना चाँदी या जवाहरात हैं वे खां आज़म को बेच सकते हैं। उन्हें दाम में काफ़ी रुपये मिलेंगे। इस तरह साम्राज्य की अनेक उत्तम वस्तुयें उसके पास इकट्ठी हो जाती हैं। जब किसी 'अमीर' अथवा सरदार को सोने चाँदी अथवा रत्नादि की आवश्यकता होती है तो वह मूल्य में क़ाग़जी रुपये देकर टकसाल से प्राप्त कर सकता है। जब काग़जी रुपये हाथों की रगड़ से अथवा बहुत दिनों तक काम में लाने से ख़राब हो जाते हैं तो वे तीन प्रतिशत बट्टा देकर नये रुपयों से बदल दिये जा सकते हैं।

---

*क़ाग़ज़ी रुपये अथवा नोटों के क़िबलाई खां के राज्य में प्रचलित होने का प्रमाण मिलता है। उससे भी चार सौ वर्ष पहले नवीं शताब्दी में चीन में (जब 'संग वंश' राज्य करता था) क़ाग़जी रुपये अथवा नोट प्रचलित थे।

'खां आजम' ने अपने राज्य के चौंतीस सूबों में बारह बड़े अधिकारी नियत कर रखे हैं। ये बारहो सरदार शहर के भीतर एक उच्च और सुन्दर अट्टालिका में रहते हैं जिसमें उनके अलग अलग मकान और कचहरियाँ हैं। हर एक सूबे (प्रान्त) के लिए एक जज (अपराधों की जाँच करने वाला) बहुत से अहल-कार तथा अन्यान्य नौकर हैं। वे अपने अपने सूबों के दफ़्तरों में काम करते हैं किन्तु जब कोई बड़ी घटना हो जाती है और वे उसकी जाँच नहीं कर सकते तो उसे बारहो सरदार 'ख़ां आज़म' के सामने उपस्थित करते हैं और वह जिस तरह ठीक समझता है उसका निर्णय कर देता है। बारहो सरदार सूबेदारों को चुनकर केवल उसकी सूचना मात्र 'ख़ां आजम' को दे देते हैं। वहाँ से उनकी स्वीकृति हो जाती है और ओहदे के अनुसार उन्हें सुनहरी तख़्तियाँ मिल जाती हैं। इन सरदारों को सेना पर भी अधिकार प्राप्त है। वे जहाँ चाहें जितनी सेना भेज सकते हैं। इनका उपनाम 'शंग' है और उनके न्यायालय का भी यही नाम होता है।

राजधानी से हर सूबे को एक सड़क जाती है और उसका नाम उस सूबे के नाम पर रक्खा जाता है। सड़क पर प्रति पचीस मील के पश्चात् एक सराय होती है जिसे 'नीम खाना' कहते हैं। यदि कोई बादशाह भी वहाँ जा निकले तो उसे भी किसी प्रकार का कष्ट न होगा। हर सराय में राजकीय समाचारवाहकों के लिये २०० से ४०० सौ तक घोड़े मौजूद रहते हैं। जिन स्थानों में सड़कें नहीं हैं वहाँ भी सरायें और घोड़े हैं। राज्य भर में सरायें हैं। सम्पूर्ण साम्राज्य में, अनुमानतः तीन लाख घोड़े केवल दूतों और हरकारों के लिये रक्खे गये हैं। सरायों की संख्या दस हजार से भी अधिक है।

दो दो सरायों के बीच तीन तीन मील पर एक एक

छोटा क़िला है जिसके चारों ओर लगभग चालीस घर होते हैं उनमें रहने वाले राजकीय हरकारे कहलाते हैं। उनकी कमर में एक चपरास तथा एक पटका होता है। पटके में बहुत सी घण्टियाँ लगी होती हैं। और जब ३ मील का रास्ता तेजी से पार करने लगते हैं तो घण्टियाँ बजती रहती है। घण्टियों की आवाज सुनकर अगली मंजिल का हरकारा तैयार हो जाता है और जो चीज़ पहला हरकारा ले जाता है उसे वह ले लेता है और मुंशी से जो वहाँ के दफ़्तर में मौजूद होता है उस वस्तु के मिलने की रसीद पहले हरकारे को दिलवा कर आगे चलता है। इस प्रकार जो सूबे बहुत दूर दस दस दिन की यात्रा पर हैं उनका समाचार भी 'ख़ां आज़म' को एक दिन रात में मिल जाता है। हरकारों को अधिक चलना भी नहीं पड़ता। चिट्ठियाँ भी इसी प्रकार भेजी जाती हैं। इन क़िलों अथवा चौकियों पर हरकारों के जाने आने का समय नियत रहता है जिसका निरीक्षण प्रतिमास उस विभाग का एक अफ़सर करता है। सुस्त हरकारों को सजा मिलती है। हरकारे कर अथवा अन्य किसी प्रकार के टैक्स से अलग हैं। उन्हें अच्छा वेतन मिलता है।

इन चौकियों पर एक विशेष प्रकार के चुने हुये हरकारे भी होते है जिनसे अधिक आवश्यकता आ पड़ने पर काम लिया जाता है। उनके कमर में भी घण्टियाँ बँधी होती हैं। ज़ब किसी सूबेदार को कोई ज़रूरी हुक्म भेजना होता है या किसी सरदार के विद्रोही हो जाने की सूचना भेजनी होती है या ऐसा ही कोई दूसरा आवश्यक काम आ पड़ता है तो ये हरकारे दिन भर में ढाई ढाई सौ मील दौड़ते हैं और रात को इससे कुछ कम क्योंकि उनके साथ 'मशाल बरदार' होते हैं जिसके कारण तेजी से चलने का काम नहीं लिया जा सकता। ये हरकारे घोड़ों पर सवार हो

कर सरपट दौड़ते हैं। घण्टियों की आवाज से दूसरी चौकी पर एक मजबूत घोड़ा और हरकारा तैयार मिलता है।

दौड़ते समय ये हरकारे अपने मुँह, पेट, छाती और सर मजबूत पट्टियों से बाँध लेते हैं अन्यथा पेट फूलने से इतना सफर घोड़े पर नहीं कर सकते और मर जाने का डर रहता है। हरकारे के पास एक तख्ती होती है जो इस बात का प्रमाण है कि वह बड़े जरूरी काम से जा रहा है। यदि संयोग वश उसका घोड़ा थक जाये अथवा उसके ऊपर कोई दूसरी आपत्ति आ पड़े तो जो सवार रास्ते में उसे मिले, उससे वह हरकारा घोड़ा ले सकता है। ऐसे समय कोई व्यक्ति उसे अपना घोड़ा देने से इन्कार नहीं कर सकता। यदि रास्ते में कोई नदी अथवा झील होती है तो वहाँ की प्रजा तीन चार नावें हर समय तैयार रखती है जिनसे वह हरकारा सहज ही पार उतर सकता है। किश्तियों को इन चौकियों पर 'खां आजम' का कुछ खर्च नहीं करना पड़ता। वहाँ की प्रजा घोड़े इत्यादि सब आवश्यकीय वस्तुएँ तैयार रखती है। केवल उजाड़ देशों में सरकारी व्यय से घोड़ों का प्रबंध किया जाता है।

'खां आज़म' के राज्य में सब जगह ऐसे अफसर भी हैं जो देश में दौरा कर के रिपोर्ट करते हैं कि अमुक स्थान पर अथवा अमुक देश में अकाल, सूखा, तूफान, टिड्डियाँ अथवा अन्य किसी कारण से लोग संकट में पड़े हैं। ऐसे स्थान की प्रजा से साल भर का लगान नहीं लिया जाता और उन्हें कृषि तथा भोजन सम्बन्धी आवश्यक वस्तुएँ दी जाती हैं। जिन लोगों के मवेशी किसी बीमारी अथवा किसी दूसरी मुसीबत में पड़कर मर जाते हैं उन्हें सरकार की ओर से मवेशी दिये जाते हैं।

यदि 'खाँ आजम' का तीर मवेशी के गल्ले में या किसी सामान भरी हुई नाव में जा लगे तो वह, गल्ले के स्वामी से अपने अधिकार का दसवाँ हिस्सा नहीं लेता और नाव के माल का महसूल (कर, टैक्स) माफ़ कर देता है क्योंकि किसी के माल पर तीर का लग जाना बुरा समझा जाता है। ऐसी चीजें खजाने में नहीं ली जातीं।

सब सड़कों पर थोड़ी थोड़ी दूर से दोनों ओर पेड़ लगाये गये हैं जिससे पथिकों को चलने में आराम मिले और रास्ता पहचानने में सुगमता हो। जिन देशों में रेत के कारण पेड़ उत्पन्न नहीं हो सकते उनमें पत्थर के खम्बे लगाये गये हैं। स्थान २ पर कुएँ और विश्राम स्थल भी बने हुए हैं।

'खता' निवासी चावल और मसाले से एक प्रकार की शराब बनाते हैं जो स्वादिष्ट होती है। गर्मी होने के कारण इस शराब के पीने से और शराबों से शीघ्रता की जाती है। इस देश में एक प्रकार का काला * पत्थर, जो लावें की तरह होता है, अधिक परिमाण में पाया जाता है और जलाने के काम में आता है। इसकी आग अच्छी होती है और देर तक जलती है। इससे हम्माम (स्नानागार) भी गर्म किये जाते हैं।

सम्पूर्ण साम्राज्य में राजकीय शस्य-शालायें हैं। जब अनाज सस्ता होता है तो हजारों मन अनाज उस स्थान की आवश्यकता के अनुसार खरीदकर वहाँ रख लिया जाता है और पूर्णत: सुरक्षित रहता है। जब देश में सूखा पड़ता है तो यह अनाज

---

*—इस पत्थर से आशय पत्थर के कोयले से है क्योंकि चीन में इसको काम में लाने का वर्णन 'इब्न बतूता' और 'रशीदुद्दीन' ने भी अपनी २ यात्रा पुस्तकों में किया है।

प्रजा को बाजार भाव के चौथाई मूल्य पर दिया जाता है और इस प्रकार प्रजा का कष्ट दूर हो जाता है। 'ख़ां आज़म' दान बहुत करता और ग़रीब गृहस्थों को साल भर के भोजन का सामान देता है। उसके दरबार के पास ही 'अनाथालय' है। जो चाहे वहाँ जाकर गर्म रोटियाँ ले सकता है। प्रति दिन प्रायः तीस हज़ार आदमी इस अनाथालय से भोजन पाते हैं। सम्राट ग़रीबों को कपड़े भी देता है। वह ऊन, रेशम, सूत और सन इत्यादि से दसवाँ हिस्सा लेता है। कारीगर सप्ताह में एक दिन की मजदूरी देते हैं जिनसे गर्म और ठण्डे कपड़े तैयार होते हैं जो एक स्थान पर इकट्ठे किए जाते हैं। सेना की पोशाक और वर्दियाँ भी इसी ढंग से तैयार की जाती हैं।

तातारी, बुद्ध धर्म ग्रहण करने से पहले दान देने को अच्छा नहीं समझते थे किन्तु बुद्ध धर्म मानने पर उनकी समझ में आगया कि दूसरे की सहायता करना पुण्य कार्य है।

राजधानी में लगभग ५००० ज्योतिषी हैं जिन्हें भोजन 'ख़ां आज़म' के यहाँ से मिलता है। उनके पास दर्शक यंन्त्र होता है जिसके ऊपर नक्षत्रों के चिन्ह, घण्टे और इसी तरह की अन्य बातें लिखी रहती हैं। ये ज्योतिषी अपने यन्त्र के द्वारा मालूम कर लेते हैं कि किस मास में सूखा, किसमें युद्ध और किसमें विद्रोहात्मक क्रांतियाँ होंगी। इन सब बातों को वे चक्र में लिखते हैं जो 'तक़वीम' कहलाता है। ये लोग जब कुछ बताते हैं तो साथ ही यह भी कह देते हैं कि 'ईश्वर इन बातों में' न्यूनाधिक्य कर सकता हैं।' जो अच्छे और बुद्धिमान ज्योतिषी हैं उनकी बड़ी प्रसिद्धि है।

जब कोई मनुष्य यात्रा की इच्छा अथवा कोई अन्य काम

करने का विचार करता है तो वह नजूमियों (ज्योतिषियों) से पूछता है कि इसका क्या परिणाम होगा ?' ज्योतिषी पहले तो उस आदमी से उसकी पैदाइस का साल, महीना, घण्टा और साइत पूछते हैं फिर हिसाब लगाकर बता देते हैं कि परिणाम क्या होगा ? जन्म पत्रिका का तातारियों में बड़ा प्रचार है।

तातारी लोग ईश्वर को पूजा करते हैं। घर घर में एक तख्ती पर ईश्वर का नाम लिखकर लटकाया जाता है। वे लोग उस तख्ती के आगे प्रति दिन धूप बत्ती इत्यादि जलाते और उसकी पूजा करते हैं। तातारी पूजा करते हुए प्रार्थना में शारीरिक शक्ति और बुद्धि को भिक्षा माँगते हैं। उसके नीचे पृथ्वी पर एक देवता की मूर्त्ति होती है जिसे वे 'पृथ्वी का देवता' कहते हैं। उसके साथ उसकी स्त्री और बच्चों की मूर्त्तियाँ भी होती हैं। 'पृथ्वी देव' से प्रार्थना करते समय लोग सुन्दर ऋतु, पृथ्वी की पैदावार तथा पुत्र इत्यादि की प्रार्थना करते हैं।

तातारी आत्मा को अमर बताते हैं। उनका कहना है कि आत्मा एक शरीर से दूसरे में परिवर्तित होती रहती है। जो मनुष्य जैसे कर्म करता है उसी के अनुसार उसकी आत्मा भी दूसरे रूप में जन्म ग्रहण करती है। जैसे यदि कोई ग़रीब अच्छा काम करे तो दूसरे जीवन में अमीर के घर और यदि अमीर आदमी बुरा काम करे तो दूसरे जीवन में ग़रीब के घर पैदा होगा।

तातारी बड़े मृदुभाषी हैं। नरमी से बात-चीत करते हैं। ललाट पर हाथ रखकर एक दूसरे को सलाम करते हैं। एक दूसरे के साथ अच्छा व्यवहार रखते हैं और अपने माता पिता की बड़ी सेवा करते हैं। उनकी आवश्यकताओं को पूरा करते

हैं। जो लोग माता पिता अथवा अपने अभिभावकों की सेवा अथवा उनका आदर सम्मान नहीं करते, उन्हें दण्ड देने के लिये 'खां आज़म' की ओर से अलग एक विभाग है।

अपराधी हर तीन साल बाद छोड़ दिये जाते हैं किन्तु पहचानने के लिये उनके शरीर पर एक विशेष चिन्ह कर दिया ज़ाता है। 'खां आजम' ने चाँदमारी बन्द कर दी है जिसकी पहले इस देश में बहुत अधिकता थी।

सब सरदार और मंसबदार 'खां आज़म' के आदर और सम्मान के लिये महल से आध मील के अन्दर बड़े सुशील, उपकारी तथा शुद्धाचारी बने रहते हैं। जब कोई 'खां आज़म' की सेवा में उपस्थित होता है तो अपने साथ एक उगलदान ले जाता है और उसी में थूकता है। थूकने के बाद उसे ढँककर अलग रख देता है। कोई मनुष्य दरबार में नहीं थूक सकता। प्रत्येक व्यक्ति के पास चमड़े की एक नई और स्वच्छ चट्टी होती है। दरबार के दरवाजे पर पहुँचकर, वह उसे पहनकर 'खां आज़म' के सामने जाता है जिससे कि सुनहला रेशमी फ़र्श मैला न हो सके।

तिब्बत और बंगाल

'ख़ता' देश से जब उत्तरी सूबों को रवाना होते हैं तो राजधानी से दस मील के अन्तर पर एक नदी है जिस पर पुल बना हुआ है। उसे 'पुल संगीन'* कहते हैं। यह पुल तीन सौ

* पुल संगीन—'पुल संगीन' का अर्थ 'पत्थर का पक्का और मज़बूत पुल' है। किन्तु रशीदुद्दीन ने इस नदी का नाम 'संगीन' लिखा है। प्राचीन समय में 'ख़ां आज़म' की राजधानी से पश्चिम की ओर एक 'शंगान हो'

क़दम लम्बा और आठ क़दम चौड़ा है। दस सवार उस पर से जा सकते हैं। इसमें चौबीस महराबदार दरवाजे और लगभग इतनी ही पनचक्कियाँ हैं। पुल बहुत मज़बूत है और सुंदर संगमर्मर का बना हुआ है। पुल के दोनों ओर थोड़ी थोड़ी दूर पर संगमर्मर का शेर बना हुआ है जिन पर संगमर्मर का एक एक सुन्दर खम्भा खड़ा है और उन खम्भों पर संगमर्मर का एक एक शेर बना हुआ है। इन खम्भों तथा शेरों के बीच की खाली जगह में संगमर्मर की लम्बी पट्टियाँ छड़ की तरह लगी हुई हैं जिससे कोई नदी में गिर न सके। यह पुल देखने में बड़ा सुन्दर जान पड़ता है।

पुल से आगे बराबर सरायें, मुसाफ़िरखाने, अंगूरिस्तान, और बड़े बड़े बगीचे तथा चश्मे, तीस मील तक मिलते हैं जिसके बाद 'जूजू' (आज कल का 'चीचू') नगर आता है जिसमें बौद्धों के मठ और मन्दिर हैं। यहाँ के निवासी अधिकांश रूप से व्यापार करके अपना काम चलाते हैं। 'जूजू' से एक मील आगे बढ़ने पर दो सड़कें मिलती हैं, एक 'ख़ता' सूबे में से होकर जाती है और दूसरी 'मन्नरी' (कोचीन) प्रान्त से।

'ख़ता' वाली सड़क से आगे कुछ दूर जाने पर 'टंगचू' जा पहुँचते हैं। यह एक अच्छा व्यापारी नगर है। 'जूजू' और 'टंगचू' के बीच एक नगर और भी पड़ता है जिसे 'जँगतन ग़फ़ू' कहते हैं। यह नगर इस ओर 'खां आज़म' के शिकार की अंतिम सीमा है। यहाँ 'खां आज़म' उसके पुत्रों तथा उन लोगों के अति-

---

नदी बहती थी और इस समय भी चीन में एक नदी 'शंगान' है जो 'ह्वान' नदी में गिरती है। शायद नदी के ही नाम पर पुल का नाम रखा गया हो।

रिक्त—जिनके नाम बाज़ पालने वालों की सूची में लिखे हुए हैं—और कोई मनुष्य शिकार नहीं खेलने पाता किन्तु उस ओर जब 'खां आज़म' बहुत दिन तक शिकार खेलने नहीं गया तो ख़रगोशों की संख्या बढ़ जाने से खेती की बड़ी हानि पहुँची। जब यह बात 'खां आज़म' को ज्ञात हुई तो उसने अपने बहुत से सरदारों और दरबारियों के साथ वहाँ पहुँचकर महीनों तक ख़ूब शिकार किया। इस तरह ख़रगोशों की संख्या बहुत कम हो गई।

'टंगचो' व्यापारी नगर है। व्यापार बहुत अधिक होता है क्योंकि यहाँ 'खां आज़म' की सेना के लिये कपड़े तथा अन्य आवश्यकीय वस्तुएँ तैयार की जाती हैं। यहाँ अंगूर बहुत अधिक होते हैं जिनकी शराब बनाई जाती है। सम्पूर्ण 'ख़ता' प्रान्त में शराब का यही एक कारखाना है। यहीं से बनकर शराब बाहर भेजी जाती है। रेशम भी बहुत अधिक पैदा होता है।

'टंगचो' से सात दिन की यात्रा के बाद (जो आबाद और हरे भरे देश में होकर करनी पड़ती है) 'प्यानफो' पड़ता है जहाँ व्यापार और शिलपकारी होती है और रेशम बहुत पैदा होता है।

'प्यानफ़ो' के पश्चिम दो दिन को यात्रा पर एक सुदृढ़ विशाल गढ़ है जिसे 'कीचू' कहते हैं। यह गढ़ इस देश के प्राचीन राजाओं का बनाया हुआ है। यहाँ एक महल भी है। उसके बड़े कमरे में उस देश के सब बादशाहों की रंगीन तसवीरें दीवारों पर बनी हुई हैं। वहाँ के बादशाह को "सुनहरा बादशाह" कहते हैं। महल में उसके रहने के समय गोरी, ख़ूबसूरत लड़कियों के अतिरिक्त और कोई नहीं रहता था। जब वह गढ़ के बाहर इधर उधर हवा खाने निकलता था तब भी लड़कियाँ एक हलकी गाड़ी पर उसे बिठाकर स्वयं उसकी गाड़ी खींचती थीं।

यहाँ के लोगों का कहना है कि इस बादशाह और 'बांग खां' में कुछ अनबन हो गई थी किन्तु वह इतना शक्तिशाली था कि 'बांग खां' उसका कुछ नहीं कर सकता था। वह लहू घूँट कर रह जाता था।

एक दिन 'बांग खां' के पास उसके सत्रह वीर और बुद्धिमान सैनिकों ने पहुँचकर कहा कि "हम लोग उस बादशाह को जीवित पकड़कर ला दे सकते हैं आप आज्ञा दीजिए।" बांग खां तो चाहता ही था उसने कहा—"इससे बढ़कर प्रसन्नता का काम और क्या हो सकता है ?" अस्तु; वे आज्ञा लेकर "सुनहरे बादशाह" के दरबार में जा पहुँचे और उससे नौकरी की प्रार्थना की। बादशाह ने उन्हें नौकर रख लिया और हर वक्त अपने साथ रखने लगा क्योंकि उन लोगों ने उसकी सेवा इतनी मिहनत से की कि उन पर उसका पूरा विश्वास हो गया। दो साल बाद एक दिन बादशाह हवा खाने निकला तो इन सत्रह जवानों के अतिरिक्त साथ कोई नहीं था। जब बादशाह टहलते टहलते नदी के उस पार पहुँचा (जो कि महल से एक मील दूर था) तो उन्होंने आपस में एक दूसरे से गुप्त इशारे किये जिसका मतलब यह था कि हम लोगों को अपनी इच्छा पूरी करने के लिये इससे अच्छा समय फिर न मिलेगा। क्षण भर में सबों ने बादशाह को घेर लिया और उससे कहा कि "तू मेरे साथ चल, नहीं तो तुझे क़त्ल करदेंगे। बादशाह ने घबराकर कहा :—"यह तुम्हें क्या सूझी है और मुझे कहाँ लिये जाते हो।" जवानों ने जवाब दिया कि "बांग खाँ' के पास"। बादशाह ने बहुत प्रार्थना की और अपने किये हुये उपकारों और सुव्यवहारों की याद दिलाई किन्तु उन्होंने एक भी न मानकर उसे 'बांग ख़ाँ' के पास पहुँचाया। 'बांग खाँ' अपनी इच्छा पूरी हुई देख प्रसन्नता से फूल गया और बादशाह

को व्यंग तथा आक्षेप के साथ सलाम किया। बादशाह को इस घटना से इतना दुःख हो रहा था कि वह कुछ बोल न सका। 'बांग खाँ' ने आज्ञा दी कि "तुम्हें मवेशी चराने पड़ेंगे"। यह आज्ञा इसलिये दी गई कि बादशाह को ज्ञात हो जाये कि वह, उसकी बराबरी का नहीं था। बादशाह से दो साल तक चरवाहे का काम लिया गया। जब 'बांग खाँ' ने अपना दिल ठण्डा कर लिया तो उसे बुलाकर कहा कि "अब तुझे मालूम हो गया कि तू मेरी बराबरी करने योग्य नहीं है"। बादशाह ने जवाब दिया :—"इस समय के लिये तुम्हारा कथन ठीक हो सकता है"। फिर 'बांगखाँ' ने उसे सुन्दर वस्त्र पहनाकर आदर सम्मानपूर्वक उसके देश को भेज दिया। इसके बाद वह बादशाह, बांग खाँ का सर्वदा मित्र बना रहा।

इस गढ़ से बीस मील पश्चिम एक बड़ी नदी बहती है। चौड़ाई और गहराई की अधिकता के कारण उस पर पुल नहीं बँध सकता। उसे 'कारामूरन' (काली नदी) कहते हैं। मुग़ल इस नाम से 'ह्वांगहो' को याद करते हैं। यह नदी प्रशान्त महासागर में गिरती है और इसके किनारे अनेक नगर तथा क़स्बे पाये जाते हैं जिनमें अधिकतर व्यापारी रहते हैं। वे नदी के द्वारा रेशम इत्यादि का बड़ा भारी व्यापार करते हैं।

नदी को पार करके दो दिन की यात्रा के बाद 'काचनफ़ो' नामक नगर में जा पहुँचते हैं जिसके निवासी बौद्ध हैं। यहाँ ज़रदोज़ी का बहुत बड़ा व्यापार होता है। 'काचनफ़ो' से आगे चलकर एक हरे भरे देश की यात्रा करते हुये आठ दिन पश्चात् 'कंजानफ़ो' (आज कल का 'काशानगांफ़ो') में प्रवेश करते हैं। यह नगर बड़ा सुन्दर और घना बसा हुआ है। प्राचीन समय में यह एक शक्तिशाली साम्राज्य का केन्द्र स्थल था। इस समय

क़िबलाई खाँ का बेटा मंगलाई खाँ इसका शासक है। यहाँ रेशम ज़रदोज़ी, फ़ौज के सामान इत्यादि का अच्छा व्यापार होता है। निवासी बौद्ध हैं।

मंगलाई खाँ का महल नगर से बाहर थोड़ी दूर पर बना हुआ है जिसके चारों ओर चश्में तथा झीलें हैं और पाँच मील के घेरे में दीवारें खिंची हैं। महल के आस-पास सेनायें रहती हैं। 'मंगलाई खाँ' न्यायी राजा है।

महल से पश्चिम की ओर तीन दिन की यात्रा पूरी करने के बाद एक बड़ी पहाड़ी घाटी में जा पहुँचते हैं जो कनकन (वर्तमान समय का हौनशांग) प्रान्त में है। यहाँ लोग कृषि और शिकार पर निर्वाह करते हैं क्योंकि हिरन, बारहसिंघे, शेर और रीछ अधिक पाये जाते हैं। इस पहाड़ी देश में सरायें और मुसाफ़िरखाने भी हैं। 'कन कन' प्रान्त में होकर बीस दिन की यात्रा करके 'इण्डोचीन' की सीमा पर पहुँच जाते हैं। यहाँ सब तरह का अनाज अधिक परिमाण में होता है। निवासी प्रायः व्यापारी और कारीगर हैं। वे बुद्ध धर्म मानते हैं। यह देश दो दिन की यात्रा में समाप्त हो जाता है जिसके पश्चात् फिर बीस दिन तक पहाड़ों की यात्रा करनी पड़ती है। रास्ते में कहीं-कहीं बौद्ध लोग—जो खेती करते और पशुओं को पालते हैं—मिलते हैं। इसके कुछ दूर आगे जाने पर 'सनद आफ़ो' (चंगतोफ़ो) नामक प्रान्त में प्रवेश करते हैं जिसकी राजधानी का भी यही नाम है और चौबीस मील के घेरे में है। प्राचीन समय में एक प्रतापी बादशाह इस नगर का शासन करता था। उसने अपनी मृत्यु के समय नगर को अपने लड़कों में बाँट दिया, प्रत्येक के हिस्से के चारों ओर रक्षा के लिए मज़बूत शहरपनाह (चहारदीवारी) खिंचा दी और फिर

इन तीनों हिस्से के चारों ओर एक बड़ी चहारदीवारी खिंचाई जिसमें तीनों हिस्से अपनी चहारदीवारियों सहित आ गये। इस समय ख़ाँ आज़म ने इसे जीत कर अपने अधिकार में कर लिया है।

शहर के ठीक बीच में होकर एक नदी बहती है जो आगे जाकर समुद्र में गिरती है। इसे 'क्यांगशो' कहते हैं। इसका पाट बहुत अधिक है। नावों द्वारा इसमें बहुत व्यापार होता है। नगर में नदी के ऊपर ग्यारह क़दम चौड़ा और आध मील लम्बा पुल बना हुआ है। पुल के ऊपर संगमरमर के खम्भे हैं और उनपर लकड़ी की शिल्प-दाक्षिण्य से भरी हुई छत है। पुल के ऊपर लकड़ी के मकान इस प्रकार के हैं कि प्रातःकाल उन्हें खड़ा कर दिया और संध्या को उखाड़ दिया जाता है। उनमें दूकानें हैं जिनमें अच्छी बिक्री होती है। पुल ही पर 'ख़ाँ आज़म' का चिड़ियाघर है जिसे तुर्की भाषा में 'क़मरक़' कहते हैं। इससे एक हजार अशर्फ़ी रोज़ की आय होती है। इस नगर के आगे चलने पर पाँच दिन की यात्रा समाप्त करके (जिसमें गाँव और क़स्बों की संख्या अधिक है—उनमें सभी प्रायः खेती करते हैं—कहीं-कहीं जंगली हिंस्र और रक्तलोलुप जानवर मिलते हैं) एक देश में प्रवेश करते हैं जिसमें बाँस बहुत उगता है तथा भयानक जंगली पशु पाये जाते हैं। इन हरे बाँसों में रात को आग लगा दी जाती है और वे सुलगते सुलगते ज़ोर से फटते हैं जिनकी आवाज़ कई मील तक पहुँचती है। अवाज़ सुनकर सब भयानक हिंसक पशु भाग जाते हैं और यात्री रात को निर्भय यात्रा कर सकते हैं; तब भी ये जानवर बहुत कुछ हानि कर डालते हैं।

इसके आगे बीस दिन तक एक उजाड़ और भयानक देश

में होकर यात्रा करनी पड़ती है जिसे 'तिब्बत' कहते हैं। बहुत दूर चलने के बाद एक छोटा प्रान्त पड़ता है जिसमें नगर और क़स्बे अधिकता से हैं। यहाँ के लोगों में यह विचित्र रीति है कि वह शुद्ध कुमारी बालिका को कभी अपनी स्त्री नहीं बनाते। उनका कहना है कि जब तक लड़कियाँ किसी तरह गुप्त रीति से किसी से भोग-विहार नहीं करतीं, ब्याहने योग्य नहीं होतीं। अतएव उस देश की बूढ़ी औरतें अपने यहाँ भी शुद्ध कुमारियों को यात्रियों के पास लाती हैं और जिसे वह आदमी पसन्द करता है उसे भोग विलास के लिये रात को उस पथिक के पास छोड़ जाती हैं। सुबह आकर अपनी लड़कियाँ ले जाती हैं। कभी-कभी तो एक पथिक के सामने बीस-बीस तीस-तीस स्त्रियाँ उपस्थित की जाती हैं और जब तक वह ठहरता है, प्रतिदिन नई-नई सुन्दर लड़कियाँ उसके पास लाई जाती हैं। पथिक को 'छल्ला' अथवा कोई और साधारण वस्तु स्त्री को देनी पड़ती है जिसे स्त्रियाँ शादी होते समय इस बात के प्रमाण में पेश करती हैं कि "मैं शुद्ध कुमारी न होने के कारण ब्याह करने योग्य हूँ। मेरे पास इसके चिन्ह मौजूद हैं।" प्रत्येक स्त्री के पास २० ऐसे निशान होने से उसको ब्याहने वालों की कमी नहीं रहती क्योंकि जिसके पास जितनी ही अधिक ऐसी चीज़ें होती हैं उतनी अधिक उसकी इज़्ज़त की जाती है। ऐसी स्त्रियों से बहुत से लोग शादी के लिये लालायित होकर प्रार्थना करते हैं क्योंकि वे सुन्दर, चंचल तथा यौवन-मद से पूर्ण समझी जाती हैं किन्तु शादी होने के बाद प्रत्येक मनुष्य केवल अपनी ब्याही हुई स्त्री से ही सम्बन्ध रखता है अतएव उनमें दुराचार का भाव नहीं होता। निवासी बौद्ध हैं। शिकार मवेशी तथा ज़मीन की पैदावार पर निर्वाह करते हैं। वे चोरी

और असभ्यतापूर्ण व्यवहारों को पाप नहीं समझते। वे कभी दूसरों की भाषा का प्रयोग नहीं करते, यह बात उनके मातृभाषा-प्रेम का एक उत्कट उदाहरण है। ये लोग खाल और किरमिच के कपड़े पहनते हैं। इस देश में ऐसे बहुत से जानवर पाये जाते हैं जिनसे कस्तूरी निकलती है। यहाँ के लोगों ने ऊँचे कद के भयानक शिकारी कुत्ते पाल रखे हैं जो इन जानवरों का शिकार करते हैं। भेड़ों तथा अन्य पशुओं से ऊन भी निकाले जाते हैं। नदियों की रेत में सोना तथा इधर-उधर मूँगा और दालचीनी भी होती हैं। यहाँ के रहने वाले प्रायः जादूगर हैं। इस देश के कुत्ते इतने ज़बरदस्त होते हैं कि भयानक जंगली बैलों को भी पकड़ लेते हैं। यह देश भी खाँ आज़म की छत्र छाया में है पर प्राकृतिक रूप से यह अलग ही है।

तिब्बत के पश्चिम में 'कनेडो' नाम का सूबा है, उसका बादशाह खाँ आज़म को कर देता है। निवासी बौद्ध हैं। इस देश में एक झील है जिसमें अच्छे मोती पैदा होते हैं किन्तु 'खाँ आज़म' किसी को निकालने नहीं देता क्योंकि यदि अधिक संख्या में मोती निकाले जाँय तो उनकी इज़्ज़त घट जायगी। जो कोई इसके विरुद्ध करता है उसे एकदम फाँसी की सज़ा दी जाती है। जब 'खाँ आज़म' चाहता है तो स्वयं मोती निकलवाता है। एक पहाड़ है जिसमें अच्छी जाति का पुखराज निकलता है। किन्तु इसके लिये भी वही नियम है।

यदि कोई पथिक इस देश के किसी निवासी की स्त्री, बेटी, बहन, माँ अथवा अन्य किसी रिश्तेदार स्त्री को बेइज़्ज़त कर डाले तो इस बात को सौभाग्य का चिन्ह और देवताओं के प्रसन्न होने का प्रमाण समझते हैं। यहाँ तक कि यदि कोई मुसाफिर ऐसा उन्हें मिल जाता है तो घर तथा स्त्री उसे सौंप कर वह स्वयं अपने अँगूर

के बगीचों में चला जाता है। जब तक वह मुसाफिर लौट नहीं जाता तब तक उसकी टोपी अथवा कोई दूसरी वस्तु दरवाज़े पर लटकाई रहती है जिससे घर के स्वामी को मालूम होता है कि वह मुसाफ़िर अभी घर से गया नहीं हैं। जब तक वह वस्तु टँगी रहती है घर का स्वामी मकान में पैर नहीं रखता। मुसाफिर जिस स्त्री को पसंद करता है उसके साथ खूब विहार करता है। इस देश में किसी प्रकार का सिक्का प्रचलित नहीं है बल्कि सोने के टुकड़े और कम दाम की चीज़ों के लिये नमक के टुकड़े लेन देन में बरते जाते हैं। इस देश में ऐसे भी जानवर पाये जाते हैं जिनसे कस्तूरी मिलती है। रक्तलोलुप पशुओं की भी कमी नहीं है। निवासी चावल और गेहूँ की शराब बनाते हैं। लौंग और दालचीनी भी पैदा होती है।

'कनेडो' से दस दिन की यात्रा समाप्त करके 'काराजंग' (आज कल का 'यन वन') सूबे में प्रवेश करते हैं जिसमें छोटे छोटे सात सूबे सम्मिलित हैं। निवासी बौद्ध और देश 'खाँ आज़म' के अधीन हैं। उसका लड़का इस देश का शासन करता है। वह वीर और बुद्धिमान है और न्याय पूर्वक राज्य कार्य करता है। देश हरा भरा और आबाद है। लोग खेती करते और मवेशी पालते हैं। यहाँ अच्छी जाति के घोड़े पाये जाते हैं। राजधानी का नाम 'याची' है जो एक अच्छा व्यापारी नगर है। यहाँ के लोग चावल और गेहूँ अधिक पसन्द करते हैं किन्तु गेहूँ की रोटियाँ नहीं खाते क्योंकि रोटी उन्हें हानि पहुँचाती है।

इस देश के सिक्कों में कौड़ियाँ भी हैं। यहाँ खारे कुएँ हैं जिनके पानी से नमक तैयार किया जाता है। इस देश की यह रीति है कि यदि स्त्री का मन हो तो दूसरे से प्रणयबद्ध हो सकती

है। यहाँ के लोग कच्चा मांस खा जाते हैं। वे उसमें स्वाद लाने के लिए केवल लहसुन और गर्म मसाले की चटनी लगाते हैं।

'याची' से १० दिन की यात्रा पर 'कारा जंग' नगर बसा हुआ है जो इसी सूबे में है। यहाँ का शासक 'खां आज़म' का एक लड़का है। निवासी बौद्ध हैं।

इस नगर के समीप झीलों और नदियों में सोने के कण तथा पहाड़ों में उसके बड़े बड़े टुकड़े पाये जाते हैं। यहाँ के साँप * बड़े लम्बे और तगड़े होते हैं। लगभग दस कदम लम्बे और पीपे के बराबर मोटे होते हैं। सर के पास दो पैर धड़ में बाज़ के से पंजे होते हैं। सर बहुत बड़ा और आँखें रोटी से बड़ी। मुँह आदमी निगल जाने के योग्य होता है; उसमें दाँत भी होते हैं। उसे देखकर बड़ा डर लगता है।

उसे शिकारी बड़ी चालाकी से मारते हैं। वह दिन को सूर्य की धूप के कारण ज़मीन के अन्दर मांद में पड़ा रहता है। रात को भोजन की खोज में बाहर निकलता है और किसी नदी या चश्मे में जाकर पानी पीता है। जो जानवर सामने पड़ जाता है उसे निगल जाता है। यहाँ तक कि शेर, रीछ और भेड़ियों के बच्चों तक को भी नहीं छोड़ता। शेर उसकी बराबरी का साहस भी नहीं कर सकता। अगर शेर उसके सामने पड़ जाय तो वह उसे भी चट कर जाय। वह इतना भारी होता है कि जिस रास्ते से जाता है उसमें दुम की रगड़ से लकीरें पड़ जाती हैं। जिस मार्ग से वह जाता है उसी से वापस आता है। शिकारी लोग लकीरें देखकर रास्ते में कई जगह इधर उधर लकड़ियाँ गाड़ कर उस पर तलवार की भाँति तेज़ लोहे का पत्तर खड़ा कर

* साँप नहीं यह कोई दूसरा जानवर होगा।

देते और ऊपर से उसे रेत से ढँक देते हैं। जब साँप उससे टकराता है तो वह हथियार उसके शरीर के आरपार हो जाता है इस तरह साँप के टुकड़े हो जाते हैं और वह मर जाता है। सवेरे कव्वे शोर मचाते हैं तो लोग समझ जाते हैं कि वह मर गया। तब शिकारी उसके मस्तक से 'जहर मोहरा' निकाल लेते हैं। यदि किसी आदमी को पागल कुत्ता काट खाय या किसी को चोट लगी हो तो इस 'मोहरे' को ज़रा सा घिसकर लगा देने से वह घाव अच्छा हो जाता है इसीलिए इस 'मोहरे' को बहुमूल्य समझते हैं।

इस देश में अच्छे घोड़े पाये जाते हैं। यहाँ से वे भारतवर्ष भी भेजे जाते हैं। लोग उनकी दुम काट डालते हैं और फ्रांसीसियों की भाँति उन पर सवारी करते हैं। सवार होने के समय हथियार लगाते हैं। जो लोग चोरी करते हैं वे सांप का विष हर समय अपने पास रखते हैं और यदि पकड़े जाते हैं तो उसे खाकर आत्महत्या कर डालते हैं। इस जहर को उतारने के लिये लोग कुत्ते का मल काम में लाते हैं। इसके खाने से ज़हर खाने वाले को कै होती है और विष दूर हो जाने से वह शीघ्र स्वस्थ हो जाता है।

जब तक 'खां आज़म' ने इस देश को विजय नहीं किया था उससे पहले यहाँ के लोगों में एक बुरी रीति प्रचलित थी कि यदि उनके यहाँ संयोग वश कोई अच्छा विद्वान, गुणी अथवा संभ्रांत कुलीन पुरुष आ जाता था तो वे उसे केवल इस विचार से क़त्ल कर डालते थे कि उनकी अच्छी बातें कहीं उनके घर वालों में न आ जाँय।

'काराजंग' से पश्चिम की ओर चल कर ५ दिन की यात्रा के पश्चात् 'जरदंदान' नामक सूबे में जा पहुँचते हैं। यहाँ के

लोग बुद्धधर्म मानते हैं। इसकी राजधानी 'विंचन' है। इस देश के पुरुष अपने दाँत पर सुनहरा पत्तर चढ़ाते हैं और सारे शरीर को गुदाते हैं जिसे वे सुन्दरता और सभ्यता का मुख्य स्वरूप समझते हैं। पुरुषों में से अधिकांश शिकार खेलते और युद्ध करते हैं। स्त्रियाँ, सेवकों की सहायता से (जो युद्ध में पकड़ कर लाये जाते हैं) घर का सारा काम करती हैं।

इस देश में जब स्त्री को बच्चा पैदा होता है तो उसे नहला धुलाकर स्त्री घर के काम काज में लग जाती है और उसकी जगह पुरुष बच्चे के पास ४० चालीस दिन तक बिस्तर पर पड़ा रहता है* और उसके मित्र उसे देखने आते हैं, धन्यवाद देते तथा उत्सव करते हैं। वे ऐसा इसलिए करते हैं कि स्त्री ने बड़ा कष्ट सहन

---

* मि० टेलर के कथनानुसार यह रीति 'पेरीनीज़' के 'व्यार्न' नामक एक ज़िले में भी पाई जाती थी और स्पेन के 'बास्क' नामक एक ज़िले में अब भी पाई जाती है। फ्रांसिस मिचिल के कथनानुसार बिस्के की खाड़ी की घाटी में रहने वाले लोगों में भी यह रीति प्रचलित है। उत्तरी आसाम की सीमा पर 'मीरस' जाति में भी एक इसी तरह की चाल पाई जाती है और बच्चा पैदा होने के ४० दिन बाद तक पुरुष घर से बाहर नहीं निकलता। दक्षिणी अमेरिका के 'गिनी' प्रान्त के 'केरब' और वहाँ बसे हुए स्पेन वालों में, पीरू के 'अबीअबोनस' फ़िरक़े, केलफोर्निया के प्राचीन निवासियों और 'मुलका' द्वीपसमूह के एक द्वीप में तथा दक्षिण (हिन्द) की एक जंगली जाति (जो तेलगू से मिली जुली भाषा बोलती है) में भी ऐसी रीतियाँ पाई जाती हैं। 'यूडोर्स' लिखते हैं कि "इस प्रकार की रीति प्राचीन समय में 'कार्सिका' द्वीप में भी पाई जाती थी। 'स्ट्रायू' के एक लेख से यह मालूम होता है कि उत्तरी स्पेन की 'अबीरियन' जाति में अब भी यह रीति प्रचलित है। बोर्नियो, कमसकटिका और ग्रीनलैण्ड में इसी तरह की रीति प्रचलित है। वहाँ जितने दिन पुरुष इस

किया है अतएव उसका चिर सम्बन्धी होने के कारण पुरुष को भी उसकी विपत्ति में कुछ भाग लेना चाहिये। ये लोग कच्चा और पक्का दोनों प्रकार का मांस खा जाते हैं। पके हुए गोश्त के साथ चावल भी खाते हैं। इनमें सोने का सिक्का चलता है। कम मूल्य की साधारण वस्तुओं के लिये कौड़ियाँ चलती हैं। चाँदी की एक खान यहाँ से बहुत दूर ५ मास की यात्रा पर है अतएव जो व्यापारी चाँदी का व्यापार करते हैं उन्हें बहुत लाभ होता है क्योंकि एक हिस्सा सोने के बदले वह केवल पाँच गुनी ही चाँदी देते हैं।

उनके यहाँ न मूर्तियाँ हैं और न मन्दिर ही हैं। वे केवल अपने वंश के श्रेष्ठ और आदर्श पुरुष की उपासना करते हैं। इन लोगों में लिखने की परिपाटी प्रचलित नहीं है। देश के चारों ओर पहाड़ और जंगल पाये जाते हैं। गर्मियों में यहाँ की हवा इतनी ख़राब हो जाती है कि यदि कोई समुद्र-यात्री वहाँ आने का प्रयत्न करे तो अवश्य मर जाये।

ये लोग जब किसी से लेन देन का व्यवहार करते हैं तो लकड़ी का गोल अथवा वर्गाकार टुकड़ा लेकर बीच से दो हिस्से कर डालते हैं और उनमें दोनों दो तीन निशान अथवा दाँते बना देते हैं। जब ऋणी मनुष्य ऋण का धन चुका देता है तो अपने महाजन से वह दूसरा भाग उस टुकड़े का ले लेता है।

इन तीनों सूबों (जिसका वर्णन ऊपर किया जा चुका है) में जब कोई मनुष्य बीमार पड़ता है तो प्रेतात्माओं को दूर करने वाले जादूगर बुलाये जाते हैं। वे बाजा बजाकर गाते और नाचते हैं; यहाँ तक कि एक मनुष्य नाचते नाचते ज़मीन पर मुरदों की

अवस्था में रहता है उसे कुछ कामों तथा कुछ खाने, पीने की चीज़ों से दूर रहना पड़ता है।

भाँति बेदम होकर गिर पड़ता है। उस समय प्रेतात्मा उसमें प्रवेश कर जाती है। उस बेहोश आदमी के साथी उससे पूछते हैं कि 'रोगी की बीमारी का क्या कारण है।' वह बताता है कि "अमुक प्रेतात्मा उससे अप्रसन्न हो गई है और उसी ने रोगी कर दिया है।" यदि यह अच्छा होना चाहे तो दो तीन भेड़ें और दस बारह शराब के मटके लावे। उस प्रेतात्मा को इन भेड़ों की बलि दी जाय। यदि रोगी को अच्छा हो जाने की आशा रहती है तो ऐसा ही जवाब मिलता है और उस रोगी के सम्बन्धीजन सम्पूर्ण वस्तुएँ एकत्र करके बलि चढ़ाते हैं और भेड़ों का खून लेकर वहाँ छिड़कते हैं। बहुत से मर्द (स्त्रियाँ भी) गाते बजाते और नाचते हैं और हाथों में मशाल लेकर माँस के लोथड़े, शराब और खून इधर उधर फेंकते हैं। इसके बाद एक जादूगर नाचते नाचते गिर जाता है और उसके मुँह से झाग आने लगते हैं। लोग उससे पूछते हैं कि 'क्या रोगी को अपराध के लिये क्षमा कर दिया गया?' यदि वह कह दे कि अभी क्षमा नहीं किया गया—अमुक वस्तु और लाओ तो वह भी लाई जाती है और यदि कह दे कि क्षमा कर दिया गया तो फिर सब प्रसन्न होकर खूब गाते बजाते, गोश्त खाते तथा शराब पीते हैं। रोगी भी अच्छा होकर उनमें जा मिलता है और खाता पीता है।

सन् १२७२ ई० में 'ख़ां आज़म' ने 'काराजंग' और 'विंचन' एक बादशाह से विजय किये थे जो कि ब्रह्म देश और बंगाल के कुछ पहाड़ी हिस्सों का भी स्वामी था। उस बादशाह के देश के बहुत से आदमी 'ख़ाँ आज़म' की प्रजा तथा उसके अधीन शासकों को तंग किया करते थे अतएव उसने (ख़ाँ आज़म ने) एक बड़ी भारी सेना उनको ठीक करने के लिये भेजी। जब उस दूसरे बादशाह ने इस सेना के आने का हाल सुना तो दो हज़ार हाथी

(जिन पर लकड़ी की अम्बारियाँ लगी थीं और हर एक अम्बारी में १६ आदमी सशस्त्र बैठ सकते थे) और सोलह लाख सवार तथा प्यादे साथ लिये और यह सोच कर चला कि तमाम तातारियों को काट डालें। तीन दिन में वह तातारियों की सेना के पास जा पहुँचा। जब तातारी अध्यक्ष को उसके आने का समाचार मिला उस समय उसके पास केवल बारह हज़ार सवार थे किन्तु सब चुने चुनाये और अनुभवी। स्वयं सेनापति नासिर उद्दीन बड़ा अनुभवी साहसी और वीर था। उसे ज़रा भी डर न मालूम हुआ। वह पहले ही से मैदान में जा डटा और एक व्यूह बनाकर सेना को खड़ा कर दिया। शत्रुओं की सेना भी सामने जा डटी। सेना की सबसे अगली तथा मध्यम पंक्ति में उस बादशाह ने हाथी खड़े किये थे। इन हाथियों को देखकर तातारियों के घोड़े गड़बड़ाने लगे। तब सेनापति ने आज्ञा दी कि सवार घोड़े से नीचे उतर जायँ, घोड़ों को वृक्षों से बाँध दें और शत्रुओं पर बाणों की घनघोर वर्षा आरम्भ कर दें। ऐसा ही किया गया। तातारियों के तीरों से शत शत सैनिक भूमि पर लोटने लगे। हाथी घायल होने के कारण क्रोध में भर गये और सेना को खड़्‌बड़ाते तथा कुचलते हुए जंगल की ओर भाग चले। उनकी अम्बारियाँ वृक्षों की शाखाओं से टकरा टकरा कर टूटने लगीं और उन पर बैठे हुए ३२००० आदमी सहज ही नष्ट हुए। कितने ही सैनिक हाथियों के पैरों से कुचल डाले गये और इस प्रकार अपने आप ही तातारियों के विपक्षी उस बादशाह की अधिकांश सेना नष्ट हो गई। जो बची उसका क्रम भी हाथियों के कारण टूट गया था और वे इधर उधर हो गयी थीं। ऐसे ही समय तातारियों ने घोड़ों पर सवार होकर उन पर धावा बोल दिया। अब तलवारों और बर्छियों से भयानक युद्ध होने लगा।

किन्तु बादशाह की सेना का क्रम टूट गया था और वे तितर-बितर होगई थीं अतएव विजय तातारियों की हुई। दोनों दल के बहुत आदमी मारे गये। दोपहर तक तो भयंकर मार काट मची रही, किन्तु दोपहर के बाद थोड़े से बचे बचाये तातारियों ने इतनी तेज़ी के साथ आक्रमण किया कि बादशाह की सेना उस आक्रमण को रोक न सकी। उसके पाँव उखड़ गये और वह भाग निकली। तातारियों ने पीछा करके हज़ारों को क़त्ल किया किन्तु जब उन्होंने देखा कि अब ये लोग लौटकर फिर लड़ने की हिम्मत नहीं कर सकेंगे तो लौट आये। इस लड़ाई में उन्हें बहुत से हथियार तथा दो सौ हाथी मिले। पहले 'ख़ाँ आज़म' के यहाँ हाथी नहीं थे किन्तु अब से उसके यहाँ हाथी रखने का प्रबन्ध किया गया।

इस युद्ध-स्थल से चलकर ढाई दिन की यात्रा के पश्चात् हम एक स्थान पर पहुँचे जो चीन और भारतवर्ष की सीमा पर है। यहाँ सप्ताह में तीन दिन बाज़ार लगता है। सोना यहाँ बहुत होता है जिन्हें ख़रीदने के लिये व्यापारी आते हैं और पाँच हिस्सा चाँदी देकर एक हिस्सा सोना मोल ले जाते हैं। यहाँ से दो दिन के पहाड़ी सफ़र के बाद ब्रह्मा सूबे की उत्तरी सीमा पर जा पहुँचे जो भारत-वर्ष की सीमा से बहुत कम दूर है। पन्द्रह दिन की यात्रा के पश्चात् (जिसमें हाथी तथा गैंड़े इत्यादि भयानक जानवर मिलते हैं) इस प्रान्त की राजधानी में जा पहुँचते हैं। यहाँ के लोग एक विचित्र भाषा बोलते हैं और बौद्ध हैं।

यहाँ से थोड़ा पूर्व एक प्रान्त है जिसका राजा बड़ा विषयी है। उसके तीन सौ बीबियाँ हैं। वह देश में जहाँ कहीं किसी स्त्री की सुन्दरता की प्रसिद्धि सुनता है तो उससे झट

ज़बरदस्ती शादी कर लेता है। निवासी बुद्ध धर्म पर विश्वास करते हैं। ये लोग दूध, गोश्त और चावल खाकर निर्वाह करते हैं और चावल तथा मसाले से बनी हुई शराब पीते हैं। देश में सोना और मसाला बहुत होता है किन्तु समुद्र से बहुत दूर होने के कारण इस देश का माल प्रायः इसी देश में रह जाता है—चीज़ें सस्ती हैं। हाथी बहुत मिलते हैं। यहाँ के रहने वाले लोग भी शरीर पर गुदना गुदवाना अच्छा समझते हैं। हाथ, पैर, गर्दन, छाती, मुँह, पेट तमाम शरीर पर ये सूई से गुदा कर फूल पत्ते बनवाते हैं और इसे सुन्दरता का चिन्ह समझते हैं। जितना ही अधिक किसी का शरीर गुदा होगा उतनी ही उसकी प्रशंसा होगी। इस देश का नाम 'कोगीगो' (प्राचीन समय का 'कफ़ची कूई' और आज कल का 'क्याचीकूई') है।

भारतीयचीन

(Indo-China)

'कोगीगो' के पश्चात् पूर्व दक्षिण की ओर एक प्रान्त है जिसे 'अनेन' (अनाम) कहते हैं। रहने वाले बौद्ध हैं। स्त्रियाँ पैरों और भुजाओं में सोने के गहने पहनती हैं। यहाँ से भारतवर्ष को घोड़े बहुत जाते हैं। देश में हरी घासों के लम्बे मैदान हैं। जो पशुओं के काम में आते हैं। प्रायः सभी आवश्यक वस्तुएँ यहाँ उत्पन्न होती हैं। 'कोगीगो' से 'अनाम' पहुँचने में पचीस दिन लगते हैं और 'कोगीगो' से बंगाल देश तक पहुँचने में तीस दिन की यात्रा करनी होती है।

'अनेन' अथवा 'अनाम' से आठ दिन की यात्रा करके 'कोलोमान' अथवा 'तोतोमान' में प्रवेश करते हैं। यहाँ के निवासी बुद्धमत मानते और एक विचित्र भाषा बोलते हैं। ये लोग ऊँचे क़द के मोटे ताज़े और गेहूँ के रंग के होते हैं और अच्छे सैनिक हैं। वे मुरदों को जलाते हैं और हड्डियाँ किसी चीज़ में बन्दकर पहाड़ की ऊँची गुफाओं में रख देते हैं जहाँ वे जैसी की तैसी पड़ी रहती हैं।

देश में सोना बहुत पाया जाता है। व्यापारी अच्छी अवस्था में हैं। यहाँ के निवासी प्रायः मांस, दूध और चावल से निर्वाह करते हैं। वे, चावल और मसाले के योग से बनी हुई शराब पीते हैं।

'कोलोमान' से पश्चिम की ओर नदी के किनारे किनारे,

यात्रा करके हम लोग बारह दिन में 'कोइचू' नामक सूबे के 'फ़ैगन' नामक प्रसिद्ध नगर में पहुँचे। यहाँ के निवासी व्यापारी हैं। कुछ लोग कारीगरी का काम भी करते हैं। ये लोग वीर होते हैं। इनका विश्वास बुद्धधर्म पर है। इस देश में काग़ज़ के रूप में रुपये (अर्थात् नोट) प्रचलित है। यहाँ एक ऐसा पौधा अधिकता से पाया जाता है, जिसकी छाल के रेशों से गर्मी की ऋतु में पहने जाने योग्य कपड़े बनाये जाते हैं। इस देश में शेर इतनी अधिकता से हैं कि कोई मनुष्य मकान के बाहर सो नहीं सकता और इनके कारण नावों द्वारा नदियों की यात्रा में भी बड़ा डर रहता है क्योंकि जिस तरह मकान के बाहर शेर आदमियों को मार डालते हैं उसी प्रकार, रात को नावों में भी जो नदियों के किनारे ठहरती हैं, आदमियों पर आक्रमण कर बैठते हैं और उन्हें खींच ले जाते हैं, इसीलिए नावों की यात्रा में प्रायः यात्री अपने साथ दो कुत्ते रखते हैं जो बड़े भयानक होते हैं और शेर का सामना करते हैं किन्तु उसके दाँव में नहीं जाते। शेर भी उनसे डरता है क्योंकि वे उछल उछलकर उसे नोच डालते हैं अतएव वह, इन कुत्तों पर आक्रमण नहीं करता। कोई कोई कुत्ता शेर को बहुत तंग करता है, यहाँ तक कि शेर, वृक्ष के तने अथवा दूसरी किसी वस्तु से पीठ लगाकर दो पैरों पर खड़ा हो जाता है। ज्योंही शेर ऐसा करता है त्योंही यात्री (जो अच्छे तीरंदाज़ होते हैं) उसके पेट में तीर मारकर उसका काम तमाम कर देते हैं। इस तरह कहीं यात्री इस देश में यात्रा करते हैं किन्तु तिसपर भी नदियों के द्वारा यहाँ खूब व्यापार होता है।

फ़ैगन से चलकर बारह दिन बाद 'चंगतोफ़ो' नगर में पहुँचे जिसका हम पहले वर्णन कर चुके हैं और जिसमें से होकर हम यहाँ तक पहुँचे हैं। 'चंगतोफ़ो' से चलकर ७० सत्तर दिन

बाद 'चूचू' पहूँचे, वहाँ से 'काकीफ़नो' पहुँचने में चार दिन लगे।

'काकनफ़ो' (आजकल 'कानफ़ो') एक प्रसिद्ध नगर है। उसमें से होकर एक नदी बहती है जिसके द्वारा बड़ा व्यापार होता है। निवासी बौद्ध हैं जो व्यापार और कारीगरी करके पेट पालते हैं। रेशम यहाँ बहुत होता है जिससे रेशमी और जरदोज़ी कपड़े तैयार किये जाते हैं। इन लोगों में भी काग़ज़ के रुपये (नोट) प्रचलित हैं। मुरदों को जलाने की प्रथा है।

दक्षिण की ओर ३ तीन दिन की यात्रा करके 'चांगलो'* जा पहुँचे। यहाँ के रहने वाले मुरदों को जलाते और नमक बनाते हैं। इस देश में एक प्रकार की खारी मिट्टी पाई जाती है जिसे खोद-कर लोग ढेर लगा देते हैं और फिर उस ढेर पर पानी डालते हैं जो तली में होकर निकल जाता है। इस पानी को लोग आग पर उबालते हैं। पानी भाप बनकर उड़ जाता है और नमक के छोटे छोटे टुकड़े रह जाते हैं। यहाँ भी काग़ज़ के रुपये (नोट) चलते हैं।

पाँच दिन की यात्रा करके 'चंगलीफ़ो' ('ननफ़ो') नगर में प्रवेश किया। इसके बीच में होकर एक नदी बहती है जिसका पाट बहुत चौड़ा है। इस नदी से रेशमी माल, मसाला तथा अन्य बहुमूल्य वस्तुओं का व्यापार होता है। यहाँ भी नोट चलते हैं।

यहाँ से ५ दिन की यात्रा के बाद 'तादनफ़ो' नगर पड़ता है जो एक अच्छा नगर है। प्राचीन समय में इसकी और भी

---

* मिस्टर 'पाथर' लिखते हैं कि इस नगर का नाम 'चालंगो' है जो 'तसांगचू' से एक नहर के द्वारा अलग होता था किन्तु मार्सडन और मि० मरे का कथन है कि इसी का नाम 'तसांगचू' है।

प्रसिद्धि थी क्योंकि उस समय यह नगर एक बड़े राज्य की राजधानी के रूप में था। अब भी ग्यारह नगर उसके अधीन हैं। यहाँ रेशम बहुत पैदा होता है और व्यापार का भी ज़ोर है।

सन् १२७३ ई० में ख़ां आज़म ने एक बड़ी सेना के साथ अपने एक सेनापति 'लीताखां' को यह देश विजय करने के लिए भेजा। जब वह इस नगर का घेरा कर चुका तो वहीं ठहर गया और वहाँ के कुछ लोगों को मिलाकर उसने 'ख़ां आज़म' के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की। जब खां आज़म को यह मालूम हुआ तो उसने दो सेनापतियों को एक बड़ी भारी सेना लेकर उसे हटाने के लिये भेजा। इन दोनों सेनापतियों में से एक का नाम 'मंगलोताई' और दूसरे का 'आग़ोल' था। यद्यपि इतने समय में 'लीताखां' बहुत सेना का संग्रह कर चुका था परन्तु अन्त में उसे हारना पड़ा। 'खां आज़म' की आज्ञा से इस विद्रोह के बड़े बड़े नेता क़त्ल कर दिये गये और छोटे अफ़सर क्षमा माँगने पर छोड़ दिये गये।

'तादनफ़ो' से दक्षिण की ओर चले। तीन दिन चलने पर 'संज़ूमातो' मिला। इस यात्रा में प्राकृतिक दृश्यों की अधिकता थी। सुन्दर हरे भरे मैदानों से इधर का देश पटा पड़ा है। पहाड़ी झरनों से स्वच्छ पानी बहकर घाटियों को कभी सूखने नहीं देता।

यहाँ के निवासी बौद्ध हैं और देश में नोटों का अधिक प्रचार है। दक्षिण से बहती हुई एक नदी ने आकर इस नगर को और भी हरा कर दिया है। 'ना नवांग' के पास इस नदी की नगर निवासियों ने दो शाखायें कर दी हैं। एक पूर्व को जाती है और दूसरी शाखा, पश्चिम की ओर बहती हुई 'ख़ता' देश में जा पहुँची

है। इस नदी में होकर जहाजों और किश्तियों के द्वारा अच्छा व्यापार होता है। हजारों जहाज और किश्तियाँ इण्डोचाइना और 'खता' को माल लाद कर जातीं और वहाँ से दूसरी चीजें लाद कर आतीं हैं।

यहाँ से दक्षिण की ओर चले। आठ दिन की यात्रा के बाद एक नगर में पहुँचे जिसे 'सजू' * कहते हैं। यह एक प्रसिद्ध नगर है। निवासी अच्छे सैनिक हैं। ये लोग अच्छी शिल्पकारी करते हैं। व्यापार भी होता है। शिकार के लिये यहाँ पक्षियों की अधिकता है। नगर के पास ही वह नदी बहती है जिसका वर्णन हम कर चुके हैं। यहाँ भी जहाजों से अच्छा व्यापार होता है।

आगे चलने पर तीन दिन की यात्रा के पश्चात् 'पीचू' नाम का नगर मिला। यहाँ रेशम बहुत होता है। भिन्न भिन्न नगरों के साथ इस नगर का व्यापारिक सम्बन्ध है अतएव यहाँ, व्यापारियों की अधिकता है।

'पीचू' से दो दिन की यात्रा के बाद 'सीचू'† पहुँचे। यह एक अच्छा व्यापारी शहर है। निवासी बौद्ध हैं और मुरदों को जलाते हैं। यहाँ भी नोटों का प्रचार है। जमीन उपजाऊ होने के के कारण गेहूँ बहुत होता है।

एक दिन रह कर 'सीचू' से रवाना हुये, रास्ते में खूब प्राकृतिक दृश्य देखने में आये। रास्ता हरियाली से पटा होने के कारण चलने में अधिक तकलीफ नहीं हुई। तीन दिन की यात्रा के बाद

---

* इस नगर का नाम 'लंजन भी है।

† मिस्टर पाथर के कथनानुसार प्राचीन काल में इस नगर का नाम 'सीचू' था किन्तु अब इस नगर को 'सोतसन' कहते हैं। ऐसा ही मि० मरे ने भी लिखा है।

हम लोग 'कारामूरन' नदी के किनारे पहुँच गये। इस नदी का पाट पूरे एक मील का है और यह इतनी गहरी है कि इसमें जहाज़ भलीभाँति चलाये जा सकते हैं। इसमें बड़ी बड़ी मछलियाँ पाई जाती हैं। इस नदी में 'ख़ां आज़म' की पंद्रह हज़ार बड़ी बड़ी किश्तियाँ लंगर डाल कर पड़ी रहती हैं। यहाँ से समुद्र का किनारा केवल एक दिन की यात्रा पर है। नदी के दोनों तट पर ठीक आमने सामने दो नगर बसे हुए हैं। एक का नाम 'कोय गंजू' और दूसरे का 'केवाचू'। पहला एक बड़ा नगर है किन्तु दूसरा छोटा है।

'भारतीय चीन' में एक बादशाह था जिसे 'फ़गफ़ूर' कहते थे। उसका देश इतना बड़ा था और उसके पास इतना धन था कि 'ख़ाँ आज़म' के अतिरिक्त इन बातों में उसकी बराबरी का कोई न था। वह और उसकी प्रजा केवल औरतों की इच्छुक थी। उसके देश में घोड़े नाम के लिये भी न थे और प्रजा युद्ध-कौशल से बिलकुल अनभिज्ञ थी किन्तु इतने पर भी प्राकृतिक शक्तियों के कारण यह देश सुरक्षित था। यदि यहाँ के लोग युद्ध कला में निपुण होते तो यह देश कभी विजय न हो सकता।

'ख़ां आज़म' ने सन् १२६८ ई० में अपने एक सेनापति को, जिसका नाम 'बायां ख़ाँ' था, इस देश को (इण्डोचाइना—भारतीय चीन) विजय करने के लिये भेजा। फगफोर ने अपनी जन्म पत्रिका में देखा था कि सिवा सौ आंखों वाले अदमी के मेरा राज्य किसी से विजय नहीं किया जा सकेगा 'बायां' का वास्तविक नाम "बायां जंग सां" था और "जङ्ग सां" शब्द का अर्थ "सौ आँखों वाला" है। उधर शाह फग़फोर को विश्वास था कि हमें कोई जीत नहीं सकता क्योंकि यह सम्भव ही नहीं कि किसी मनुष्य को सौ आँखें हों।

'वायाँ' एक भारी सेना लेकर इस देश में घुस गया और वढ़ते वढ़ते उस शहर में पहुँच गया जिसका नाम उस समय 'कोंगनजो' था (और आजकल 'नहांगन फो' के नाम से प्रसिद्ध है) किन्तु वहाँ के निवासियों ने अधीनता स्वीकार न की वे इस भरोसे पर थे कि हमें तो कोई जीत ही नहीं सकता। 'वांया' यहाँ से आगे वढ़ कर दूसरे शहर में पहुँचा किन्तु वहाँ भी पहले शहर की सी दशा हुई। वह वहाँ से भी आगे वढ़ा क्योंकि उसे यह ज्ञात था कि पीछे से एक वड़ी सेना उसकी सहायता को आ रही है।

'वायां' इसी तरह पाँच शहरों से आगे निकल गया। जव वह छठे शहर में पहुँचा तो उसने धावा करके उस पर अधिकार कर लिया और इसी तरह वारह नगरों पर अधिकार करने के पश्चात् वह सीधे राजधानी 'कंसी' (आज कल—'कांटन') की ओर वढ़ा, जहाँ वादशाह चैन और वेखवरी के साथ राज्य करता था।

जव शाह फगफोर को 'वांया' की चढ़ाई का हाल मालूम हुआ तो वह वहुत घवड़ाया क्योंकि उसे अपनी सम्पूर्ण अवस्था में ऐसी घटना का सामना नहीं करना पड़ा था। अतएव एक हज़ार जहाज़ों में धन तथा और चीज़ें लाद कर वह एक टापू में चला गया किन्तु उसकी रानी 'कंसी' ही में रह गई और उसने वड़े साहस से शत्रुओं से लड़ने का प्रवंध करना आरम्भ कर दिया। किन्तु जव उसे ज्ञात हुआ कि आक्रमणकारी, सौ आँखों वाला है तो उसे विश्वास हो गया कि इससे हम लोग नहीं जीत सकते क्योंकि उसके यहाँ के ज्योतिषियों ने ऐसा ही वतलाया था, तो उसने सारा देश किसी सोच विचार के विना 'वायां' को सौंप दिया। यह घटना सन् १२७६ ई० की है।

इस देश में जो लोग इतने ग़रीब हैं कि बच्चों का पालन नहीं कर सकते, वे बच्चा पैदा होने पर एक स्थान पर उसे छोड़ आते हैं। बादशाह उन्हें अपने पास मँगा लेता है और नजूमियों के बुला कर उनके भाग्य के बारे में पूछता है। इसके पश्चात् उनका पालन-पोषण सर्कारी खजाने से किया जाता है।

जब किसी धनिक पुरुष को संतान उत्पन्न नहीं होती तो वह बादशाह के पास जाकर प्रार्थना करता है कि उसे इतने बच्चे मिल जायें, बादशाह उसे उतने बच्चे दे देता है। जब ये बच्चे जवान हो जाते हैं तो बादशाह उनकी शादी कर देता है। शादी का सारा सामान वह अपने पास से देता है। बादशाह को हर साल ऐसे बीस हज़ार बच्चे मिल जाते हैं।

'शाह फ़गफ़ोर' बड़ा दयालु और दानी राजा था। उसकी दयालुता का एक छोटा उदाहरण यह है कि जब वह शहर में घूमने निकलता था और उसे बड़ी बड़ी, अट्टालिकाओं के बीच कोई साधारण मकान दिखलाई देता तो वह लोगों से पता लगाता कि वह मकान किसका है और क्यों ऐसी खराब हालत में है। लोग उससे कहते कि "मकान अमुक मनुष्य का है जो अपनी ग़रीबी के कारण इस मकान को भली भाँति दूसरे मकानों को तरह नहीं बनवा सकता।" यह सुनते ही बादशाह अपने पास से उन मकानों को अच्छी तरह बनवाने का पूरा खर्च दे देता। बादशाह की इस उदारता के कारण, राजधानी में कोई भी मकान बुरी हालत में नहीं रह गया था।

बादशाह न्यायपूर्वक शासन करता था। उसके देश में कोई बदमाश मनुष्य नहीं था। उसके सच्चे न्याय के कारण दूकानदार, दूकानों को सर्वदा खुला रखते थे। लोग अपने घरों में ताला नहीं लगाते थे।

'वायां' ने मलका को पकड़कर 'ख़ां आज़म' के सामने उपस्थित किया। 'ख़ां आज़म' ने उसका बड़ा आदर-सत्कार किया। शाह फ़ग़फोर फिर उस द्वीप से वापस नहीं आया—मरते दम तक वहीं रहा।

यहाँ से हम 'कोइगनजू' पहुँचे और फिर वहाँ से दूसरी ओर का रास्ता लिया।

'कोइगनजू'—इस देश में प्रवेश करने का पहला फाटक है। यहाँ के निवासी बुद्ध धर्म मानते हैं। यह शहर नदी के बिलकुल किनारे बसा हुआ है अतएव यहाँ बड़े ज़ोर-शोर से व्यापार होता है। नमक यहाँ बहुत होता है जो लगभग चालीस शहरों में व्यापार के लिये भेजा जाता है उसके कर (टैक्स) और बिक्री से बड़ी आय होती है जो 'ख़ां आज़म' के ख़ज़ाने में दाखिल की जाती है। यहाँ से दक्षिण पूर्व की ओर चलकर एक दिन में ऐसे स्थान पर पहुँचा जहाँ मीलों तक एक झील फैली हुई है और उसके बीच से पत्थर का एक रास्ता बना है। केवल यही एक रास्ता है जिस से लोग इण्डोचीन में प्रवेश कर सकते हैं।

इसे पार करके दिन भर और चलने पर 'पोकन' ('पाव-हंग हो') पहुँच गये। इस नगर के निवासी बुद्ध धर्म मानते हैं। ये लोग कागज़ी सिक्का अर्थात् नोट काम में लाते हैं। मुर्दों को गाड़ते हैं और जलाते भी हैं। व्यापारी अधिक हैं। यहाँ रेशम बहुत अधिक पैदा होता है। ये लोग रेशम और ज़रदोज़ी की सुंदर पोशाकें पहनते हैं। जीवन निर्वाह करने में काम आने वाली प्रायः सभी आवश्यक वस्तुएँ यहाँ मिल जाती हैं।

'पोकन' से आगे बढ़े । चलते चलते, 'कायू' (कादिउचू) में जा पहुँचे। यहाँ के रहने वाले भी बौद्ध हैं । अधिक लोग व्यापार करते हैं। मुरदों को गाड़ते हैं। शिकारी जानवर और पक्षी बहुत हैं। यहाँ के लोग मछलियाँ भी खाते हैं।

'कायू' से आगे एक दिन की यात्रा से ही 'तीजू' (तीचू) पहुँच जाते हैं । यद्यपि शहर बहुत बना और बड़ा नहीं है फिर भी प्रत्येक वस्तु अच्छे परिमाण में मिल जाती है। व्यापार खूब होता है । यहाँ से दक्षिण की ओर लगभग ३ तीन दिन की यात्रा पर समुद्र है। नगर और समुद्र के बीच की जमीन में इतना अधिक नमक पैदा होता है कि सारे देश के लिये काफ़ी हो सकता है। इस नमक से 'खां आज़म' को बड़ी आय होती है।

"'तीजू' से एक दिन की यात्रा के बाद दक्षिणपूर्व की ओर 'यांजू' (याँगचू) है। यह एक बड़ा शहर है। इसके अधीन सत्ताईस बड़े शहरों का प्रबन्ध है । यह शहर 'खां आज़म' के बारह बड़े सूबेदारों में से एक की राजधानी है । नोट प्रचलित हैं। निवासी बौद्ध हैं। मुझे (मार्को पोलो) भी तीन साल तक इसकी सूबेदारी करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था । यह प्रान्त बहुत उपजाऊ है। सौदागरों से माल पर कर लिया जाता है।"

'याजूं' के पश्चात् 'स्यानफ़ो' (स्यांग यांग फो) आता है। यह एक बड़ा आबाद शहर है। यहाँ बड़ी भारी व्यापारी मण्डी है और बारह नगरों के एक अधिकारी की राजधानी है। रेशम बहुत होता है। निवासी बौद्ध हैं ।

जब 'खां अज़म' की सेना सम्पूर्ण इण्डोचीन जीत कर यहाँ पहुँची तो इसे जीत न सकी क्योंकि इसके चारों ओर बल्लियों

गहरे पानी की एक झील है अतएव ३ तीन साल तक 'खां आज़म' की सेना को इसका घेरा करना पड़ा।

तीन साल बाद मैंने सेनापति से कहा कि "यदि तुम मानो तो मैं तुम्हें इस शहर को विजय करने का उपाय बताऊँ।" उस समय 'ख़ाँ आज़म' भी सेना में थे। सेनापति ने वचन दिया कि जो कहोगे वही किया जायगा। मैंने कहा कि बड़े-बड़े पत्थर क़िले के भीतर तोपों के द्वारा पहुँचाओ, उनके फटते ही किले वाले अधीनता स्वीकार कर लेंगे। यही किया गया। यह काम मेरे ही ज़िम्मे किया गया। मैंने अपने पिता तथा एक जर्मन साथी की सहायता से दो तीन लकड़ी के 'एञ्जिन' तैयार किये। पहले ३०० पौण्ड (३$\frac{3}{4}$ मन) वज़न के पत्थर भर कर क़िले में फ़ायर किये गये। ज्योंही पत्थर शहर में गिरे उनसे इमारतें टूटने फूटने लगीं। लोग घायल हो हो कर प्राण छोड़ने लगे। इससे सब लोग घबड़ा गये। वे इस आफ़त से बच नहीं सकते थे अतएव उन्होंने जल्द एक सभा करके निश्चय किया कि अधीनता स्वीकार कर लेनी चाहिए। एक आदमी को चुनकर कुछ शर्तों पर उन्होंने सन्धि करने की प्रार्थना के लिये भेजा। अन्त में उनकी प्रार्थना स्वीकृत हुई।

'यांचू' से १५ मील दक्षिणपूर्व जाने पर एक शहर मिलता है जिसका नाम 'संजू' (आज कल का 'आईचन') है। यह एक प्रसिद्ध नगर है। व्यापार के कारण यहाँ जहाज़ों का सदा जमघट रहता है। निवासी बौद्ध धर्म मानते हैं। नोट यहाँ भी चलते हैं।

यह शहर संसार की सबसे बड़ी नदी 'क्यान' (आज कल की 'यांग त्सीक्यांग') के किनारे बसा हुआ है जो कहीं-कहीं १० दस मील तक चौड़ी है।

'संजू' से दक्षिण पूर्व की ओर 'काचू' नगर बसा है। यह एक छोटा नगर है। इसके पास भी 'क्यान' नदी बहती है। इस नगर में इण्डोचीन से व्यापार के लिये बहुत अनाज आता है। इस शहर से 'ख़ाँ आज़म' की राजधानी तक बड़ी चौड़ी नहर* बनी है, जो झील, नालों और छोटी-छोटी नदियों को काटकर बनाई गई है। उसमें बड़े-बड़े जहाज़ चलाये जा सकते हैं। नहर के दोनों ओर नहर ही की मिट्टी से पुश्ते बाँधे गये हैं और इन पुश्तों को पीटकर उनपर सड़कें बना दी गई हैं। 'काचू' के सामने ही झील में एक छोटा टापू है जिसमें एक मठ बना हुआ है। इस मठ में बौद्ध धर्म के लगभग दो सौ भिक्षु—उपदेशक—एकांत वास करते हैं। इस मठ में चीनियों का एक बड़ा भारी पुस्तकालय† है। इस शहर की दूसरी दिशा में 'चनग्यानफ़ो' (चनक्यानफ़ो अथवा 'सिंगानफ़ो') नाम का नगर है।

यहाँ से आगे बढ़कर एक दूसरा शहर मिलता है जिसे 'सोजू'

---

* प्रसिद्ध इतिहासकार 'रशीदुद्दीन' के कथनानुसार यह नहर सं० १२८६ ई० में बनकर तैयार हो गई थी और 'ख़ाँ आज़म' की आज्ञा से बनाई गई थी। चूँकि राजधानी तक बाहर के सब आवश्यक सामान आसानी से नहीं पहुँच सकते थे इसलिए यह नहर निकाली गई थी। यह इतनी लम्बी है कि चालीस दिन में जहाज़ राजधानी तक पहुँचते हैं। उसके दोनों किनारों पर सरायें, दूकानें और मकान बने हुये हैं।

† इस पुस्तकालय पर अंगरेजों ने चीन की लड़ाई जीतने के बाद अधिकार कर लिया था और उसकी पुस्तकें यूरोप ले जाने का इरादा रखते थे किन्तु सन्धि हो जाने पर वह चीनियों को लौटा दिया गया। 'टपंकस' बादशाह ने १८६० ई० में उसे नष्ट कर दिया।

(आज कल का 'सोचू') कहते हैं। यह एक वड़ा शहर है। यहाँ रेशम वहुत होता है जिससे भाँति-भाँति के कपड़े वनाये जाते हैं।

यह नगर ६० मील के घेरे में वसा हुआ है और सम्पूर्ण देश में सव से वड़ा नगर है। इस शहर में ६० हजार पुल हैं! यहाँ वहुत से विद्वान और दार्शनिक हैं। शहर के आस पास अदरक वहुत होती है यहाँ तक की कभी-कभी दो ही तीन आने में वीस-वीस सेर मिल जाती है। इस शहर के अधीन सोलह व्यापारी मण्डियाँ हैं और पास ही 'कन्ती' नाम का एक नगर है। एक प्रकार से दोनों एक ही शहर के दो भाग हैं। 'सोचू' शव्द का अर्थ 'पृथ्वी' है और 'कन्ती' का 'आकाश'। ये दोनों नाम इन नगरों की महत्ता प्रकट करते हैं।

'सोचू' से एक दिन की यात्रा करने पर एक वड़ा नगर 'वूज़ू' (आज कल इसका नाम 'वूचू' है) पड़ता है, उससे और आगे 'वूग़न' पड़ता है (जिसे आज कल 'वूक्यान' के नाम से पुकारते हैं)। यहाँ रेशम वहुत अधिक होता है। इससे आगे वढ़ने पर 'चांगन' आता है। (जिसका नाम आज कल 'क्यानंग' है)।

इससे आगे एक हरे भरे मैदान में से होकर यात्रा करनी पड़ती है। तीन दिन की यात्रा के वाद 'कंसी' नगर पड़ता है जो इण्डोचीन की राजधानी है। यहाँ के निवासी वौद्ध हैं और व्यापार करते हैं।

यह शहर संसार के शहरों में सवसे वड़ा है। यह सौ मील के घेरे में वसा हुआ है। शहर में वारह हज़ार पुल हैं जिनके नीचे होकर वड़े-वड़े जहाज़ जा सकते हैं। नगर में दस्तकारों के वारह मुहल्ले हैं। हर मुहल्ले में वारह हजार घर और हर घर में १२ से लेकर २० आदमी तक हैं। इन आदमियों में मकान के स्वामी तथा उनके यहाँ काम करने वाले भी सम्मि-

-लित हैं। यहाँ की चीज़ें सम्पूर्ण देश की आवश्यकताओं की पूर्त्ति करने पर इतने अधिक परिमाण में बच जाती हैं कि विदेशों में भी भेजी जाती हैं।

इस शहर की दस्तकारी के माल का अनुमान करना जरा कठिन काम है। चाहे कोई कितना ही धनवान हो—शासन नीति के अनुसार वह बाप का पेशा करने पर मजबूर है किन्तु यदि वह चाहे तो स्वयं काम न करे—मज़दूरों से करावे।

शहर के मध्यभाग में एक झील तीस मील के घेरे में है उसके किनारे धनवानों के सुन्दर महल बने हुये हैं। तट पर मठों और मन्दिरों की भी कमी नहीं है। झील के भीतर दो द्वीप हैं और दोनों में दो महल बादशाहों के लिये बने हुये हैं। जब शहर का कोई मनुष्य विवाह अथवा दूसरे मौकों पर उत्सव आदि कराता है तो उसे इन महलों में उत्सव कराने की आज्ञा मिल जाती है। इन महलों में सुखपूर्वक जीवन बिताने योग्य सब सामान पाये जाते हैं। ये महल इतने बड़े हैं कि कभी कभी इनमें एक साथ सौ सौ—उत्सव (महफ़िल) होते हैं और जगह की कमी नहीं होती।

यहाँ के निवासी सुन्दर होते हैं और रेशमी वस्त्रों को पसन्द करते हैं। वे हर तरह का गोश्त खा लेते हैं—यहाँ तक कि निकृष्ठ श्रेणी के मनुष्य कुत्ते का भी नहीं छोड़ते। जब से यह नगर 'खाँ आज़म' के अधिकार में आया है तब से हर पुल पर दस आदमियों का गारद रहता है कि कोई विद्रोह अथवा षड़यन्त्र न कर सके। गारद की चौकी में घड़ी भी होती है और घंटे भी बजते हैं। घंटों की गिनती सवेरे से आरम्भ होती और शाम को समाप्त हो जाती है।

नियत समय के बाद किसी को घर से बाहर निकलने की आज्ञा नहीं हैं और दीपक जलाना भी अपराध है। यदि कोई नियत समय के बाद घर से बाहर पाया जाय या किसी के मकान में दीपक जलता दिखाई दे तो उसे सवेरे न्यायालय में उपस्थित किया जाता है। ठीक ठीक कारण नहीं बता सकता तो उसे दण्ड दिया जाता है। यदि उनमें कोई लँगड़ा लूला मनुष्य बाज़ार में चलता फिरता मिले तो उसे अनाथालय अथवा चिकित्सा-भवन में भेज दिया जाता है जहाँ उसकी चिकित्सा होती है और भोजन मिलता है। भोजनादि की व्यवस्था राज्य की ओर से है। यदि कोई हट्टा कट्टा, नीरोग और परिश्रम करने योग्य आदमी इधर उधर बेकार दिखाई देता है तो वह कोई काम करने को बाध्य किया जाता है। यदि शहर में कहीं आग लग जाये तो मकान के स्वामी के अतिरिक्त कोई वहाँ नहीं जाता, जहाँ, पहरे वाले जिनके ज़िम्मे आग बुझाने का काम रहता है, अवश्य जाते हैं और सब तरह से आग बुझाने तथा उसके माल की रक्षा करने का यत्न करते हैं। प्रायः माल को किश्तियों में भरकर अलग रख देते हैं तब आग बुझाते हैं।

शहर में एक ऊँचे स्थान पर एक मीनार बनी हुई है और उससे पीतल की मोटी और चौड़ी एक गोलाकार पट्टी लटकी हुई है। जिस समय शहर में कहीं आग लगती है तो पहरे वाला एक मुंगरी से उसे पीटने लगता है जिससे दूर दूर तक सब को यह बात मालूम हो जाती है।

शहर की सड़कें पक्की हैं और ईंट और पत्थरों के छोटे टुकड़ों से कूट कर बनाई गई हैं, इससे आदमियों के चलने तथा गाड़ियों के आने जाने में आसानी होती है। सड़क के इधर उधर शाही सवारों के लिये (जो घोड़ा दौड़ाते हुये जाते हैं) कच्चे रास्ते

बने हुये हैं। बड़ी बड़ी सड़कें इस ढंग से बनाई गई हैं कि दो समानान्तर सड़कें पक्की हैं और उनके बीच में एक पतली और कम चौड़ी नाली है जिससे वर्षा का सब पानी निकल जाता है और आगे जाकर नहर में गिरता है।

शहर में लगभग तीन हज़ार स्नानागार हैं जिनमें चश्मों से स्वच्छ और शुद्ध जल आता है। ये स्नानागार गर्म पानी के हैं। लोग उसमें स्नान करके आरोग्य लाभ करते हैं। एक एक स्नानागार इतना बड़ा है कि सौ सौ आदमी अच्छी तरह एक साथ स्नान कर सकते हैं। ये शायद संसार के सभी स्नानागारों से बड़े हैं।

शहर से लगभग पचीस मील के अन्तर पर समुद्र है जिसके किनारे शहर 'गानफ़ो' ('कानपू' अथवा 'कानफू') बसा है। यहाँ सैकड़ों जहाज़ हर समय मौजूद रहते हैं। ये जहाज़ भारतवर्ष और अन्य दूसरे देशों से माल ले आते और ले जाते हैं यहाँ से 'कांटन' तक एक चौड़ी नदी बहती है जिससे होकर वहाँ तक व्यापार होता है।

'इण्डोचीन' नौ भागों में विभक्त किया गया है और प्रत्येक सूबे के लिये एक 'नायब' नियत है। ये सब प्रान्तिक शासनकर्त्ता अपने अपने सूबे की सालाना रिपोर्ट 'खाँ आज़म' के पास भेजते हैं। 'कांटन' भी एक नायब का केन्द्रस्थल है जो बारह बड़े शहरों पर शासन करता है। कुल देश में क़स्बों और गाँवों के अतिरिक्त बारह सौ धनवान नगर हैं और इनमें से प्रत्येक में दस हज़ार से लेकर तीस हज़ार तक सेना रहती है। इन सेनाओं में कुछ तो लड़ने वाले सैनिक हैं और कुछ शहर की रक्षा—देख भाल करने वाले। सैनिकों में विषशेतः 'खता' देश के रहने वाले लोग हैं।

जब कोई बच्चा पैदा होता है तो उसकी उत्पत्ति का समय नक्षत्र इत्यादि लिख लिया जाता है। जब कोई मनुष्य यात्रा करना चाहता है तो किसी ज्योतिषी के पास जाकर इन बातों को बयान करता है। यदि ज्योतिषी कह दे कि यात्रा नहीं करनी चाहिये तो यात्रा की तिथि बदल दी जाती है। इन ज्योतिषियों की बातें प्राय: ठीक निकलती हैं।

यहाँ के निवासी मुरदों को जलाते हैं। यदि उनका कोई प्रिय व्यक्ति अथवा घनिष्ट मित्र मर जाता है तो वे सन के कपड़े पहन कर उसका शोक मनाते हैं। मुरदों के साथ तरह तरह के बाजे बजाते और गीत गाते जाते हैं और जब मरघट में पहुँचते हैं तो घोड़ों—गुलामों, लौंड़ियों, ऊँटों, कपड़ों, हथियारों तथा रुपयों की तसवीरें आग में जलाते हैं। उनका विश्वास है कि परलोक में मुरदों को इन वस्तुओं की आवश्यकता होती है और उनके साथ जलाई हुई चीजें उन्हें मिल जाती हैं।

इस शहर में उस बादशाह का (जो 'खाँ आज़म' से पहले यहाँ का स्वामी था) एक सुन्दर महल बना हुआ है। महल का घेरा दस मील है जिसके चारों ओर ऊँची चहारदीवारियाँ हैं। चहारदीवारियों के भीतर सुन्दर वाटिकाएँ और फव्वारे हैं। वाटिकाओं में फूलों के पौधे तथा नाना प्रकार के वृक्ष पंक्तिबद्ध लगाये गये हैं। स्थान स्थान पर झीलें भी हैं जिनमें लाल, सफ़ेद हरी मछलियाँ क्रीड़ा किया करती हैं। महल में बीस-बीस बड़े बड़े कमरे हैं। एक एक कमरा इतना बड़ा है कि एक साथ दो हज़ार आदमी बैठकर भोजन कर सकते हैं। इन कमरों के अतिरिक्त सैकड़ों छोटे छोटे कमरे हैं। सारे महल की दीवारों और छतों पर भिन्न भिन्न प्रकार के सुनहले रोगन किये हुए हैं। इन पर भाँति भाँति की चित्रकारी की गई है। दीवारों पर उस देश की

ऐतिहासिक घटनाएँ लिखी गई हैं तथा पशुओं, पक्षियों, वीर पुरुषों और सुन्दर स्त्रियों के चित्र बनाये गये हैं।

इस नगर में एक सौ साठ मुहल्ले हैं और हर एक मुहल्ले में लगभग दस हज़ार मकान हैं। कुल मकानों की संख्या पन्द्रह लाख के आसपास है।

यहाँ (इण्डोचीन) की यह रीति है कि प्रत्येक मनुष्य के मकान के दरवाज़े पर एक तख़्ती लगी रहती है जिसके ऊपर उसका—उसकी पत्नी—उसके बच्चों, लौंड़ियों तथा गुलामों के नाम तथा मवेशी की संख्या लिखी होती है। जो मर जाता है उसका नाम मिटा दिया जाता है और जो बच्चा पैदा होता है उसका नाम उस पर लिख दिया जाता है। इससे 'ख़ां आज़म' को कुल सूबे को जन संख्या मालूम हो जाती है।

शहर में जितने मुसाफ़िरख़ाने हैं उनके स्वामी, 'ख़ां आज़म' की आज्ञा के अनुसार यात्रियों के नाम (निवास स्थान, पिता का नाम, आने तथा जाने की तारीख के साथ) एक रजिस्टर में लिखते जाते हैं। इससे 'ख़ां आज़म' को मालूम होता रहता है कि अमुक स्थान पर कौन कौन आये हैं।

कांटन का वर्णन

यह शहर एक ऐसे स्थान पर बसा है जिसके एक ओर तो एक बड़ी झील है और दूसरी ओर एक नदी है जिससे कई नहरें निकाली गई हैं। सड़कें पक्की हैं। जलवायु स्वास्थ्य-वर्द्धक है।

शहर के एक ओर एक बड़ी नहर नदी से निकाली गई है। इस नहर को बनवाने का कारण यह है कि जब नदी में बाढ़ आवे तो उसका पानी नहर में कर दिया जाय, जिससे शहर को कुछ हानि न पहुँच सके। नहर की मिट्टी शहर के ओर वाले किनारे से लगा दी गई है जिससे शहर का बचाव होता रहे।

यद्यपि शहर के अन्य मुहल्लों में भी बाज़ार हैं किन्तु उस हिस्से में जो नहर के किनारे है—दस बड़े बाज़ार हैं जिनमें चालीस चलीस क़दम चौड़ी सड़कें बनी हुई हैं और पुलों को पार करती हुई शहर के एक सिरे से दूसरे सिरे तक चली गई हैं। प्रत्येक सड़क पर चार चार मील के अन्तर से दो दो मील के चौक हैं। बाज़ार की बड़ी सड़क के समानान्तर एक नहर है जिसके किनारे भारतवर्ष तथा अन्यान्य देशों के व्यापारियों के रहने के स्थान हैं। हर चौक पर सप्ताह में तीन दिन बाज़ार लगती है। जिसमें ४० से ५० हज़ार तक आदमी चीज़ें खरीदते हैं। बाज़ारों में तरक़ारियाँ और मेवे बहुत बिकते हैं। फल विशेषतः नाशपातियाँ पाँच पाँच सेर की होती हैं।

यहाँ अंगूर नहीं होते किन्तु बाहर से मँगाये जाते हैं और अँगूरी शराब भी बाहर से ही आती है। यहाँ वाले चावल और मसाले से एक प्रकार की शराब बनाते हैं जिसे वे अंगूरी शराब से भी अच्छा बताते हैं। बाज़ार में प्रतिदिन समुद्र से ताज़ी मछलियाँ आती हैं जिनको मछुये पकड़ते हैं।

बाज़ारों के चारों ओर ऊँचे मकान बने हुये हैं जिनके नीचे दूकानें हैं, उनमें सब तरह की चीज़ें बिकती हैं।

शहर में कुछ सड़कों पर मकानों में वेश्याएँ रहती हैं। ये वेश्याएँ सुन्दर और बहुमूल्य कपड़े पहनती हैं। ये गाने बजाने और नाचने में प्रवीण होती हैं और अपने हावभाव से बहुत जल्द लोगों को अपने पंजे में कर लेती हैं।

शहर की कई सड़कों पर दार्शनिक और ज्योतिषी रहते हैं। ज्योतिषी लोगों को लिखना पढ़ना भी सिखाते हैं। इन चौकों में दो दो सरकारी मकान बने हुये हैं जिनमें राजकीय अधिकारी रहते हैं जो व्यापारियों तथा सौदागरों के झगड़ों का फैसला करते हैं और पुलों पर के पहरेवालों की निगरानी करते तथा अनुपस्थित रहने पर उन्हें भी सज़ा देते हैं।

इस शहर की आबादी अगणित है अतएव खाने पीने में प्रतिदिन बहुत सामान खर्च होता है। केवल मिर्च एक सौ बीस मन प्रतिदिन व्यय होती है।

यहाँ के निवासी बड़े शिक्षा-प्रेमी हैं और शान्ति उन्हें पसंद है। वे हथियार बाँधना अथवा चलाना नहीं जानते और न अपने पास हथियार रखते ही हैं। वे आपस में लड़ते-झगड़ते नहीं और ईमानदारी तथा सच्चाई से व्यवहार करते हैं। आपस में एक दूसरे से प्रेम करते हैं। स्त्रियाँ पुरुषों से बड़े प्रेम के साथ

मिलती हैं। पुरुष, दूसरों से मिलने के कारण अपनी स्त्रियों पर किसी प्रकार का सन्देह नहीं करते। यदि कोई मनुष्य किसी विवाहिता स्त्री का सतीत्व भंग करना चाहता है तो उसे बेहया समझा जाता है। बाहरी व्यापारियों से यहाँ वाले बड़ी सज्जनता का व्यवहार करते हैं किन्तु वह सिपाहियों और विशेषतः 'खां आज़म' की सेना को घृणा की दृष्टि से देखते हैं क्योंकि उन्हीं के कारण वे अपने प्यारे बादशाह से अलग कर दिये गये।

झील में बहुत-सी किश्तियाँ पड़ी रहती हैं जिनमें १० से लेकर २० आदमी तक बैठ सकते हैं। जब कोई मनुष्य औरतों के साथ अथवा मरदों के साथ झील की सैर करना चाहता है तो एक किश्ती में सब लोग सवार हो जाते हैं। किश्ती में छत भी होती है। छत में भीतर की ओर तस्वीरें होती हैं तथा चित्रकारियाँ भी रहती हैं। छत के ऊपर बैठ कर भी किश्तियाँ चलाई जा सकती हैं। उनमें खिड़कियाँ और दर्वाज़े लगे रहते हैं तथा मेज़ और कुर्सियाँ पड़ी रहती हैं जिन पर बैठकर लोग खाते पीते, गप्प लड़ाते तथा हँसी मज़ाक़ करते हैं। किश्ती में से दोनों ओर के दृश्य दिखाई देते हैं।

यहाँ के लोग सैर करना बहुत पसंद करते हैं। वे अपना दिन भर का काम समाप्त करके संध्या समय अपने घर के लोगों अथवा अपने मित्रों के साथ या तो गाड़ियों में शहर की सैर करते अथवा किश्तियों में बैठकर झील में घूमते हैं।

जिस तरह किश्तियों में झील की सैर की जाती है उसी प्रकार गाड़ियों में (जिनमें ६ आदमी बैठ सकते हैं) बाग़ों की सैर की जाती है। बाग़ों में खीमे गड़े होते हैं जिनमें लोग ठहरते हैं। खाना खाते, घूमते और विश्राम करते हैं और फिर रात को अपने घर लौट जाते हैं।

महल का क्षेत्र तीन हिस्सों में विभक्त है जिनमें से बीच के हिस्से में एक ऊँचे दरवाजे से होकर प्रवेश करना पड़ता है जिसकी छत ऊँचे खम्भों पर रक्खी हुई है। इन खम्भों पर रंग करके सुनहली चित्रकारी की गई है तथा जगह जगह, नीलम जड़े हुये हैं। इस दरवाज़े के दोनों ओर खीमे खड़े किये गये हैं जिनके खम्भे नाना प्रकार की चित्रकारी से सुसज्जित तथा मणियों से जगमग जगमग करते हैं। दीवारों पर उस देश के बादशाह से सम्बन्ध रखने वाली घटनाओं और कहानियों के चित्र बने हैं। दरवाज़े के सामने ही सब से बड़ा खीमा है।

जब 'फ़ग़फ़ोर' यहाँ का बादशाह था तो वह मुख्य मुख्य त्योहारों को 'काँटन' के रईसों और अपने दरबारियों तथा सरदारों को निमंत्रण दिया करता था। उस समय ये खीमे बड़ा काम देते थे क्योंकि एक एक खीमे में दस दस हज़ार आदमी खाना खा सकते तथा ठहर सकते हैं। एक एक मेला दस दस बारह बारह दिन तक रहता है। जितने लोग उसमें सम्मिलित होते हैं, बहुमूल्य कपड़े पहनते हैं। कपड़े प्रायः रेशमी होते हैं जिसमें रत्नादि टँके रहते हैं। प्रत्येक मनुष्य की पोशाक बड़ी मूल्यवान होती है क्योंकि वह दूसरे को नीचा दिखाना चाहता है। बड़े खीमे के पोछे एक ऊँची दीवार है जिसको पार कर एक रास्ते के द्वारा महल के घेरे में प्रवेश करते हैं। महल में बहुत से कमरे हैं जिनकी दीवारों पर बहुत सुन्दर बेल बूटे काढ़े गये हैं। इस महल से ६ फ़ीट चौड़ा एक पक्का रास्ता झील के किनारे तक जाता है। इस रास्ते के दोनों ओर छोटे छोटे दस महल बने हुये हैं और हर एक में पचास पचास कमरे हैं और एक एक उपवन है।

अहाते के शेष भाग में वाटिकाएँ, झीलें तथा कुंजें हैं जिनमें मेवों के वृक्ष लगाये गये हैं और हिरन, ख़रगोश तथा नील गाय

इत्यादि पाले गये हैं। 'फग़फ़ूर, कुँवारी और सुन्दर युवती स्त्रियों को लेकर प्रायः इन वाटिकाओं की सैर करने जाया करता था उस समय वहाँ कोई भी न जा सकता था। कभी बादशाह इन सुन्दरी युवतियों को कुत्तों के साथ शिकार में दौड़ाता था। जब वे दौड़ते दौड़ते थक जातीं तो घने कुंजों में छिप जाती थीं और वहाँ कपड़े उतार कर बाहर नंगी निकलतीं; झील में तैरती तथा जल क्रीड़ा करती थीं। बादशाह उस दृश्य से अपना मन प्रसन्न करता। कुछ देर बाद वह उन्हें साथ लेकर महल में चला जाता अथवा कुंजों में भोजनादि करके उनके साथ रंगरेलियाँ करता था। सभ्यता का वह कुछ विचार न करता था। इन बातों का फल यह हुआ कि उसमें नामर्दी और कायरता आ गई और 'ख़ाँ आज़म' ने उसका राज्य छीन लिया। बड़ा सीमा या गुम्बद तो अब तक मौजूद है किन्तु कुंज और वाटिकायें उजड़ गई हैं। महल टूटी फूटी अवस्था में हैं। अब न तो वे जानवर हैं, न मेवे के वृक्ष।

इस शहर की व्यापार सम्बन्धी वस्तुओं के कर (टैक्स) से अच्छी आय होती है। यहाँ नमक बहुत अधिक पैदा होता है। जिससे बहुत आमदनी होती है। ८० 'तमान' नमक पैदा होता है। एक 'तमान' का मूल्य सत्तर हज़ार 'सिगी' है। कुल नमक का मूल्य छप्पन लाख सिगी होता है। हिन्दुस्तानी सिक्के में इसका मूल्य लगभग १३१६६६६५ रुपये के है। यह प्रदेश समुद्र से मिला हुआ है जिसके किनारे नमक की बहुत-सी झीलें हैं जो गरमी में सूख जाती हैं और उनके तल में नमक की तह जम जाती है।

नमक के अतिरिक्त शक्कर से भी बड़ी आय होती है क्योंकि 'इण्डोचीन' के सब प्रान्त में शक्कर बहुत बनाई जाती है।

मसाले पर ३ $\frac{1}{3}$ प्रतिशत कर लिया जाता है और लगभग इसी हिसाब से व्यापार की अन्य वस्तुओं पर भी किन्तु जो चीज़ें समुद्र में पैदा होती है अथवा हिन्दुस्तान एवं अच्छे देशों से आती हैं उन पर १० प्रतिशत कर लिया जाता है। रेशम एवं कई और चीज़ों पर भी १० ही प्रतिशत महसूल लिया जाता है।

हिसाब से पता चलता है कि इण्डोचीन के नवें हिस्से से १४७००००० सिगी कर निकलता है। इससे प्रकट होता है कि कुल देश की आय बहुत अधिक होगी।

इण्डोचीन के अन्य नगर

इस शहर से दक्षिण पूर्व एक दिन की यात्रा के पश्चात् 'तापनीज़ू' ('शावहंग') नगर आता है। यहाँ काग़ज़ के नोट चलते हैं। लोग बौद्ध धर्मानुयायी हैं। वे मुर्दों को जलाते हैं। व्यापारियों और कारीगरों की अधिकता है। पैदावार अच्छी होती है।

'तापनीज़ू' से ३ दिन तक बराबर चलने के बाद 'वूजू' ('वूचू') पड़ता है और उसके आगे दो दिन की यात्रा पर 'गीजू' (आजकल इसका नाम 'क्यूचू' है) स्थित है। यहाँ रेशम बहुत पैदा होता है। बाँस दो दो हाथ मोटे होते हैं।

'गीजू' से आगे बढ़ने पर हरे भरे मैदान, जंगल, झीलें तथा झरने मिलते हैं। पशुओं और सुन्दर पक्षियों से यह भाग भरा हुआ है। चार दिन के बाद 'चंगशाँ' आता है। यह एक पहाड़ी के ऊपर (जो 'तसंगातंग' नदी को दो टुकड़े कर देती है), बसा हुआ है।

सम्पूर्ण इण्डोचीन में भेड़ें नहीं पाई जातीं यद्यपि गाय, बैल और बकरियों की अधिकता है।

'चंगशाँ' से तीन दिन की यात्रा पर 'कोजू' पहुँचते हैं। 'कोजू' से ६ दिन तक और आगे चलने पर 'फूजू' पहुँचते हैं। यहाँ अदरक इतनी अधिक होती है कि एक 'करवत' (पौने तीन आने के मूल्य का एक चीनी सिक्का) में एक मन बिकती है। एक

और चीज़ भी पैदा होती है जो केसर की तरह होती है और केसर ही के स्थान पर काम आती है।

यहाँ कुछ लोग ऐसे भी हैं जो सब प्रकार की राक्षसी वस्तुएं खा जाते हैं, यहाँ तक मनुष्य का माँस भी, परन्तु ऐसे मनुष्य का जो रोगी हो कर न मरा हो।

इस देश के निवासी बिल्कुल जंगली और असभ्य हैं। वे जब किसी लड़ाई पर जाते हैं तो सर के अगले हिस्से के बाल मुँड़ा देते हैं और उस पर नीला रंग लगाते हैं। हाथों में बरछियाँ और तलवारें लिये हुए पैदल जाते हैं। केवल सेनानायक सवारी में जाता है। वे मनुष्यों को क़त्ल करते, उनका खून पीते और गोस्त खाते हुए जाते हैं।

तीन दिन कि यात्रा के बाद 'केलंगफ़ो' जा पहुँचते हैं। इस शहर में तीन पक्के और मज़बूत पुल बने हुए हैं जो दर्शनीय हैं। प्रत्येक पुल एक मील लम्बा और नौ क़दम चौड़ा है और उसकी शोभा संगमर्मर के खम्भों से और भी बढ़ गई है।

यहाँ एक विशेष प्रकार का पक्षी होता है। जिसे पर के स्थान पर बड़े बड़े बाल होते हैं और रंग काला होता है।

१५ मील और आगे बढ़ने पर 'उनकन' नगर है जिसमें शक्कर बहुत बनती है।

'फ़ूजू'—'चोंका' सूबे का केन्द्रस्थल है। यहाँ बहुत अधिक व्यापार होता है। निवासी बौद्ध हैं। शान्ति रखने के लिये यहाँ बहुत बड़ी सेना रहती है क्योंकि बलवे का डर लगा रहता है। नगर के बीच में होकर एक बड़ी नदी बहती है। यहाँ शक्कर के कारखाने हैं। बहुमूल्य रत्नों और मोतियों का व्यापार यहाँ बहुत अधिक होता है।

यह नगर 'ज़ैतून' बन्दरगाह के समीप स्थित है। यहाँ का दृश्य बड़ा सुन्दर है।

'फूज' से ५ दिन की यात्रा के बाद 'ज़ैतून' पहुँच जाते हैं। वह एक बड़ा व्यापारी बन्दरगाह है। यहाँ भारतवर्ष तथा अन्य देशों से व्यापार की चीज़ें आती हैं। लाल मिर्च के सैकड़ों जहाज़ बन्दरगाह पर पड़े रहते हैं। यह बन्दरगाह संसार के दो बड़े व्यापारी बन्दरों में से एक है।

इस शहर से बड़ी आय होती है क्योंकि रत्नादि पर दश प्रतिशत चुंगी देनी पड़ती है। छोटी छोटी वस्तुओं पर तीस, मिर्च पर चौआलीस तथा अन्य वस्तुओं पर चालीस। इससे मालूम होता है कि सौदागारों को प्रायः आधी चुंगी देनी पड़ती है। इतने पर भी उन्हें बहुत लाभ होता है।

जापान

यात्री तथा व्यापारी लोग 'चोंका' से भारत को जहाज़ों में जाते हैं जो सनोवर की लकड़ी के बनाये जाते हैं। उनमें ५० अथवा ६० कोठरियाँ होती हैं। जहाज़ों में एक पतवार होता है और चार मस्तूल। किसी किसी में दो मस्तूल और भी होते हैं जिन्हें जब चाहते हैं चढ़ा लेते हैं और जब चाहते हैं उतार देते हैं।

प्रत्येक जहाज़ में २०० मल्लाह होते हैं और किसी किसी में इनकी संख्या ३०० तक भी हो जाती है। जहाज़ बहुत लम्बे चौड़े होते हैं। एक जहाज़ में पाँच हज़ार अथवा छः हज़ार टोकरे मिरचे के होते हैं। जब हवा बन्द हो जाती है तो बहुत से छोटे छोटे पतवारों के सहारे जहाज़ चलाये जाते हैं तब भी पतवार इतने बड़े और भारी होते हैं कि एक एक को चार चार पाँच पाँच मल्लाह चलाते हैं। प्रत्येक जहाज़ के साथ कुछ डोंगियाँ होती हैं जिनमें मिरचे के एक हज़ार टोकरे लादे जाते हैं। डोंगियाँ इतनी बड़ी होती हैं कि प्रत्येक में ५० अथवा ६० और किसी किसी में ८० अथवा १०० मल्लाह होते हैं। ये डोंगियाँ भी पतवारों ही से चलाई जाती हैं और जहाज़ को आगे बढ़ने में सहायता देती हैं। प्रत्येक बड़े जहाज़ के साथ दस छोटी डोंगियाँ मछलियाँ पकड़ने, खाद्यपदार्थों के लाने, माल डालने और लंगर डालने में सहायता करने के लिये रखी जाती हैं।

जहाज़ों की मरम्मत हर साल की जाती है और उन पर एक नया तख़्ता जड़ दिया जाता है। इसी तरह कई वर्षों तक मरम्मत होती है किन्तु जब जहाज़ में छः तख़्ते हो जाते हैं तो वह समुद्र में नहीं चलाया जाता वरन् तट के समीप काम में लाया जाता है। कुछ दिन इस तरह काम में लाने के बाद वह तोड़ डाला जाता है।

चीन से भारतवर्ष को समुद्र से यात्रा करते समय रास्ते में बहुत से द्वीप पड़ते हैं। इनमें सब से बड़ा और प्रसिद्ध 'चीपानगफ़ो×' जापान है। यहाँ के रहने वाले बौद्ध हैं। वे सभ्य और धनवान हैं। यह देश स्वतंत्र है। यहाँ सोना बहुत अधिक होता है। यहाँ के बादशाह की आज्ञा है कि सोना देश से बाहर न जाये।

बादशाह के महल पर सोने की छत डाली गई है जैसी यूरोप में गिर्जों के ऊपर शीशे की छत होती है। महल का फ़र्श भी सुनहला है जो दो अंगुल मोटा है। उसमें खिड़कियाँ भी सोने ही की लगाई गई हैं। इस महल की लागत का अनुमान करना कठिन है।

इस देश में मुरदों को जलाते भी हैं और गाड़ते भी। यदि जलाते हैं तो उसके मुँह में एक मोती रख दिया जाता है।

× 'जापान' का असली नाम 'ज़ीपान को दी' था। चीनियों ने उसे 'चीपानगफ़ो' कर लिया, रशीदुद्दीन ने भी जापान का नाम 'चीपानगफ़ो' लिखा है। 'ज़ीपान' शब्द जिससे 'निपन' अथवा 'निफ़न' निकला है— पहले प्रचलित था। 'जापान' शब्द 'मलायान' भाषा के 'जापान' अथवा 'जापांग' शब्द से बिगड़ कर बना है। 'निपन' अथवा 'निफ़न' शब्द का अर्थ 'सूर्य निकलने की जगह' है।

'खाँ आज़म' ने जब जापान के इतने धनवान होने का हाल सुना तो उसने अपने दो वीर सेनानायकों को बड़ी बड़ी सेनाओं के साथ उसे विजय करने के लिये भेजा। इन दोनों सेनाध्यक्षों के नाम 'अया खाँ' और 'वोसिन चंग'† थे।

इन दोनों में परस्पर गहरी शत्रुता थी और एक दूसरे की सहायता नहीं करना चाहते थे। जब वे जापान के समुद्र तट पर ठहरे थे तब एक बड़ा तूफ़ान आया। ऐसी जोर की आँधी चली कि जहाज़ रुक न सके। यह देखकर दोनों की आज्ञा के अनुसार सब लोग जहाजों में बैठ गये और उनके लंगर उठा दिये किन्तु जब चार मील के लगभग आगे निकल गये तो उन्हें एक छोटा द्वीप मिला। यहाँ हवा इतनी तेज़ होगई कि बचाने का कितना ही प्रयत्न किया गया किन्तु सब जहाज़ उससे जा टकराये। बहुत आदमी नाश हो गये। सेना की सेना डूब मरी। केवल तीस हज़ार आदमी किसी तरह किनारे पर पहुँच सके जिन्होंने भागकर उस द्वीप में शरण ली किन्तु वह द्वीप बिलकुल ही उजाड़ था अतएव उसमें जाकर भी वे अपने को मौत के मुँह में समझने लगे। एक सेनापति मर गया—दूसरा जो बच रहा अपने कुछ साथियों को जहाज़ पर बिठाकर चलता बना। उसने, और लोगों की कुछ खबर न ली।

जब जापान के बादशाह को यह समाचार पहुँचा कि तातारियों का एक हिस्सा द्वीप में रह गया है और बड़ी बुरी अवस्था में है तथा अपने देश को लौट जाने का उन्हें कोई रास्ता नहीं है तो वह अपनी सेना लेकर उन्हें क़त्ल करने के लिये वहाँ जा पहुँचा।

---

†'वोसिन चंग' अथवा 'वोसिचंन' के दूसरे नाम 'संगोन' और 'वांतसपांग कीवुन' भी हैं।

जब जापानी सेना द्वीप में घुसी तो तातारियों ने सामना नहीं किया और भाग निकले। आगे-आगे वे भागे जाते थे और जापानी सेना उनका पीछा करती हुई थोड़ी दूर पर आ रही थी। चक्कर लगाते-लगाते सब तातारी समुद्र के किनारे जा पहुँचे जहाँ जापानियों के जहाज़ लंगर डाले हुए थे। वे झट डोंगियों में जो किनारे बँधी थी सवार हुए और जापानियों के जहाजों पर झट जा पहुँचे। पहुँचते ही उन्होंने लंगर उठा दिये और वहाँ से चल निकले और इस तरह उन्होंने अपनी जानें बचा लीं किन्तु वे अपने देश को न गये वरन् सीधे जापान चले आये। वहाँ पहुँच कर बादशाह तथा सेना की अनुपस्थिति में उन्होंने शहर पर अपना अधिकार कर लिया।

बड़ी कठिनतापूर्वक बचे हुए जहाजों की सहायता से बादशाह राजधानी तक पहुँच सका। वहाँ पहुँच कर एक बड़ी सेना के द्वारा उसने इस तरह शहर को घेर लिया कि कोई आदमी न तो भीतर जा सकता था और न बाहर निकल सकता था। तातारी भूक से मरने लगे क्योंकि उन्हें मालूम न था कि कौन चीज़ कहाँ मिल सकती है। ऐसे ही समय अपने बादशाह को आया देख शहर के निवासी भी बिगड़ गये। अन्त में जब कोई चारा न चला तो तातारियों ने क्षमा माँगते हुए अपने प्राणों की भिक्षा माँगी। बादशाह ने उनकी प्रार्थना स्वीकार करली किन्तु फिर वे जापान ही में रहने लगे। यह घटना सन् १२७९* ई० की है।

---

*'मि० गोवल', 'डेभीला' तथा 'पोथर' के लिखे हुए चीन के इतिहास से विदित होता है कि 'खां आज़म' ने पहली बार सन् १२६६ ई० में जापान विजय की कामना से एक सेना भेजी किन्तु उसे सफलता न हुई। इसके पश्चात् १२६८, १२६९, १२७० तथा १२७१ ई० में भी उसे

'ख़ाँ आज़म' ने उस सेनापति का सर कटवा डाला, जो दूसरे सेनाध्यक्ष को उसके आदमियों सहित संकट में छोड़कर चला आया था।

इस जापान युद्ध के सम्बन्ध में एक विचित्र घटना यह है कि जब तातारी उस द्वीप में उतरे तो उन्होंने एक मीनार में आठ आदमी पाये जिन्हें वे हथियार चलाकर भी न मार सके क्योंकि उनकी खाल के भीतर एक प्रकार का पत्थर* था जिसके कारण उनपर हथियार चल ही न सकते थे विशेषतः फ़ौलादी हथियारों के वार का उसके कारण कुछ प्रभाव न पड़ता था। जब सेनापतियों को यह बात ज्ञात हुई तो उन्होंने उन्हें लाठियों से मारा और जब

विफल मनोरथ होना पड़ा। सन् १२७४ ई० में उसने ३०० जहाज़ और पन्द्रह हज़ार फौज़ रवाना की किन्तु इस बार भी पहले ही की सी दशा रही। इसके पश्चात् भी उसने कई बार प्रयत्न किया किन्तु हरबार उसे असफलता ही हुई और बराबर हारता गया। यहाँ तक कि सन् १२८३ ई० की लड़ाई के बाद उसने इस इरादे को एकदम छोड़ दिया।

*उन देशों और द्वीपों में (जो भारतवर्ष और जापान तथा चीन के बीच में हैं)—यह रीति प्रचलित है। ब्रह्मा के लोग जान बचाने के लिये अपनी खाल के भीतर सोने के टुकड़े अथवा एक विशेष प्रकार का पत्थर रख लेते हैं। ऐसे टुकड़े और पत्थर बंगाल की 'रायल एशियाटिक सुसाइटी' की बैठक में १८६८ ई० में उपस्थित किये गये थे जो 'एण्डमन' द्वीप में एक ब्रह्म देशवासी अपराधी की खाल चीरकर निकाले गये थे। 'फ्रायर उडरक' के कथनानुसार 'बोर्नियो' में भी यह रीति पाई जाती थी। मि० कौरडी लिखते हैं कि 'यह रीति जावा में भी प्रचलित थी'। यह पत्थर विशेषतः साँपों तथा कुछ विशेष प्रकार के जीवों के शरीर से निकाला जाता है। उसके प्रभाव से घाव नहीं होता।

उनका दम निकल गया तो उस पत्थर की खाल चिरवा कर निकलवा लिया।

जापान में उसी प्रकार की मूर्त्तियाँ पाई जाती हैं जैसी 'ख़ता' तथा इण्डोचीन में बहुतों के सर, बैल, सुअर, कुत्ते अथवा भेड़ की भाँति होते हैं। किसी किसी के ४ अथवा ३ सर होते हैं और ३ से लेकर १० हाथ तक होते हैं। बहुतेरी मूर्त्तियों को हज़ार हाथ होते हैं। उनपर लोगों का अधिक विश्वास होता है। इनकी मनौतियाँ मानकर बहुत सी इच्छायें पूरी की जाती हैं।

इस द्वीप में एक विचित्र रीति है कि यदि वन्दी शत्रु, छोड़ने के लिये ज़मानत के रुपये नहीं दे सकता तो वहाँ के लोग अपने सम्बन्धियों और मित्रों को इकट्ठा करके उसे बकरे की भाँति काटते हैं और उसका मांस बड़ी प्रसन्नता के साथ खाते हैं। उनका कथन है कि ऐसे गोश्त से अधिक स्वादिष्ट और कोई गोश्त नहीं होता।

यह द्वीप चीन सागर में है। चीन सागर में लगभग साढ़े सात (७४५९) हज़ार द्वीप हैं। इस सागर में ६ महीने तक हवा एक ओर से चलती है और छः महीने तक दूसरी ओर से।

चम्बा

ज़ापान के बाद फिर 'जैतून' लौटिए। यहाँ से बड़ी लम्बी यात्रा के पश्चात् चम्बा देश (आज कल 'कोचन चीन') में प्रवेश करते हैं। यह एक उपजाऊ, सुन्दर, हरा भरा देश है। यहाँ का बादशाह 'ख़ाँ आज़म' का मित्र है और वह उपहार में 'ख़ाँ आज़म' को प्रायः हाथी दिया करता है।

'ख़ाँ आज़म' ने १२७८ ई० में अपने एक सेनापति †'सगाटो' को इस देश को विजय करने के लिये रवाना किया। चम्बा के बादशाह का नाम 'अकम्बाल'* था। उसके पास इतनी सेना नहीं थी कि वह 'ख़ां आजम' की सेना का सामना कर सकता। 'ख़ां आजम' के भेजे हुए सेनापति 'सगाटू' से अपनी प्रजा की हानि होते देख उसने 'ख़ां आजम' के पास दूत भेजकर यह प्रार्थना की कि "मैं वृद्ध हूँ—शान्तिपूर्वक राज्य करके मैंने सारी आयु बिताई है। अब मैं लड़ाई झगड़ा करना नहीं चाहता—मैं तुम्हारा मित्र होकर रहूँगा और उपहार में मैं हाथी दिया करूँगा। सेनापति को बुला लो।"

'ख़ां आजम' ने प्रार्थना स्वीकार कर ली और सेनापति को वहाँ से हटाकर दूसरी जगह भेज दिया। तब से 'अकम्बाल' प्रति-वर्ष बीस चुने हुए हाथी उपहार स्वरूप 'ख़ां आजम' को देता है।

इस देश में यह एक विचित्र रीति प्रचलित है कि कोई स्त्री जब तक उसे बादशाह न देख ले, शादी नहीं करने पाती। यदि

---

†चीन के इतिहास में इसका नाम 'साटो' पाया जाता है।

* चीन के इतिहास में 'सहनुपाल' नाम पाया जाता है।

वह बादशाह को पसंद आ जाती है तो वह उसे अपने महल में रख लेता है अन्यथा बहुत सा धन देकर किसी अच्छे मनुष्य से—जिसे वह पसंद करती है अथवा उसके घर वाले राय देते हैं—शादी करा देता है।

इस देश में† हाथी बहुत पाये जाते हैं। देश बोनस‡ के जंगलों से पटा पड़ा है। बोनस की लकड़ी से अच्छे क़लमदान बनाये जाते हैं। यहाँ के निवासी बौद्धधर्म मानते हैं।

जावा द्वीप

चम्बा से लगभग पंद्रह सौ मील की यात्रा के पश्चात् जावा द्वीप पड़ता है। यह एक बड़ा द्वीप है और इसकी परिधि लगभग तीन हजार मील है। निवासी बौद्ध हैं। इसमें मसाले, जटामाशी, लौंग, मिर्च इत्यादि वस्तुएँ अच्छे परिमाण में उत्पन्न होती हैं।

इस द्वीप में व्यापारियों के जहाज प्रायः आया जाया करते हैं। व्यापारियों को इन वस्तुओं के व्यापार से ख़ूब लाभ होता है।

---

† मि० पाथर के लेखानुसार मार्कोपोलो इस देश में १२८० ई० में गया था। 'रोचीसो' का भी यही मत है। किन्तु इस यात्रा विवरण के सरकारी अनुवाद से प्रकट होता है कि वह १२८५ ई० में गया। 'लातीनी' भाषा के एक भूगोल से मालूम होता है कि वह १२८८ ई० में गया था। हमें अन्तिम तिथि ठीक जान पड़ती है क्योंकि मार्कोपोलो हिन्द महासागर की किसी यात्रा से १२९० ई० में 'ख़ां आज़म' के दरबार में पहुँचा था। संभव है कि इस यात्रा में वह चम्बा गया हो।

‡ यह शब्द फ़ारसी के 'आबनूस' शब्द का रूप है जिसे स्पेन की भाषा में 'अबीनज़' (Abenuz) और फ्रेंच भाषा में 'अबीनू' (Abenus) कहते हैं।

अन्य द्वीप

चम्बा से दक्षिण की ओर चलकर फिर ७०० मील की यात्रा करने के पश्चात् दो टापू पड़ते हैं। उनमें से एक बड़ा और दूसरा छोटा है। बड़े का नाम 'सोंदुर' और छोटे का 'कोंदुर'§ है। 'सोंदुर' से ५०० मील की यात्रा करने पर 'लोकाक'× आता है जो एक उत्तम और उपजाऊ देश है। यह देश किसी के अधीन नहीं। निवासी बुद्धधर्म मानते हैं। उनकी भाषा बड़ी विचित्र है। यह देश ऐसी जगह पर स्थित है कि इसे कोई विजय नहीं कर सकता।

इस देश में सोना बहुत होता है। हाथियों तथा अन्यान्य जंगली जानवरों की भी अधिकता है। यहाँ कौड़ियाँ भी चलती हैं। यह देश आबाद नहीं है।

'लेकाक' से पाँच सौ मील दक्षिण की ओर एक द्वीप है जिसे '[1]प्रेटम' कहते हैं। यहाँ के प्रायः सभी वृक्ष सुगन्धिपूर्ण

---

§ आजकल इन दोनों द्वीपों को 'कोंदूर' (Kondor) नाम से पुकारते हैं। नवीं शताब्दी में अरब वाले इसे 'सुँदुर फ़लूत' कहते थे। 'फ़लूत' द्वीपार्थवाची है।

× 'लोकाक' वास्तव में 'ल्वेक' है। इस नाम से सोलहवीं शताब्दी के इतिहासकार 'कम्बोजों' को याद करते थे जो 'श्याम' देश का एक हिस्सा है और श्याम की खाड़ी के पास स्थित है।

[1] प्रेटम—वास्तव में यह 'बनटंग' अथवा 'बटियान' है।

होते हैं। नव्बे मील की दूर पर 'मोलर' (मलक्का) देश है। यह देश स्वतंत्र है। मसाले की पैदावार खूब होती है।

'प्रेटम' से सौ मील पर '[1]छोटाजावा' द्वीप है। जिसकी परिधि दो हजार मील से भी अधिक है। इस द्वीप के आठ भागी हैं जिनमें आठ शासक शासन करते हैं और प्रत्येक विभाग की भाषा अलग अलग है। यहाँ के निवासी अपने को बुद्ध धर्म का अनुयायी बताते हैं। इस द्वीप में जटामासी तथा हर तरह के मसाले पैदा होते हैं।

इसके एक राज्य का नाम '[2]फ़र्लिक' (Ferlic) है। देश का बहुत सा भाग पहाड़ी है। देहातों के निवासी इतने असभ्य और जंगली हैं कि मनुष्य का मांस भी खाजाते हैं। सवेरे उठने पर जो वस्तु उन्हें सबसे पहले दिखाई देती है उसकी वह दिन भर उपासना करते हैं। उनको 'बट्टा' कहते हैं।

दूसरे राज्य का नाम '[3]बसमा' है। यह भी एक स्वतंत्र राज्य है। यहाँ के लोगों की भाषा बड़ी विचित्र है। इनमें न तो कोई धर्म है न कोई नियम। वे निरे जंगली हैं। इस देश में हाथी और गैंडे बहुत हैं। गैंडा जब किसी से अप्रसन्न हो जाता है तो उसे

---

१ छोटा जावा-अरबवाले सुमात्रा को इसी नाम से पुकारते थे। अबुलफ़िदा और इब्न बतूता ने भी सुमात्रा का यही नाम लिखा है।

२ 'फ़रलक'—रशीदुद्दीन ने इसे 'बारलक' लिखा है किन्तु वास्तविक नाम 'परलक' है यह सुमात्रा के उत्तर पूर्व में है।

३ बसमा—वास्तव में इस देश का नाम 'पाराई' है। पोर्तुगीज़ उसे 'पासीम' लिखते हैं। उनसे यह नाम अरब वालों ने सीखा और 'बासम' कहने लगे।

घुटनों में दबाकर और जिह्वा से रगड़कर मार डालता है। अनेक प्रकार के बन्दर और बाज़ इस देश में पाये जाते हैं। यूरोप के लोग यहाँ से एक प्रकार के बन्दर ले जाते हैं। ये बन्दर छोटे होते हैं और मनुष्यों की आकृति से मिलते जुलते हैं। इन्हें पकड़ कर यूरोपियन लोग डाढ़ी तथा छाती के बालों को छोड़ सब बाल उखाड़ डालते हैं और फिर उनके ऊपर केसर का लेप करते हैं। कुछ दिनों बाद उनकी आकृति में बहुत अन्तर पड़ जाता है और आदमियों से उनकी शक्ल बहुत मिलती जुलती हो जाती है।

'बसमा' से आगे बढ़ने पर 'मुख्य सुमात्रा' नामक खण्ड पड़ता है। यहाँ से ध्रुवतारा नहीं दिखाई देता। यहाँ के निवासी बौद्ध हैं। उनका एक राजा है। यहाँ ऐसी अच्छी मछलियाँ उत्पन्न होती हैं कि वैसी दुनियाँ भर में नहीं मिलतीं। गेहूँ बिलकुल ही पैदा नहीं होता। अतएव लोग चावल और मछलियों पर निर्वाह करते हैं। ये लोग एक [1]वृक्ष से शराब निकालते हैं। ये वृक्ष लम्बे और खजूर के से होते हैं। जब उन्हें शराब की आवश्यकता पड़ती है तो उस वृक्ष की एक शाखा तराश कर उससे एक छोटा घड़ा बांध देते हैं जो एक वा दो दिनों में अर्क़ से भर जाता है। यह अर्क़ शराब की जगह काम में लाया जाता है। वह बहुत स्वादिष्ट होता है और खूब नशा करता है। इस शराब से शायद जलन्धर रोग के रोगी अच्छे हो जाते हैं।

यहाँ नारियल के वृक्ष भी होते हैं जिसमें मनुष्य के सर के बराबर बड़े नारियल लगते हैं। उसकी गिरी खाई जाती है जो

---

१ यह वृक्ष सम्भवतः ताड़ है। भारतवर्ष में अभी तक इस ढंग से ताड़ से शराब निकाली जाती है जिसे 'ताड़ी' कहते हैं।

बहुत स्वादिष्ट होती हैं और पानी जो गरी के भीतर होता है बहुत मीठा होता है लोग उसे बड़े चाव से पीते हैं।

इससे आगे बढ़ने पर 'वागरवीन'[1] आता है। यहाँ के निवासी बौद्ध हैं। इनमें एक विचित्र रीति प्रचलित है। जब कोई आदमी बीमार पड़ता है तो उसके सम्बन्धीगण जादूगरों से पूछते हैं कि वह अच्छा हो जायगा वा नहीं। यदि वे कहते हैं कि अच्छा हो जायगा तो उसे छोड़ देते हैं अन्यथा ('अच्छा न होने का' जवाब मिलने से) अपनी जाति के सरदार को बुलाते हैं। सरदार उस रोगी के मुँह पर इतने कपड़े रख देता है कि उसका दम घुटने लगता है और वह मर जाता है। मर जाने पर उसका मांस पकाते और सब लोग मिल कर बड़ी प्रसन्नता से खाते हैं। उसकी हड्डियों को खूब चूसते हैं यहाँ तक की उनमें ज़रा सा गूदा भी नहीं रह जाता क्योंकि उनका विश्वास है कि हड्डियों में गूदा रह गया तो उनमें कीड़े उत्पन्न हो जायँगे और ख़ूराक न मिलने के कारण मर जायगा तो उनकी मौत का हिसाब मृत मनुष्य को आत्मा से लिया जायगा। खा पी कर हड्डियों को एक सन्दूक में बन्द करके पहाड़ों की गुफाओं में रख देते हैं जहाँ मांस भक्षी पशु नहीं जा सकते। यदि ये लोग किसी दूसरे देश के अदमी को पकड़ कर कैद कर लेते हैं तो उसे भी इसी तरह खा जाते हैं।

आगे चलने पर 'लम्बरी'[2] नाम देश पड़ता है। यहाँ के

१—वागरवीन—इस स्थान का ठीक ठीक पता नहीं चलता। अनुमान किया जाता है कि यह स्थान 'पीदर' देश के समीप था।

२—लम्बरी—यद्यपि इस समय इस द्वीप का ठीक पता नहीं चलता तथापि रशीउद्दीन के कथनानुसार 'लम्बरी' नाम का एक द्वीप सुमात्रा और लंका के मध्य जल भाग में स्थित था। सम्भव है कि यही द्वीप हो।

निवासी बुद्ध धर्मानुयायी हैं। यहाँ कपूर और मसाले अत्यधिक परिमाण में पैदा होते हैं। इस देश में बनमानुस पाये जाते हैं। इनकी आकृति आदमियों से बहुत मिलती जुलती होती है। उन्हें एक दुम भी होती है[1] किन्तु उस पर बाल नहीं होते और वह कुत्ते की दुम के बराबर मोटी होती है। ये लोग पहाड़ों में रहते हैं और बिलकुल असभ्य तथा जङ्गली हैं। इस देश में गैंडे तथा दूसरे शिकार खेलने योग्य पशुओं तथा पक्षियों की अधिकता है।

लम्बरी से आगे बढ़ने पर 'फंसोर' देश आता है। यहाँ के निवासी भी बुद्ध धर्म के अनुयायी हैं। इस देश में कपूर बहुत होता है जो सोने के समान मँहगा बिकता है। यहाँ गेहूँ पैदा नहीं होता। लोग चावल, दूध और गोश्त खाते हैं और ताड़ी पीते हैं। इस देश में एक विचित्र प्रकार का लम्बा वृक्ष होता है जिसकी छाल बहुत बारीक (पतली) होती हैं। छाल के भीतर आटा[2] होता है। यहाँ वाले उसे बड़े चाव से खाते हैं। यात्री

१—दुमदार वनमानुस—हिन्द महासागर के बहुतेरे द्वीपों तथा अन्य कितने ही देशों में दुमदार मनुष्यों के होने का प्रमाण मिलता है। 'कज़वीनी' ने लिखा है कि "सुमात्रा द्वीप के अरमनी प्रदेश में उसने दुमदार आदमी देखे जो बन्दरों और पक्षियों से मिलती जुलती बोली बोलते थे। मार्सडन साहब ने भी लिखा है कि सुमात्रा द्वीप के मध्य भाग में एक जाति है जिसे दुम होती है उसे 'ओरङ्ग गोगो' कहते हैं। मि० सेंट जान लिखते हैं कि बोर्निओ द्वीप में उन्होंने कुछ ऐसे आदमी देखे जिन्हें दुम थीं। पहले मुसलानों में यह प्रसिद्ध था कि 'तराबज़न्द' के शाही ख़ानदान के लोगों को दुम होती है।

२—आटा—सम्भवतः यह सागू का वृक्ष है जिसके गूदे को पीसकर आटा बनाया जाता है।

(मार्कोपोलो) अपने साथियों सहित कई बार इस आटे को खा कर उसका अनुभव कर चुका है।

लम्बरी से आगे रवाना होकर डेढ़ सौ मील के पश्चात् उत्तर की ओर दो द्वीप मिलते हैं जिनमें से एक का नाम 'नीको-वरान'[1] है। यहाँ न कोई बादशाह है, न कोई सरदार। यहाँ के लोग बिलकुल जङ्गली हैं। प्रायः लोग नंगे रहते हैं। इस द्वीप में अच्छे वृक्ष पाये जाते हैं।

'निकोवरान' के आगे 'अंगामानेन'[2] द्वीप पड़ता है। यह एक बड़ा द्वीप है। यहाँ कोई राजा नहीं है। निवासी जंगली हैं। उनके सर आँखें और दाँत कुत्ते से होते हैं। उनकी आकृति कुत्तों सी होती है। ये लोग बड़े भयानक और रक्त-लोलुप होते हैं तथा अन्य देशीय मनुष्यों को जहाँ कहीं देख पाते हैं पकड़कर खा जाते हैं। उनका निर्वाह मछली और चावल से होता है। कहीं कहीं मेवे तथा मसाले भी पैदा होते हैं।

'अंगामानेन' से दक्षिण पश्चिम की ओर जाने पर 'सीलोन' द्वीप है। इस द्वीप का घेरा चौबीस सौ मील के लगभग है। पहले इसका घेरा छत्तीस सौ मील था किन्तु उत्तरी वायु के कारण (जो बहुत तेज़ी से चलती है) पानी की लहरें किनारों से टकराती हैं। इन लहरों ने द्वीप का बहुत सा भाग काट दिया है।

यहाँ के राजा का नाम 'संडीमन'[3] है। वह किसी को कर नहीं देता वरन् एकदम स्वतंत्र है। निवासी बौद्ध हैं। ये लोग केवल कमर में कपड़ा पहनते हैं, शेष शरीर नंगा रखते हैं। यहाँ गेहूँ

१—नीकोवरान—निकोवार देश।

२—अंगामानेन—अण्डमन द्वीप।

३—'संडीमन'—इस राजा का भारतीय नाम 'चन्द्रभानु' है।

पैदा नहीं होता। चावल और सरसों पैदा होते हैं। लोग मछली, दूध और चावल खाकर जीवन व्यतीत करते हैं। ये लोग ताड़ी भी पीते हैं।

इस देश में लाल (एक प्रकार की मणि), पुखराज (पुष्पराग) और नीलम पाये जाते हैं। यहाँ के बादशाह के पास एक सुन्दर और बहुत बड़ा लाल है जिसका जोड़ा संसार भर में मिलना कठिन ही नहीं वरन् एकदम असंभव है। वह एक बालिश्त लम्बा है और उसकी मुटाई आदमी की भुजाओं की सी है। यह लाल अत्यंत स्वच्छ, आग के समान लाल तथा चमकीला है। इसके मूल्य का अनुमान नहीं किया जा सकता। 'खां आज़म' ने एक दूत भेजकर इस लाल को लेने की इच्छा प्रकट की थी और उसके बदले में जो कुछ दाम हो, देने को तैयार था किन्तु राजा ने उत्तर दिया कि "यह लाल मेरे पूर्वजों का स्मारक है। अतएव मैं इसे नहीं दे सकता"। सीलोन निवासी लड़ाके नहीं हैं वरन् शान्तिप्रिय हैं।

इस देश में एक पहाड़ है; वह इतना ढालुवाँ है कि उसपर कोई चढ़ नहीं सकता था किन्तु अब लोगों ने लोहे की कीलें गाड़कर मोटी मोटी जंजीरें लगा दी हैं और उनके सहारे लोग पहाड़ पर चढ़ जाते हैं। मुसलमान कहते हैं कि इस पहाड़ पर हज़रत आदम का मक़बरा है तथा बौद्ध लोग उसे शाक्य मुनि का पूज्य स्थल मानते हैं[1]।

बुद्धधर्म के संस्थापक महात्मा गौतमबुद्ध के सम्बन्ध में यहाँ

१—इस पहाड़ पर पैर के दो निशान हैं जिनके सम्बन्ध में बौद्धों और मुसलमानों में बड़ा मतभेद है किन्तु ऐतिहासिक दृष्टि से बौद्धों का मत ही ठीक जान पड़ता है।

अनेक कथायें प्रचलित हैं। कहा जाता है कि जब जब संसार पर कठिनाइयाँ पड़ी हैं बुद्ध ने जन्म लिया है[1]। इस तरह बुद्ध ने चौरासी वार जन्म लिया था।

बौद्ध लोग बहुत दूर दूर से उस पर्वत की परिक्रमा करने आते हैं। लोगों का कथन है कि यहाँ बुद्धदेव की समाधि है[2]। रकाबी, (तश्तरी) दाँत और बाल जो वहाँ रक्खे हैं उन्हीं के बताये जाते हैं।

इस मक़बरे की ज़ियारत के लिये मुसलमान लोग भी दूर दूर से आते[3] हैं उनका विश्वास है कि यह मक़बरा हज़रत आदम का है और रकाबी, दाँत और बाल भी उन्हीं के हैं।

१—बुद्धधर्म सम्बन्धी प्रसिद्ध पुस्तक 'लाइट आव् एशिया' (Light of Asia) में भी यह बात लिखी है कि बुद्ध इससे पहले भी कई बार संसार का दुख दूर करने के लिये जन्म ले चुके हैं—शाक्य-वंश में जन्म लेना उनका संसार के लिये अन्तिम जन्म था।

२—सम्भवतः बुद्ध के मरने के बहुत दिन बाद अशोक के समय में लंका में बुद्ध की कुछ चीज़ें भेजी गई थीं और उन्हीं से यह समाधि बनाई गई थी।

३—मुसलमान और बौद्ध दूर दूर से इसका दर्शन करने के लिये बहुत पहले से आते रहे हैं। इब्न बतूता ने अपने यात्रा विवरण में लिखा है कि मुसलमान प्रायः दसवीं शताब्दी से यहाँ आने लगे। 'तोहफ़तुल मज़ाहदीं' (जो मलाबार के मुसलमानों का इतिहास है) नामक इतिहास के अड़तालीसवें पेज में लिखा हुआ है कि मुसलमान यात्रियों का एक झुण्ड (जो आदम पर्वत की ज़ियारत के लिये गया था) उस मुल्क से होकर गुज़रा था। मार्कोपोलो ने लिखा है कि उसे स्पेन का एक मुसलमान मिला जो इस क़ब्र का दर्शन करने गया था किन्तु इतिहास तथा बाइबिल से आदम की क़ब्र का इस पहाड़ पर होना सिद्ध नहीं होता।

जब 'खां आज़म' को यह मालूम हुआ कि 'आदम' पर्वत पर हजरत आदम के बाल तथा दाँत इत्यादि रक्खे हुए हैं तो उसने कुछ आदमी सीलोन के राजा के यहाँ भेजे। बादशाह ने दो दाँत और कुछ बाल देकर आदमियों को रवाना किया। यह घटना १२८४ ई० की है।

इस रकाबी[1] में यह गुण है कि यदि उसमें एक आदमी का भोजन रख दिया जाता है तो पाँच का हो जाता है।

१—रकाबी—इतिहास से प्रकट है कि इस रकाबी को सम्राट अशोक ने 'सीलोन' भेज दिया था। वहाँ से उसे एक तामिल सरदार पहली शताब्दी में ले गया किन्तु किसी तरह वह फिर सीलोन पहुँच गई और 'कांड़ी' क़सबे के एक मन्दिर में अब तक रखी हुई है। फ़ाहियान के लेखानुसार इसी प्रकार की एक रकाबी पेशावर में थी। ह्वान शांग लिखता है कि "ऐसी रकाबी फ़ारस में है"। सर हेनरी रालिंसन लिखते हैं कि 'वह क़न्धार में है'।

भारतवर्ष का वर्णन

सीलोन से साठ मील उत्तर एक देश है जिसका नाम मुसलमान लोग 'माबिर'[1] बताते हैं। इस देश में पाँच राजा राज्य करते हैं। यहाँ अच्छे और बड़े मोती पाये जाते हैं। इस देश और सीलोन के बीच में समुद्र है। किनारे पर खाड़ी है। मोती निकालने वाले अपने अपने जहाज लेकर इस खाड़ी में चले जाते हैं और अप्रेल से सम्पूर्ण मई तक रह कर मोती निकालते हैं।

मोती निकालनेवाले पहले एक स्थान पर एकत्र होते हैं जिसका नाम 'बटेलर'[2] है। इसके बाद वे साठ मील तक खाड़ी में चले जाते हैं। उनके साथ मजदूरों की एक टोली होती है, जो गोते लगाकर मोती की सीपियाँ निकालती है। जितने मोती मिलते हैं उनका दसवाँ हिस्सा सीलोन के राजा को देना पड़ता है। इसके अतिरिक्त मजदूरों को मजदूरी तथा जल-जन्तुओं के जादूगरों को रुपया देना पड़ता है। ये जादूगर जल के जानवरों का मुँह बन्द कर देते हैं कि वे गोता लगाने वाले मजदूरों को

१—माबिर देश—तेरहवीं और चौदहवीं शताब्दी में मुसलमान कारोमण्डल के किनारे को 'माबिर' कहते थे। 'अब्दुल लतीफ़' लिखित मिश्र देश के भूगोल में इसका वर्णन है। 'अबुलफ़िदा' ने भी यही नाम लिखा है।

२—'बटेलर'—इसका वर्तमान नाम 'पतलाम' है।

निगल न जाँय। सीलोन नरेश को मोती निकलवाने वालों से अच्छी आय होती है।

'माबिर' देश में दर्ज़ी नहीं पाया जाता क्योंकि स्त्री, पुरुष, बालक, धनवान सभी केवल कमर में एक कपड़ा बाँध लेते हैं। शेष शरीर खुला रहता है।

यहाँ का राजा नंगे पाँव रहता है। केवल कमर में एक कपड़ा बाँधता है। गले में एक हार पहनता है जिसमें लाल, नीलम, पुखराज इत्यादि रत्न गुथे रहते हैं। गले में एक माला भी होती है जिसमें मोतियों के एक सौ दो दाने होते हैं। १०२ दाने लगाने का कारण यह है कि उसे प्रातः, सायं १०२ बार अपने देवताओं के सम्मुख प्रार्थना करनी होती है। उसकी प्रार्थना में केवल एक शब्द है—'पकवट[1]' जिसे वह एक सौ दो बार दुहराता है।

यह राजा अपने भुजाओं पर तीन तीन सुनहला भुजबन्द पहनता है जिनमें बहुमूल्य मोती टके होते हैं। पैर में बहुमूल्य मोतियों के कड़े और उँगलियों में अगूँठी तथा पैर की उँगलियों में छल्ले पहनता है।

राजा की आज्ञा है कि अधिक बड़े मोती उसके देश से बाहर न जाँय। वह अच्छे २ मोती अपने यहाँ रख लेता है। वह साल में एक बार अपने राज्य में ढिंढोरा पिटवा देता है कि जिस मनुष्य के पास कोई बढ़िया, आबदार मोती अथवा दूसरे प्रकार का कोई रत्न हो तो बादशाह के पास ले जावे वह, उन रत्नों को दूना दाम देकर ख़रीद लेगा। दूना दाम मिलने पर सब

१—'पकवट'—'पकवट' शब्द भगवत से बिगड़ते बिगड़ते बन गया है जिसका अर्थ ईश्वर है।

लोग उसे अपने पास के बढ़ियाँ मोती तथा दूसरे रत्नादि बेच देते हैं।

इस राजा को पाँच सौ से अधिक रानियाँ हैं क्योंकि वह जिस स्त्री को सुन्दर देखता अथवा सुनता है, उसे रानी बनाकर महल में सम्मिलित कर लेता है। उसने अपने भाई की स्त्री को भी (जो बहुत सुन्दर है) रानी बनाकर महल में रख लिया है।

राजा की सेवा में बहुत से सरदार उपस्थित रहते हैं। वे सर्वदा उसके साथ रहते हैं। उनको बड़े बड़े पद दिये गये हैं। उनके अधिकार अतीव विस्तृत हैं। जब राजा मर जाता है और उसका शव चिता पर फूँका जाता है तो ये सरदार भी राजा के साथ उसी आग में जलकर मर जाते हैं क्योंकि उनका विश्वास है कि वे दुनियाँ में तो उसके मित्र बने रहे अतएव परलोक में उसका साथ देना उचित है।

इस देश के राजा का ख़जाना असंख्य है क्योंकि जब एक राजा मर जाता है तो दूसरा जो उसकी जगह पर बैठता है पहले के ख़ज़ाने में हाथ नहीं लगाता वरन् स्वयं एक नया ख़ज़ाना संग्रह करता है। वंश परम्परा से ऐसा करते करते ख़जाने में अपार धन हो गया है।

इस देश में घोड़े पैदा नहीं होते, इसलिए देश के धन का एक बड़ा भाग उनकी ख़रीद में चला जाता है। हुरमुज़, सोहार और अदन के सौदागर प्रति वर्ष जहाज़ों में घोड़े भरकर इस देश में लाते हैं। पांचों राज्यों में से हर एक में प्रायः दो दो हज़ार घोड़े प्रति वर्ष आते हैं। एक अच्छे घोड़े का मूल्य पाँच सौ रुपया होता है। यहाँ इतने घोड़ों के प्रति वर्ष ख़रीदे जाने

का कारण यह है कि अधिकांश घोड़े जल वायु के परिवर्तन तथा अच्छी तरह सेवा न होने के कारण मर जाते हैं।

इस देश में जब किसी अपराधी को 'प्राणदण्ड' दिया जाता है तो वह अपराधी राजा से प्रार्थना करता है कि वह अमुक देवी अथवा देवता के नाम पर जान देना चाहता है। राजा, उसकी यह प्रार्थना स्वीकार कर लेता है जिसके बाद उसके सम्बन्धी गण उसे (अपराधी को) एक गाड़ी में सवार करके, हाथों में बारह छुरियाँ दे देते हैं और फिर उसे सारे शहर में घुमाते तथा कहते जाते हैं कि "अमुक मनुष्य, अमुक देवी व देवता के नाम पर अपनी जान देता है।" जब घुमाते घुमाते वे नियत स्थान पर पहुँच जाते हैं तो वह अपराधी ज़ोर से चिल्लाता है कि "मैं अमुक देवी वा देवता के नाम पर जान देता हूँ" और यह कहकर वह एक छुरी अपने दाहिने हाथ की भुजा में भोंक लेता है और इसी प्रकार बायें हाथ की भुजा, पेट तथा शरीर के अन्यान्य अंगों में। यहाँ तक कि वह मर जाता है। जब उसका दम निकल जाता है तो उसके निकटस्थ सम्बन्धी और मित्रगण उसके शव का बड़ी धूम धाम से आग में जला देते हैं।[1] इस देश

१—प्राणदण्ड—भारतवर्ष भर में कभी और किसी समय में अपराधियों को ऐसी सज़ा नहीं दी गई। इतिहास में भी इसका वर्णन नहीं है। मार्कोपोलो का अभिप्राय शायद जान देने के उस ढंग से है जिसमें लोग अपने को किसी देवी अथवा देवता के नाम प्रसन्नतापूर्वक बलि कर देते थे। इसका प्रमाण इतिहास से भी मिलता है। मि० जोरडायन्स लिखते हैं कि एक मनुष्य ने अपना सर तेज़ चाकू से काटकर एक देवता की मूर्ति पर चढ़ा दिया। इब्न बतूता लिखता है कि भारतवर्ष और स्याम में आत्म बलि के ऐसे उदाहरण पाये जाते हैं।" मि० वाडें

में बहुतेरी स्त्रियाँ अपने पति के साथ प्रसन्नतापूर्वक चिता पर बैठकर जल जाती हैं।[१]

इस देश के निवासी बुद्ध धर्म के अनुयायी हैं। उनमें से बहुत से लोग बैल और गाय को पूजते हैं क्योंकि वे उसे जीवित देवता और भोजन देने वाला समझते हैं। वे न तो गाय काटते हैं और न उसका गोश्त खाते हैं। हाँ, एक जाति अवश्य है जो इनका माँस खाती है। इन लोगों को 'गोवी' कहते हैं किन्तु ये लोग भी गायों और बैलों को काट कर उनका माँस नहीं खाते वरन् मर जाने पर उनका माँस खाते हैं। इस देश के लोग अपने घरों को गोबर से लीपते हैं। धनी और दीन सब ज़मीन पर बैठते हैं क्योंकि वे ज़मीन को पूज्य मानते हैं।

इस देश के लोग जब कभी युद्ध में सम्मिलित होते हैं तो एक ढाल, एक बरछा और एक तलवार ले लेते हैं और पैदल लड़ाई में चले जाते हैं। ये लोग इतने दयावान हैं कि स्वयं कभी

लिखते हैं कि "मैंने बंगाल प्रान्त स्थित प्रसिद्ध नदिया ज़िले के पास के एक गाँव 'कर्तारि' में एक हथियार देखा जिससे लोग अपना सर काटकर किसी देवी अथवा देवता को भेंट चढ़ाते थे।" पादरी टिकिन टारज़' के लेख से पता चलता है कि उन्होंने भी एक ऐसा हथियार इलाहाबाद में देखा। हिन्दुओं में एक किम्वदन्ती प्रचलित है कि उज्जैन के महाराज विक्रमादित्य नित्य दिन प्रातःकाल अपना सर काट कर देवी को चढ़ाते थे जो फिर उनके धड़ से अपने आप लग जाता था किन्तु अन्तिम बार न लग सका।

१—मार्कोपोलो का आशय 'सती प्रथा' से है जो प्राचीन समय में भारतवर्ष की एक प्रसिद्ध प्रथा थी।

किसी पशु को नहीं मारते; हाँ बहुत ज्यादा आवश्यकता पड़ने पर मुसलमानों से कटवाते हैं।

इस देश के स्त्री पुरुष दिन में दो बार स्नान करते हैं। जो मनुष्य प्रति दिन स्नान नहीं करता उसे गन्दा समझते हैं। वे दाहिने हाथ से भोजन खाते हैं, बायें हाथ से उसे छूते भी नहीं। स्वच्छता और पवित्रता के सारे कार्य दाहिने हाथ से करते हैं और अपवित्र कार्य बायें हाथ से।

प्रत्येक व्यक्ति पानी पीने के लिये एक बर्तन अपने लिये अलग रखता है। उससे मुँह लगाकर पानी नहीं पीता वरन् धारा बाँधकर हाथ की अँगुली के द्वारा मुँह में डालता और पीता जाता है। जब वे किसी को पानी पिलाते हैं तो ओक से, बर्तन से नहीं।

इस देश में लोग शराब नहीं पीते,। लोग शराब पीना बहुत बुरा समझते हैं और शराबी को विश्वास योग्य ख्याल नहीं करते।

इस देश में यह रीति है कि यदि महाजन अपने ऋण दिये हुए रुपये के लिये ऋणी मनुष्य से तक़ाज़ा करे फिर भी ऋणी मनुष्य रुपये न लौटावे वरन् बहाना करता रहे तो महाजन मौक़ा पाकर उस ऋणी के चारों ओर एक रेखा खींच देता है। रेखा से घिर जाने पर (ऋणी) मनुष्य जहाँ का तहाँ खड़ा रह जाता है और जब तक रुपया न दे अथवा कोई जमानत न करे तब तक उस घेरे के बाहर नहीं निकलता। यदि वह घेरे से बाहर निकल जाय तो राजा उसे नियमानुसार दण्ड देता है। एक बार राजा के यहाँ किसी विदेशी व्यापारी का रुपया बाकी था। राजा देने में इधर उधर करता था। जब एक दिन राजा शहर में घोड़े पर चढ़कर जा रहा था तो उस व्यापारी ने फुर्ती से उसके और उसके घोड़े के चारों ओर लकीर खींच दी। यह देखते ही राजा

खड़ा हो गया और तब तक ज्यों का त्यों खड़ा रहा जब तक सौदागर को रुपये नहीं लौटाये गये। इससे राजा की न्यायशीलता का परिचय मिलता है।*

इस देश में गर्मी बहुत पड़ती है। साल भर में तीन महीने (जून, जुलाई, अगस्त) पानी बरसता है।

यहाँ के लोग मनुष्य को केवल एक बार देख कर उसका स्वभाव, आचरण इत्यादि बता देते हैं। वे लोग शकुन भी मानते हैं और पशुओं तथा पक्षियों से शकुन का विचार करते हैं। यदि कोई मनुष्य कहीं जा रहा हो और दूसरा छींक दे तो अच्छी छींक होने पर वह चला जाता है अन्यथा थोड़ी देर ठहर जाता है।

जब बच्चा पैदा होता है तो उसके पैदा होने की घड़ी, दिन, नक्षत्र राशि इत्यादि की सहायता से उसकी एक 'जन्मपत्रिका' तैयार की जाती है। यहाँ के लोग जादू और फलित ज्योतिष को बड़े विश्वास की दृष्टि से देखते हैं।

इस देश में जब लड़के बारह वर्ष के हो जाते हैं तो उनको कुछ धन देकर कोई काम करने पर ज़ोर दिया जाता है क्योंकि इतनी अवस्था के लड़के स्वयं कमाने के योग्य समझे जाते हैं। ये लड़के दिन भर चीजें खरीद खरीद कर बेचा करते हैं। जब धीरे धीरे, उनके पास कुछ पूँजी हो जाती है तो गर्मी के दिनों में दो चार मोती खरीद कर सौदागरों के हाथ बेच देते हैं और इस भाँति कुछ पैदा कर लेते हैं।

---

*—ऋण वसूल करने की विचित्र रीति—'कज़वीनी', बर्थीमा तथा अलेकजेण्डर हेमिलल्टन ने भी मार्कोपोलो की इस बात को ठीक माना है किन्तु 'कज़वीनी' ने इसे सीलोन में बताया है, कारोमण्डल में नहीं।

इस देश में तथा भारत के अन्य प्रान्तों में नाना प्रकार के पशु, पक्षी पाये जाते हैं। भेड़ें, इटली देश की सी होती हैं किन्तु चमगादर पक्षी, वहाँ की अपेक्षा बहुत बड़ा होता है।

घोड़ों को चावल और उबला हुआ मांस देते हैं जिससे वे शीघ्र मर जाते हैं। इस देश में देवी और देवताओं के बहुत मन्दिर हैं जिनमें कुमारी बालिकाएँ देवताओं की सेवा को रखी जाती हैं। जब कोई त्योहार पड़ता है तो संन्यासी लोग उन लड़कियों को बुलाते हैं। लड़कियाँ नाना प्रकार के भोजन बना बनाकर थालियों में मूर्त्तियों के सम्मुख रखती हैं और फिर देवताओं की प्रशंसा के गीत गाती, नाचती, आनन्द मनाती तथा प्रार्थनायें करती हैं। इसके बाद देवता का प्रसाद समझ सब लोग उन भोज्य पदार्थों को बाँटकर खा जाते हैं। लड़कियाँ तभी तक इन मन्दिरों में रहती हैं जब तक वे कुमारी होती हैं और व्याहने योग्य नहीं हो जातीं। लड़कियों का जीवन, शुद्ध और तपस्यापूर्ण होता है। ऐसी लड़कियाँ 'देवदासी' कहलाती हैं।

इस देश के धनिक ऐसी चारपाइयों पर सोते हैं जो बेत से बनाई जाती हैं और हल्की होती हैं। उनके चारों ओर पायों और पतली लकड़ियों के सहारे पतली जाली के समान बुने हुये कपड़े लगाये जाते हैं। ऐसा इसलिए किया जाता है कि मच्छर और मक्खियाँ न काट सकें।

इस देश के बच्चे काले रंग के होते हैं। पैदा होने पर उनकी माताएँ उन्हें रोज सरसों का उबटन लगाती हैं जिनसे वे और भी काले हो जाते हैं। अपने देवताओं की मूर्त्तियाँ भी प्रायः वे काली ही बनाते हैं।

इस देश के लोग गाय तथा बैल को पवित्र जानवर समझते

हैं। जब वे लड़ाई में जाते हैं तो सवार, गाय अथवा जंगली बैल के बाल अपने घोड़े की गर्दन में तथा पैदल लड़ने वाले सैनिक अपनी ढालों में बाँध लेते हैं क्योंकि उनका विश्वास है कि ऐसा रखने से युद्ध से वे बिना घायल हुए ही घर लौटेंगे।

'माबिर' से उत्तर की ओर चलकर एक लम्बी यात्रा समाप्त करने के पश्चात् 'मेतोपल्ली' आता है। यहाँ का राजा, चालीस वर्ष हुए, मर गया। आजकल राजा की रानी शासन करती है। वह एक योग्य स्त्री है। न्याय और बुद्धिमानी से राज्य करके सम्पूर्ण प्रजा को उसने अपने वश में कर लिया है। वह अपने पति से बड़ा प्रेम करती थी इसीलिए उसके मरने पर फिर उसने ब्याह नहीं किया। यहाँ के लोग दूध, मछली और चावल खाते हैं।

इस देश में हीरे मिलते हैं। कई ऊँचे पर्वत हैं। जाड़े में जब पानी तेज़ी से बरसता है तो पहाड़ों से चश्मे वह निकलते हैं, लोग उनकी तली में खोजते हैं, उन्हें बहुत से हीरे मिल जाते हैं। ये हीरे गर्मी में भी पहाड़ों में खोज करने से मिलते हैं किन्तु गर्मी इतनी अधिक पड़ती है कि वहाँ तक पहुँचना कठिन हो जाता है और पहाड़ों पर पानी बिलकुल नहीं मिलता। इसके अतिरिक्त वहाँ साँपों की भी अधिकता है। ये साँप बहुत जहरीले होते हैं और लोगों को काट खाते हैं। इस प्रकार कितने ही आदमियों की जानें जा चुकी हैं।

इन पहाड़ों में बड़ी गहरी और नीची घाटियाँ हैं जिनकी तली में हीरे पाये जाते हैं किन्तु घाटियों में साँपों की अधिकता है और उनकी तली तक मनुष्य की पहुँच नहीं है। घाटियों के ऊपर एक प्रकार के पक्षी पाये जाते हैं जो साँपों को खा जाते हैं। जो

लोग हीरे खोजने जाते हैं, वे अपने साथ मांस के पतले चमड़े ले जाते हैं, इन चमड़ों में वे एक प्रकार की लसदार चीज़ लगा देते हैं। उन पक्षियों के सामने वे, उन लसदार पतले चमड़ों को घाटियों की तली में फेंक देते हैं। वे पक्षी ज्योंही आदमियों को चमड़ा फेंकते हुए देखते हैं त्योंही झपटकर तली में चले जाते हैं और उन चमड़ों को पंजों में दबाकर उठा लाते हैं और एक स्थान पर उन्हें खाने के लिये बैठते हैं किन्तु लोग उनकी ताक में लगे रहते हैं और खाने नहीं देते वरन् पत्थर मारकर उन्हें उड़ा देते हैं। उनके उड़ जाने पर वे वहाँ जाकर चमड़ों को उठा लेते हैं और उनमें से हीरों के टुकड़े छुड़ा लेते हैं जो उस लसदार वस्तु के कारण चमड़े से चिमट जाते हैं।

इन पहाड़ों पर एक और ढंग से भी हीरे प्राप्त किये जाते हैं। लोग उन पक्षियों के घोंसले से उनकी बीट से हीरे निकाल लेते हैं क्योंकि वे मांस के साथ हीरे भी निगल जाते हैं जो बीट में बाहर निकल आते हैं। कभी कभी उन पक्षियों का शिकार करके उनका पेट चीर कर भी हीरे निकाले जाते हैं।

इस देश में बहुत ही उत्तम और सूक्ष्म मलमल बुनी जाती है जो दूर दूर के देशों में भी जाती है और राजाओं तथा रानियों के पहनने के काम में आती है। भेड़ें बड़ी बड़ी होती हैं। यहाँ प्रायः सभी आवश्यक वस्तुएँ मिल जाती हैं।

यहाँ से उत्तर पश्चिम में 'लार' नामक एक प्रान्त है। यहाँ के ब्राह्मण बड़े अच्छे व्यापारी और सत्यवादी हैं। वे दुनिया की किसी चीज़ के लिये झूठ नहीं बोलते। यदि कोई विदेशी व्यापारी जो उस देश की क्रय-विक्रय-रीति से अनभिज्ञ हो अपना माल इन्हें सौंप दे तो ये उसे बहुत सचाई और ईमानदारी से बेचते हैं,

और उस भेंट के अतिरिक्त जो, वह व्यापारी उन्हें प्रसन्नतापूर्वक दे देता है, कुछ नहीं लेते और न तो किसी धोखे के ढंग से लेने का यत्न ही करते हैं। वे लोग अपने धार्मिक नियमों के सच्चे अनुगामी हैं। वे न तो मांस खाते हैं और न शराब पीते हैं, न कोई ऐसा काम करते हैं जिनसे किसी को कुछ दुख हो। दूसरों को कोई चीज़ नहीं लेते। व्यभिचार का उनमें नाम भी नहीं है। ये लोग गले में यज्ञोपवीत धारण करते हैं जिसे वे बड़ा पवित्र समझते और उसका सम्मान करते हैं।

ये लोग शकुन पर बड़ा विश्वास रखते हैं। प्रतिदिन मनुष्य के शरीर की छाया नापी जाती है। जो मनुष्य कोई वस्तु खरीदना चाहता है, वह प्रातः काल धूप में खड़ा हो जाता है और अपनी छाया देखता है। यदि उसकी छाया की नाप ठीक होती है तो वह सौदा कर लेता है और यदि कम होती है तो नहीं करता। इनके यहाँ प्रतिदिन दिन का एक पहर बुरा समझा जाता है जैसे बुध के दिन दोपहर का समय, बृहस्पति के दिन तीसरे पहर का इत्यादि। उस समय लोग कोई काम नहीं करते।

यदि कोई मनुष्य घर में बैठा हुआ छिपकली को दीवार की उस दिशा से आता देखे जो शुभ मानी जाती है तो उसी समय जो काम करना होता है कर डालता है और यदि अशुभ दिशा से आता हुआ देखता है तो बड़ी देर तक कोई काम नहीं करता। यदि किसी को बाहर कहीं काम से जाते समय छींक हो जाय तो छींक अच्छी होने पर वह चला जाता है अन्यथा लौट आता है।

इन ब्राह्मणों की आयु अधिक होती है क्योंकि वे खाने पीने, नहाने धोने में संयम से काम लेते हैं। एक प्रकार की तरकारी खाने से उनके दाँत भी सुदृढ़ हो जाते हैं। इस तरकारी से उनके स्वास्थ्य को बड़ा लाभ होता है।

इस देश का राजा बड़ा धनवान और शक्तिशाली है। उसे रत्नादि इकट्ठा करने का बड़ा शौक है। वह इन ब्राह्मणों को माबिर देश में जवाहिरात खरीदने के लिये भेजता है। जिस मूल्य पर वे ख़रीद कर लाते हैं उससे दूना दाम देता है।

इस देश में धार्मिक नेताओं का एक फ़िरक़ा होता है जिसे जोगी (योगी) कहते हैं। ये योगी प्रायः जाति के ब्राह्मण होते हैं। इनकी आयु डेढ़ डेढ़ सौ दो दो सौ बरस की होती है। ये थोड़ा और सादा भोजन करते हैं। गंधक और पारे से एक प्रकार का सत निकाल कर बाल्यावस्था ही से खाते हैं जिससे वे दीर्घायु होते हैं और शरीर हृष्टपुष्ट रहता है।

कुछ योगी ऐसे हैं जो ईश्वर भजन करके परिश्रम के साथ जीवन व्यतीत करते हैं। ये लोग नंगे रहते हैं क्योंकि उन्हें वासनायें अपने अधिकार में नहीं ले आ सकती। वे इन्द्रिय-निग्रही होते हैं। गाय के सूखे गोबर की राख अपने शरीर पर मलते हैं जिसे वे पवित्र तथा शरीर नीरोग रखने के लिये आवश्यक समझते हैं और जब कोई उनका भक्त मिल जाता है तो यह राख उसके ललाट पर मल देते हैं।

वे बरतन में भोजन नहीं करते वरन् वृक्षों के पत्तों से बने हुए पत्तल पर। ये पत्ते हरे नहीं, सूखे होते हैं क्योंकि उनका विचार है कि हरे पत्तों में भी जान होती है और किसी की जान को सताना पाप है। चाहे कोई उनकी जान ले ले किन्तु वे धार्मिक नियमों के विरुद्ध आचरण नहीं करते। यदि कोई उनसे नंगा रहने का कारण पूछता है तो वे उत्तर देते हैं कि "हम संसार में नंगे ही आये थे और नंगे ही चले जाँयगे अतएव हमें सांसारिक वस्तुओं से कोई सम्बन्ध न रखना चाहिए। मनुष्य लज्जा निवारण के लिये वस्त्र

पहनता है किन्तु जिनके मन में बुरी वासनायें नहीं हैं और जो संसार से सम्बन्ध त्याग एक ईश्वर के ही ध्यान में मग्न हैं उन्हें कपड़े पहन कर अपनी आवश्यकताओं को वढ़ाने की क्या ज़रूरत है ? कपड़े पहनने की आवश्यकता तो उन्हें है जो संसार से सम्बन्ध रखते हैं और जिनमें वासनायें शेष रह गई हैं।"

वे किसी की जान नहीं मारते क्योंकि ऐसा करना वे पाप समझते हैं। हरी तरकारियाँ नहीं खाते वरन् सूखी से काम चलाते हैं। वे ज़मीन पर नंगे सोते हैं, न कुछ ओढ़ते हैं, न कुछ बिछाते हैं। वे सर्वदा भूखे रहते हैं और पानी के अतिरिक्त कोई चीज़ पीते भी नहीं।

जब वह किसी को अपना शिष्य बनाते हैं तो उसे पहले अपने मठ में बहुत दिनों तक रखते हैं और उसे अपनी ही भाँति, संयम से जीवन व्यतीत कराते हैं। जब उसकी परीक्षा कर लेते हैं तो वह उन सुन्दरी कुमारियों को (जो मूर्तियों की सेवा करती हैं) बुलाते हैं और उस मनुष्य को उनके साथ रहने, तथा स्वच्छन्दतापूर्वक घूमने के लिये छोड़ देते हैं। वे लड़कियाँ गाने गाती तथा तरह तरह से उस मनुष्य को लुभाने की चेष्टा करती हैं। ये बातें इस ढंग से की जाती हैं कि उस आदमी को मालूम नहीं होता कि यह सब हमारी ही परीक्षा के लिये है। यदि वह मनुष्य उन लड़कियों के प्रति लापरवाही दिखाता है तो उसको अपना शिष्य बनाते हैं क्योंकि ऐसे आदमी इन्द्रियनिग्रही होते हैं।

वे मुरदों को इस विचार से फूँकते हैं कि यदि शव फूँका न जाय तो उसमें कीड़े पड़ जाते हैं। जब उन कीड़ों को भोजन नहीं मिलता तो वे मर जाते हैं और उनकी मृत्यु का पाप मृतक मनुष्य को होता है।

'माबिर' देश में एक ऐश्वर्यशाली नगर है जिसका नाम 'कायल' है। यहाँ एक शक्तिसम्पन्न राजा राज करता है। उसका नाम 'आशर' है। 'कायल' एक अच्छा बन्दरगाह है। यहाँ अरब और अदन इत्यादि देशों के व्यापारियों के जहाज़ ठहरते हैं। यह एक व्यापारी नगर है।

यहाँ का राजा बड़ा धनी है। न्याय के साथ राज्य करता है। उसे लगभग तीन सौ रानियाँ हैं क्योंकि इस देश में जिस मनुष्य की अधिक स्त्रियाँ होती हैं उसका अधिक आदर होता है।

इस देश के धनवान, दरिद्र सब लोग पान बहुत खाते हैं। वे सुपारी, चूना, कत्था तथा अन्य चीज़ें डालकर उसका बीड़ा लगाते हैं और सर्वदा चबाते रहते हैं। यदि कोई मनुष्य किसी की बेइज्जती करने को होता है तो पान की पीक उसके मुँह पर थूक देता है। वह आदमी राजा के यहाँ प्रार्थना करता है। राजा उसे थूकने वाले मनुष्य से लड़ने की आज्ञा दे देता है और लड़ने के लिये एक तलवार भी। वे दोनों लड़ते हैं और लोग तमाशा देखते हैं, यहाँ तक कि लड़ते-लड़ते एक मारा जाता है।

कोलम इत्यादि देशों का हाल

'माबिर' से पाँच सौ मील दक्षिण पश्चिम की ओर कोलम देश स्थित है। इस देश में अदरक और मिर्च बहुत पैदा होती है। मिर्च के वृक्षों में बराबर पानी लगता रहता है अन्यथा वे सूख जाते हैं। मिर्च की फ़स्ल मई, जून और जुलाई में एकत्र की जाती है। एक वृक्ष के पौधे से नील भी निकाला जाता है। लोग उसकी लकड़ी को पानी में भिगोते हैं। जब लकड़ी का रंग घुलकर पानी को नीला बना देता है तो उस पानी को धूप में सुखाते हैं जब नीचे नीला रंग रह जाता है तो उसकी टिकिया बना लेते हैं।

यहाँ गर्मी बहुत ज्यादा पड़ती है। यदि कोई गर्मी के दिनों में नदी में अण्डा डालकर लौटे तो वह थोड़ी दूर जाने न पावेगा कि अण्डा उबल जायगा।

इस देश में एशियाई रूम, अरब, चीन, श्याम इत्यादि दूर-दूर देशों में से व्यापारी आते हैं। व्यापार में उन्हें बड़ा लाभ होता है।

इस देश के पशु पक्षी, इटली के से नहीं होते। यहाँ शेर का रंग काला होता है। तोतों का स्वेत। उनके चोंच और पाँव लाल होते हैं। किसी-किसी का रंग नीला और किसी-किसी का हरा होता है। यहाँ के मोर अत्यंत सुन्दर और देखने योग्य होते हैं। इस देश में केवल चावल होता है। यहाँ के ज्योतिषी और दार्श-

निक लोग विद्वान होते हैं। लोगों का रंग काला है। बहुत लोग भाई के मर जाने पर उसकी स्त्री को रख लेते हैं।

कोलम के पश्चात् 'कुमारी' देश आता है। यहाँ से ध्रुवतारा कुछ-कुछ दिखाई देता है। उसे देखने के लिये लोगों को समुद्र में तीस मील तक जाना पड़ता है।

इधर एक जंगली प्रान्त है। इसमें सब प्रकार के जंगली जानवर पाये जाते हैं। बन्दर तो कई तरह के और विचित्र होते हैं। शेर, चीते, तेंदुये बहुत हैं।

'कुमारी' से लगभग तीन सौ मील उत्तर पश्चिम 'हेली आरावी'[1] स्थित है। यहाँ का राजा स्वतंत्र है, वह किसी को कर नहीं देता। सम्पूर्ण देश में एक भाषा बोली जाती है जो दूसरे देश की भाषाओं से नहीं मिलती। इस देश में कोई अच्छा बंदरगाह नहीं। इस देश में मिर्च, अदरक और मसाले की पैदावार खूब होती है। राजा का खजाना मालामाल है किन्तु सेना का प्रबन्ध ठीक नहीं है। प्राकृतिक रूप से इस देश की स्थिति कुछ ऐसी है कि शत्रु इसमें प्रवेश नहीं कर सकते अतएव राजा को कोई खटका नहीं है।

यदि कोई जहाज़ किसी दूसरे देश को जा रहा हो और संयोगवश उनके तट पर ठहर जाय तो यहाँ के निवासी उसे यह कहकर लूट लेते हैं कि "तुम कहीं दूसरी जगह जा रहे थे किन्तु ईश्वर ने तुम्हें हमारी ओर भेज दिया अतएव हम तुम्हारे माल के अधिकारी हैं।" ऐसा करना वे पाप नहीं समझते।

यह रीति दक्षिणी भारत के कई स्थानों में प्रचलित है कि दूसरे देशों के जाते हुए जहाज़ को अपने किनारे में पाकर वे लूट

१—यह वही देश है जो वर्तमान 'कनानोर' के उत्तर में है।

लेते हैं, किन्तु जो जहाज उन्हीं के देश को आते हैं उनका वे बड़ा सन्मान करते हैं। इसीलिए जो जहाज इधर से होकर दूसरे देशों को जाने को होते हैं, अपने साथ खाने पीने का पूरा सामान रख लेते हैं और तब बहुत शीघ्र समुद्र से होकर निकल जाते हैं।

इस देश में शिकार योग्य पशु पक्षियों की अधिकता है।

मालाबार और गुजरात

'हेली' से पश्चिम की ओर मलाबार है। यहाँ का राजा स्वतंत्र है। निवासियों में बहुत से बौद्ध हैं। इस देश से ध्रुवतारा भलीभाँति दिखाई देता है। इस देश में समुद्री डाकुओं की अधिकता है। वे व्यापारियों को बड़ी हानि पहुँचाते हैं। ये डाकू जहाज़ों को लूट लेते हैं और यदि जहाज़ों का स्वामी यह सोच कर जवाहिरात निगल जाये कि वे डाकुओं के हाथ न लग सकें तो वे डाकू, उसे समुद्र के पानी में एक चीज़ (जिसे 'तमरहिन्दी' कहते हैं) मिला कर पिलाते हैं जिससे उसे दस्त होने लगते हैं और जवाहिरात निकल आते हैं।

इस देश में अदरक, मिर्च, दालचीनी, सुपारी और नारियल खूब होते हैं। यहाँ से ये चीज़ें दूर दूर के देशों में भेजी जाती हैं। अदन, ग्रीस, चीन इत्यादि दूर दूर के देशों से व्यापार होता है।

नील यहाँ अधिक होता है। कपास के पेड़ (जिसे 'देवकपास' कहते हैं) अधिकता से हैं। वे बड़े ऊँचे होते हैं और उनमें बीस वर्ष तक कपास लगती है। बारह साल तक की कपास तो कातने और कपड़ा बुनने के काम में आती है किन्तु अन्तिम आठ वर्ष की कपास, कातने और कपड़ा बुनने योग्य नहीं होती वरन् गद्दों और तोशकों को भरने के काम आती है।

यहाँ चटाइयाँ बहुत अच्छी बनाई जाती हैं जिसमें अच्छी

कारीगरी की जाती है और पशुओं तथा पक्षियों के चित्र खींचे जाते हैं। यह चटाइयाँ बिछौने का काम देती हैं। तकिये भी अच्छे बनते हैं।

इसके बाद वह देश मिलता है जिसे 'थाना[1]' कहते हैं। यहाँ का राजा स्वतंत्र है। लोगों की एक अलग भाषा है। यहाँ मसाले इत्यादि तो पैदा नहीं होते 'धूप' और 'गुगुल' नाम की वस्तुएँ (जो जलाने के काम में आती हैं) बहुत होती हैं। यहाँ से विदेशी व्यापारी सोना, चाँदी, ताँबा और रुई ले जाते हैं। व्यापार बहुत बड़ा चढ़ा है।

१—वर्तमान काल का 'सांलसेट' (Salsette—बम्बई के पास) द्वीप।

खम्बात और सोमनाथ

'थाना' से उत्तर और गुजरात से पश्चिम की ओर खम्बात है। यहाँ के निवासी मूर्त्तिपूजा पर असीम विश्वास रखते हैं। इनकी भाषा अलग है। यहाँ का राजा, स्वतंत्र है। यहाँ से ध्रुवतारा भलीभाँति दिखाई भी देता है।

इस देश में व्यापार खूब होता है। नील की खेती होती है। रूई दूसरे देशों को भेजी जाती है। चमड़े का व्यापार अधिक होता है। विदेशी सौदागर सोना चाँदी और तूतिया लाकर बेचते हैं।

खम्बात से आगे चलकर पश्चिम की ओर सोमनाथ पड़ता है जो एक बड़ा देश है। यहाँ के निवासी भी मूर्त्ति पूजा करते हैं। इनका राजा भी स्वतंत्र है। यहाँ के लोग बड़े सत्यवादी होते हैं। अधिकांश निवासी व्यापार और कारीगरी करते हैं।

यहाँ से और आगे चलकर एक विचित्र देश पड़ता है जिसे 'कजमकरान' (सम्भवतः कच्छ) कहते हैं। यहाँ के निवासी प्रायः मुसलमान हैं। वे व्यापार करते और चावल, दूध तथा गोश्त से अपना निर्वाह करते हैं यहाँ पर भारतवर्ष की सीमा का अन्त हो जाता है।

सकोत्रा[1] और मेडागस्कर[2]

'कजा मकरान' से चलकर दो द्वीप मिलते हैं। इन दोनों द्वीपों में लगभग तीस मील का अन्तर है। यहाँ के निवासी इसाई हैं। इन दोनों द्वीपों की विचित्र बात यह है कि एक में बिलकुल पुरुष ही पुरुष हैं और दूसरे में स्त्रियाँ। पुरुष प्रति वर्ष मार्च के महीने में दूसरे द्वीप में चले जाते हैं और तीन मास तक अपनी स्त्रियों के साथ रहते हैं। तीन महीने के बाद वे फिर अपने द्वीप को लौट जाते हैं और खेती तथा व्यापार करते हैं। वे मछली और चावल खाते हैं। समुद्र में जाल डाल कर बड़ी बड़ी मछलियाँ पकड़ते हैं। इनमें कोई राजा नहीं है।

स्त्रियाँ, लड़कों को केवल चौदह वर्ष तक अपने पास रखती हैं। इसके पश्चात् वे, उन्हें उनके पिता के पास भेज देती हैं। लड़कियाँ सब दिन स्त्रियों ही के यहाँ रहती हैं।

इन द्वीपों से दक्षिण की ओर पाँच सौ मील की यात्रा करने पर 'सकोत्रा' द्वीप मिलता है। यहाँ इसाई बसते हैं। ये लोग चावल मछली और मांस खाते हैं।

१—सकोत्रा (Socotra)—अरब के दक्षिण और अदन के पूर्व में एक छोटा-सा द्वीप है।

२—मेडागास्कर (Madagascar) अफ्रीका—'पोर्च्युगीज़ पूर्वी अफ्रीका' (Portuguese East Africa) के पूर्व हिन्द महासागर में यह बड़ा भारी द्वीप है।

यहाँ के लोग 'ह्वेल' मछली का शिकार करके उसकी चरबी निकाल लेते हैं। इस चरबी का ख़ूब व्यापार होता है।

इन इसाइयों का धार्मिक नेता (डूमाक), रोम के पोप से कोई सम्बन्ध नहीं रखता किन्तु वह एक दूसरे धर्माध्यक्ष के अधीन है जो 'रोडस' द्वीप में रहता है और जिसके अधीन और भी बहुत से छोटे-छोटे इमाम हैं।

समुद्री डाकू लोग यहाँ अपना माल बेचने को लाते हैं और लोग उनकी चीजें प्रसन्नतापूर्वक खरीदते हैं।

इस देश में जादूगर भी हैं जो बहुत बुद्धिमान हैं। यदि कोई जहाज़ समुद्र में चला जा रहा हो और हवा उसके अनुसार चल रही हो तो वे जादू के बल से हवा का जोर उलट देते हैं। केवल इतना ही नहीं वरन् आँधी भी पैदा कर देते हैं।

'सकोत्रा' से लगभग एक हजार मील दक्षिण मेडागास्कर द्वीप कुछ दूर तक समुद्र में फैला हुआ है। यहाँ के निवासी मुसलमान हैं। इस द्वीप में चार शेख (मुसलमानों की एक उपजाति) राज्य करते हैं। यह द्वीप बहुत सुन्दर और दुनिया भर के द्वीपों से बड़ा है। क्योंकि इसका घेरा लगभग बीस हज़ार मील है। निवासी व्यापारी और कारीगर हैं। इस द्वीप में हाथी बहुत पैदा होते हैं। हाथीदाँत का व्यापार बड़े ज़ोरों पर है। लाल चन्दन के वृक्ष भी पाये जाते हैं।

यहाँ के रहने वाले ऊँट का मांस खाते हैं जिसे वे स्वास्थ्यप्रद और अत्यंत स्वादिष्ट बताते हैं। ये लोग ह्वेल मछली का शिकार बड़ी चालाकी से करते हैं। इस देश में तेंदुए, रीछ, शेर, तथा अन्यान्य जंगली जन्तुओं की अधिकता है। विदेशी व्यापारी लाकर जरदोजी के कपड़े बेचते हैं।

'मेडागास्कर' इतनी दूर दक्षिण में स्थित है कि जहाज उसके उत्तर के एक द्वीप तक—जिसका नाम 'जंगवार' है जाते हैं। इसका कारण यह है कि समुद्र की लहरें दक्षिण की ओर इतने जोर से हिलोरें लेती हैं कि जहाज उसी में बह जाते हैं, लौट नहीं सकते।

'मेडागास्कर' के दक्षिण में जो द्वीप है उसमें एक पक्षी पाया जाता है जिसे 'रुख'[1] कहते हैं। वह बहुत बड़ा होता है और बड़े बड़े जानवरों को पंजों में दबाकर ऊपर ले जाता है और फिर गिरा देता है जिससे वे मर जाते हैं और फिर वह उन्हें बैठकर खाता है। लोगों में यह किम्वदन्ती प्रचलित है कि वह हाथियों को भी इसी भाँति मारकर खाता है। एक रुख़ के बाज़ू तीस क़दम चौड़े थे और पर बारह क़दम लम्बे।

'ख़ां आज़म' ने इस पक्षी का ठीक ठीक हाल मालूम करने और अपने एक दूत को मुक्त कराने के लिये (जो वहाँ क़ैद था) कुछ आदमियों को वहाँ भेजा था। लौटने पर वे 'रुख़' का एक पर लाये थे जो पैंतालीस हाथ लम्बा था। इन द्वीपों में भैंसे के बराबर बड़े सूअर पाये जाते हैं। ज़िराफ़ और जंगली गधों की भी कमी नहीं है।

'ज़ंगवार' एक बड़ा द्वीप है। यहाँ के निवासी मूर्त्तिपूजक हैं। वे बिलकुल स्वतंत्र हैं, उनमें कोई राजा नहीं है। ये लोग लम्बे, चौड़े और बलवान होते हैं। वे चार चार आदमियों को अकेले उठा ले जा सकते हैं। पाँच पाँच आदमियों के बराबर खाते हैं।

१—'अकाब' से मतलब है किन्तु यह गलती है कि वह हाथी को पंजों में दाब कर ले जाता है।

इनका रंग काला है और प्रायः नंगे रहते हैं। बाल कड़े और मोटे होते हैं। मुँह चौड़ा, नाक ऊपर को चढ़ी हुई, होंठ मोटे, आँखें बड़ी तथा खूनी होती हैं। देखने ही से डर लगता है।

इस द्वीप में हाथी बहुत पाये जाते हैं। शेर काले होते हैं। भेड़ों का सम्पूर्ण शरीर स्वेत और सर काला होता है। ज़िराफ़ नाम का एक सुन्दर पशु भी यहाँ होता है। उसका धड़ छोटा और पीछे की ओर को ढालुवाँ होता है। पिछली टांगें छोटी होती हैं किन्तु अगली टांगें और गर्दन लम्बी होती है। सर छोटा होता है। यह जानवर किसी को दुःख नहीं पहुँचाता। उसका रंग लाल होता है।

इस द्वीप की स्त्रियाँ बड़ी भद्दी होती हैं। मुँह चौड़ा, आँखें बड़ी और नाक मोटी।

यहाँ के निवासी मांस, मछली, चावल और छुहारे खाकर जीवन निर्वाह करते हैं। चावल, खजूर और मसाले के मिश्रण से एक प्रकार की शराब तैयार की जाती है। यहाँ व्यापार खूब होता है। अधिक व्यापार हाथीदाँत और ह्वेल मछली की चरबी का होता है।

यहाँ के निवासी निर्भय और वीर सिपाही होते हैं। वे युद्ध में जी तोड़कर लड़ते हैं। यहाँ घोड़े नहीं होते अतएव वे लड़ाई में ऊँटों और हाथियों पर चढ़कर जाते हैं। हाथियों पर परदे कसे होते हैं और उन पर दस से सोलह आदमी तक बैठ सकते हैं। युद्ध के समय वे हाथियों को शराब पिला देते हैं जिससे वे लड़ाई में खूब डटकर लड़ते हैं। ये लोग बरछियों, तलवारों और पत्थरों से लड़ते हैं और मृत्यु से नहीं डरते।

'ज़ंगवार' के पश्चात् 'अबीसीनिया' देश है। इसमें अधि-

कांशतः हबशी रहते हैं। इस देश में छः बादशाहों का राज है। उनमें से तीन इसाई हैं और तीन मुहम्मदी। सब से बड़ा बादशाह इसाई है। शेष पाँच उसे कर देते हैं।

सब से बड़ा इसाई बादशाह, इस देश के बीच में राज करता है और मुहम्मदी बादशाह अदन की ओर के हिस्से में राज करते हैं। इस देश में इसाई धर्म 'सेंट टाम्स' के धर्मोपदेश से प्रतिष्ठित हुआ था।

इस देश के निवासी अच्छे घुड़सवार हैं। इस देश में घोड़े अधिकता से पाये जाते हैं। ये लोग प्रायः सुलतान अदन तथा दूसरे राजाओं से लड़ाई झगड़े में लगे रहते हैं।

स० १२८८ ई० में इस देश के सब से बड़े इसाई बादशाह ने 'बेतुलमक़दस' जाकर उसका दर्शन करने का विचार किया किन्तु उसके साथियों ने सम्मति दी कि "आपका जाना ठीक नहीं है, ख़तरे में पड़ जाने की सम्भावना है।" अतएव बादशाह ने अपनी राय बदल दी और एक इसाई पादरी को वहाँ भेजा। इस इसाई पादरी के द्वारा बादशाह ने उपहार में सुलतान अदन को अच्छी अच्छी चीज़ें भेजी थीं। वह पादरी लम्बी यात्रा समाप्त करके सुलतान अदन के यहाँ पहुँचा। अदन के निवासी मुसलमान, इसाईयों से शत्रुता रखते थे। जब सुलतान को ज्ञात हुआ कि वह इसाई और 'हबश' देश के बादशाह का दूत है तो उससे कहा कि "तू मुहम्मदी धर्म स्वीकार कर ले अन्यथा तेरी बड़ी बेइज़्ज़ती की जायगी।" किन्तु उसने उत्तर दिया कि "चाहे मैं मार डाला जाऊँ परन्तु इसाई धर्म छोड़ नहीं सकता।" इस पर सुलतान अदन ने ज़बरदस्ती उसका ख़तना[1] करवा दिया।

१—ख़तना मुसलमानों का एक धार्मिक संस्कार है।

जब वह अच्छा हो गया तो वहाँ से चलकर एक बड़ी यात्रा के बाद फिर अपने देश में लौट आया और बादशाह के दरबार में जा पहुँचा। उसने 'बेतुलमक़दस' का सब हाल बताकर सुलतान अदन के अत्याचारों का वर्णन किया जिसे सुनते ही बादशाह क्रोध से पागल हो गया और उसने प्रतिज्ञा की कि "जब तक इस अपमान का बदला न ले लूँगा, ताज सर पर न रक्खूँगा।"

अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने के लिये उसने एक बड़ी सेना इकट्ठी की और सुलतान अदन के ऊपर आक्रमण कर दिया। सुलतान ने भी अन्य तीन मुसलमानी राज्यों को मिलाकर उसका सामना किया किन्तु विजय इसाई बादशाह की हुई। अब उसने हज़ारों मुहम्मदियों को क़त्ल कराया और बदला लेकर अपने देश को लौट गया।

'हबश' (अबीसीनिया) देश में खाने-पीने की चीजें मिल जाती हैं। प्रायः लोग गोश्त, मछली और दूध पर निर्वाह करते हैं। जिराफ़, रीछ, तेंदुवे, शेर आदि जङ्गली जानवरों की अधिकता है। जंगली गधे, मुरगों, बत्तख, तोते और भाँति भाँति के बन्दर भी पाये जाते हैं। निवासी व्यापारी हैं। कुछ लोग कारीगरी भी करते हैं।

अदन देश

'अदन' का बादशाह 'सुलतान' कहलाता है। निवासी मुहम्मदी हैं जो इसाइयों से घृणा करते हैं। 'अदन' एक बन्दरगाह है जहाँ भारतवर्ष के जहाज़ आते हैं। इस बन्दरगाह से सौदागर, छोटी छोटी नौकाओं में माल लाद कर सात दिन में एक स्थान पर पहुँचते हैं और वहाँ से ऊँटों के द्वारा तीस दिन में नील नदी के तट पर पहुँच कर क़ाहिरा और अस्कंदरिया को माल ले जाते हैं।

'सुलतान अदन' को इस बन्दरगाह से बड़ी आय होती है। जब सुलतान बाबुल ने 'अकरा' पर चढ़ाई की थी तो 'सुलतान अदन' ने उसकी सहायता के लिये तीस हज़ार सवार और चालीस हज़ार ऊँट भेजे थे।

'अदन' बन्दर से उत्तर पश्चिम लगभग चार सौ मील पर 'उशहर' है। यहाँ का बादशाह सुलतान अदन को कर देता है। वह न्याय के साथ राज करता है।

नगर निवासी मुहम्मदी हैं। यह नगर बड़ा सुन्दर है। उसमें एक बन्दरगाह भी है, जहाँ भारतवर्ष के जहाज़ आकर ठहरते हैं और घोड़े भरकर ले जाते हैं। इस देश में स्वेत लोहबान बहुत पैदा होता है जिससे यहाँ के बादशाह को बड़ी आय होती है क्योंकि उसके अतिरिक्त और किसी को लोहबान बेचने का अधिकार नहीं है।

इस देश में खजूर बहुत होता है। थोड़ा चावल भी होता है किन्तु बाहर से बहुत आता है और महँगा बिकता है। मछलियाँ सस्ती बिकती हैं। गोश्त, मछली और चावल खाकर लोग निर्वाह करते हैं। शक्कर, चावल और खजूर के संमिश्रण से एक प्रकार की शराब बनाते हैं। यहाँ की भेड़ों के कान नहीं होते। कान के स्थान पर छोटे छोटे सींग निकलते हैं।

इस देश के पालतू पशु (घोड़े, ऊँट, बैल) छोटी छोटी मछलियाँ खाकर निर्वाह करते हैं क्योंकि इसके अतिरिक्त कोई और चीज़ खाने को मिलती ही नहीं। यह देश, दुनिया के सम्पूर्ण देशों से अधिक शुष्क है। इसमें चारा पैदा नहीं होता। छोटी छोटी मछलियाँ मार्च, अप्रैल और मई के महीनों में पकड़ कर सुखा ली जाती हैं और साल भर तक मवेशियों को खिलाई जाती हैं। यहाँ के निवासी भी अपने खाने के लिये बड़ी बड़ी मछलियों के टुकड़े करके सुखा लेते हैं और साल भर तक खाते हैं।

इससे ५०० मील उत्तर और कुछ पश्चिम की ओर 'ज़फ़ार' पड़ता है। यहाँ का बादशाह भी सुलतान अदन को कर देता है। यह नगर समुद्र के किनारे बसा है और एक अच्छा बन्दरगाह है। यहाँ भी भारतवर्ष के जहाज़ घोड़े लादने आते हैं। सफ़ेद लोहबान भी पैदा होता है। लोहबान के वृक्षों में जगह जगह चाकू से छाल काट दिये जाते हैं। छाल काटने से रबर की भाँति रस ऊपर निकल कर जम जाता है जो सूख कर गोंद की तरह हो जाता है। यही लोहबान है।

'ज़फ़ार' से आगे बढ़ कर छः सौ मील उत्तर की ओर 'क़िलात' आता है। यह एक बड़ा शहर है और समुद्र तट पर बसा है। यहाँ के निवासी मुहम्मदी और शाह हुरमुज़ की प्रजा हैं। जब शाह हुरमुज़ की राजधानी पर कोई चढ़ाई करता है तो

वह इस शहर में चला आता है क्योंकि यहाँ का किला बहुत मज़-बूत और अजेय है।

इस देश में अनाज पैदा नहीं होता; बाहर से आता है। यहाँ का बन्दरगाह बहुत बड़ा और सुन्दर है जिसमें भारतवर्ष के सैकड़ों जहाज़ अनाज और मसालों से भरे पड़े रहते हैं और अपना माल बेच कर अरबी घोड़े भारतवर्ष को ले जाते हैं।

यह नगर एक खाड़ी के मुहाने पर बसा हुआ है इससे कोई जहाज़ बादशाह की आज्ञा के बिना इधर से उधर नहीं जा सकता। शाह हुरमुज, सुलतान किरमान को कर देता है। जब उसे सुल-तान की ओर से किसी बात का खटका या डर होता है तो वह जहाज़ों में सवार होकर और सामान लाद कर इस शहर में चला आता है जिससे सुलतान को बहुत हैरान होना पड़ता है और अन्त में उसे शाह हुरमुज की बात माननी पड़ती है अन्यथा उसकी आय में बड़ी क्षति पहुँचती है।

इस देश में मछली खूब पैदा होती है। लोग मछली और खजूर खाकर पेट पालते हैं। बड़े बड़े धनी भी यही खाते हैं।

'किलात' से लगभग ३०० मील पर 'हुरमुज' बसा है जो समुद्र के किनारे एक वैभवसम्पन्न नगर है। निवासी मुहम्मदी हैं। यहाँ गर्मी बहुत ज्यादा पड़ती है अतएव मकानों में हवादान अधिक लगाये जाते हैं अन्यथा गर्मी बरदाश्त नहीं हो सकती। इसके पश्चात् टर्की का देश है।

टर्की साम्राज्य का हाल

टर्की का बादशाह 'कीदू खां' है जो 'ख़ां आज़म' का सम्बन्धी और चग़ताई खां के वंश में है। उसकी प्रजा तातारी हैं। तातारी अच्छे सिपाही होते हैं क्योंकि वे सर्वदा मारकाट में लगे रहते हैं।

'कीदूखां' और 'ख़ां आज़म' (क़िबलाई खां) में सर्वदा युद्ध हुआ करता है। कीदू खां ने अपने पिता का हिस्सा क़िबलाई खां से माँगा था। उसके बाप के हिस्से में 'ख़ता' और 'इण्डोचीन' दो देश आते थे। क़िबलाई खां ने कहा कि "ये देश तुम्हें अवश्य दिये जाँयगे किन्तु पहले तुम मेरे दरबार में उपस्थित होकर मेरी अधीनता स्वीकार करने की प्रतिज्ञा करो।" कीदू खां को क़िबलाई खां का विश्वास नहीं था अतएव उसने कहला भेजा कि मैं यहीं से यह शर्त पूरी कर दूँगा, आपके यहाँ उपस्थित होने में असमर्थ हूँ। इसी बात पर दोनों में लड़ाई छिड़ गई। उस समय से लेकर अब तक दोनों में लड़ाई जारी है। क़िबलाई खां ने अपनी सीमा पर एक बड़ी सेना नियत कर दी है कि कीदू खां हाथ पैर न फैला सके।

कीदू खां के अधिकार में चंगेज़ खां के वंश के कई छोटे छोटे, बादशाह हैं। उनकी सहायता से उसने बहुत से देश विजय कर लिये हैं और वह युद्धस्थल में एक लाख सवार प्रत्येक समय ला सकता है।

टर्की राज्य की सीमा, हुरमुज के उत्तर पश्चिम 'जीहून' नदी के किनारे से आरम्भ होती है। १२६६ ई० में कीदू खां और उसके एक और सहायक बादशाह ने मिलकर 'खां आजम' के दो सहायक बादशाहों पर चढ़ाई की किन्तु 'खां आजम' ने एक सेना तैयार करके दोनों को हराया। दोनों ओर के बहुत से सैनिक मारे गये किन्तु दोनों बादशाह (कीदू खां और उसका सहायक) बचकर निकल गये। इस युद्ध के दो वर्ष बाद कीदू खां ने एक भारी और सुशिक्षित सेना तैयार की और 'कराकुरन' पर चढ़ाई कर दी जहाँ किबलाई खां का लड़का राज्य करता था। दोनों ओर की सेनायें भिड़ गईं। लाखों आदमी मारे गये। संध्या के पश्चात् दोनों की सेनायें अपने अपने स्थान पर चली गईं।

रात को 'कीदू खां' को यह समाचार मिला कि 'खां आजम' ने एक बड़ी सेना अपने बेटे की सहायता के लिये रवाना कर दी है जो अब आया ही चाहती है तो उसने रात को वहाँ से कूच कर दिया और वापस चला आया। सवेरे 'खां आजम' के बेटे को उसके चले जाने की खबर लगी किन्तु उसने कीदू खां का पीछा करना व्यर्थ समझा क्योंकि उसकी सेना भी थकी माँदी थी।

कीदू खां के कई बेटे हैं किन्तु वह अपनी इकलौती बेटी 'एयालब'[१] को सबसे अधिक प्यार करता है। वह बड़ी सुन्दर है किन्तु साथ ही इतनी बलवान है कि कीदू खां के राज्य में कोई ऐसा पुरुष नहीं जो उसका सामना कर सके।

१—'एयालब'—यह शब्द तातारी भाषा का है जिसका अर्थ 'चन्द्रमुखी' है।

जब वह जवान हुई तो कीदू खां ने उसकी शादी कर देने का विचार किया किन्तु उसने यह स्वीकार न किया वरन् प्रतिज्ञा की कि "मैं उसी पुरुष से विवाह करूँगी जो मुझे हरा दे।" कीदू खां ने कहा कि जब और जिससे चाहे तू शादी कर ले।

शाहज़ादी 'एयारुख़' ने अपने पिता कीदू खां के साम्राज्य भर में यह ढिंढोरा पिटवा दिया कि जो पुरुष उससे लड़ने आये, वह यदि हार जाय तो सौ घोड़े दे और यदि जीत जाय तो उससे शादी कर ले। यह बात जानकर बहुत से शाहज़ादे और वीर पुरुष उससे सामना करने आये किन्तु उसने सबको नीचा दिखाया। यहाँ तक कि धीरे धीरे, दस हज़ार घोड़े उसने जीत लिये पर कोई उसे हरा न सका। सन् १२८० ई० में एक शाह-ज़ादा उसका सामना करने आया। वह अच्छे डीलडौल वाला, वीर और बलवान था। 'कीदू खां' और उसकी मलका दोनों उस सुन्दर युवक को देखते ही लट्टू हो गये और बेटी से कहने लगे कि "उससे हार खा जाना क्योंकि वह एक बड़े बादशाह का लड़का और तेरा पति बनने योग्य है," किन्तु शाहज़ादी 'एयारुख़' ने उत्तर दिया कि "यों तो मैं उससे विवाह नहीं कर सकती, हाँ यदि वह मुझे हरा देगा तो मैं तैयार हूँ।"

दोनों का सामना होने के लिये एक दिन नियत हुआ। उस दिन वहाँ बड़ी जनता जुटी थी। बादशाह और मलका दोनों तमाशा देखने गये थे। दोनों में देर तक कुश्ती होती रही, अन्त में शाहज़ादी ने उसे उठाकर ज़मीन पर चित दे मारा। शाह-ज़ादा बहुत लज्जित हुआ और हज़ार घोड़े देकर चुपचाप अपने घर चला गया।

इस बात से कीदू खां और उसकी मलका को बड़ा दुःख हुआ क्योंकि उसे वह अपना दामाद बनाना चाहते थे।

इसके पश्चात् कीदू खां ने अपने शत्रुओं के साथ जितनी लड़ाइयाँ लड़ीं, उन सब में शाहजादी को भी सम्मिलित किया। वह बड़ी ही निडर और वीर थी। शत्रुओं की सेनाओं पर बिजली की भाँति जाकर गिरती तो उनमें खलबली पैदा हो जाती थी। वह दो दो मर्दों को बग़ल में दाबकर ले आती थी और तलवार तथा अन्यान्य हथियारों के चलाने में बड़ी निपुण थी।

'कीदू खां' के राज्य से 'अया खां' के राज्य की सीमा मिली हुई है। 'कीदू खां' के लोग उसकी प्रजा को सताते और उनपर अत्याचार करते थे अतएव 'अया खां' ने अपने बेटे 'अरग़ोन' को उन्हें हटाने के लिये नियत किया। जब 'कीदू खां' को यह समाचार मिला तो उसने अपने एक भाई 'बारक खां' को एक सेना के साथ रवाना किया किन्तु इस सेना को 'अरग़ोन' ने नाश कर दिया।

विजय के बाद ही 'अरग़ोन' को अपने पिता के मर जाने का समाचार मिला अतएव उसने शीघ्र राजधानी की ओर सेना-सहित कूच किया किन्तु उसका एक चचा 'अहमद सुलतान' अरग़ोन से पहले ही 'अया खां' की मृत्यु की ख़बर पाकर सेना सहित वहाँ पहुँच गया और ख़जाने पर अधिकार करके अपने को वहाँ का बादशाह प्रसिद्ध कर दिया। उसने सब सरदारों और मुसाहिबों को धन देकर अपनी ओर मिला लिया।

थोड़े ही दिन बाद 'अरग़ोन' ने उसके ऊपर चढ़ाई कर दी और 'अहमद सुलतान' को कहला भेजा कि "राजगद्दी मुझे लौटा दे", किन्तु उसने इन्कार कर दिया। अन्ततः दोनों में घमासान लड़ाई हुई जिसमें 'अहमद सुलतान' की विजय हुई और 'अरग़ोन' बन्दी कर लिया गया। थोड़े दिन बाद 'अहमद सुलतान' अपने देश को चला गया और 'अरग़ोन' तथा 'अया खां' के राज्य को एक सरदार के हाथ में छोड़ गया।

जब 'अरग़ोन' क़ैद में पड़ा सड़ रहा था तो एक तातारी सरदार (जिसका नाम 'बोका' था) को उस पर बड़ी दया आई। वह और सरदारों के पास गया और उनसे कहने लगा कि "हम लोगों ने न्याय का खून किया है। हमारा बादशाह और इस राज्य का स्वामी वास्तव में अरग़ोन है। मेरी इच्छा है कि 'अहमद सुलतान' को दूर करके 'अरग़ोन' को गद्दी पर बिठाया जाय।" 'बोका' सब सरदारों से वृद्ध और बुद्धिमान था अतएव सब सरदारों ने उसकी बात मानली और सब मिलकर 'अरग़ोन' के पास गये और उससे अपनी इच्छा प्रकट की।

पहले तो 'अरोग़न' उनकी बातों को व्यंग समझ कर अप्रसन्न हुआ किन्तु पीछे शपथ खाने पर उसे विश्वास हुआ। इसके बाद सरदारों ने उसकी बेड़ियाँ काट डालीं और उसे अपना बादशाह स्वीकार कर लिया। क़ैद से छूट कर अरग़ोन ने सरदारों को उस सरदार का क़त्ल करने की आज्ञा दी जो 'अहमद सुलतान' की ओर से वहाँ राज्य करता था। सरदारों ने उसकी आज्ञा मानकर उसे क़त्ल कर दिया और 'अरग़ोन' को गद्दी पर बैठाया।

इन बातों की ख़बर एक दूत से 'अहमद सुलतान' को लगी अतएव वह डर के मारे 'शाह बाबुल' की शरण में भागा किन्तु रास्ते में एक अफसर ने उसे कैद कर लिया और 'अरग़ोन' के दरबार में (जो उस समय 'तबरेज़' में था) उपस्थित किया। जब 'अरग़ोन' ने 'अहमद सुलतान' को अपने सामने देखा तो बड़ा प्रसन्न हुआ और उसी समय उसे क़त्ल करा दिया।

इसके बाद बहुतेरे सरदारों, जो भिन्न भिन्न सूबों के हाकिम थे, आये और सब ने उसे अपना बादशाह स्वीकार किया।

'अरग़ोन' ने अपने बेटे 'ग़ाजन' को तीस हजार सवारों की सशस्त्र सेना के साथ अपनी सीमा की रक्षा के लिये नियत किया। इसके बाद अरग़ोन छः वर्ष राज्य करके परलोक सिधारा। 'अरग़ोन' के मरते ही उसके भाई 'कीख़ातू' ने राज्य पर अधिकार कर लिया। उस समय 'ग़ाज़न' सीमा पर था। जब यह मालूम हुआ तो उसे बड़ा दुख हुआ। वह वहीं ठहर गया और मौके की ताक में लगा रहा। 'कीख़ातू' बड़ा विषयी था उसने 'अरग़ोन' की मलका को अपनी बीबी बना लिया। चार साल राज्य करने के बाद वह जहर देकर मार डाला गया।

'कीखातू' के मरते ही 'बीदू' ने सिंहासन पर अधिकार कर लिया। जब ग़ाज़न को 'कीख़ातू' की मृत्यु और 'बीदू' के सिंहासनासीन होने का समाचार मिला तो उसे और भी दुःख हुआ क्योंकि वह 'कीख़ातू' से बदला भी न ले सका और राज्य भी न पासका। अब उसने 'बीदू' से बदला लेने की ठानकर उसपर एक बड़ी सेना के साथ चढ़ाई कर दी।

'बीदू' ने भी एक बड़ी सेना इकट्ठी करके उसका सामना किया किन्तु युद्ध के समय 'बीदू' की सेना का एक बड़ा अंश 'ग़ाज़न' की सेना से जा मिला। 'बीदू' पकड़ कर क़त्ल कर दिया गया। इसके बाद 'ग़ाजन' सीधा राजधानी में पहुँचा और गद्दी पर अधिकार कर लिया। सब सरदारों ने उसे अपना बादशाह स्वीकार किया। यह घटना १२९४ ई० की है।

टर्की से आगे उत्तर की ओर शाह किवाँची का देश है[1]। यह बादशाह किसी के आधीन नहीं है। उसके राज्य में न शहर हैं न किले। उसकी प्रजा खुले मैदानों और पहाड़ी घाटियों में रहती

१—साइबेरिया का वह भाग जो काला सागर और कास्पियन सागर

है। इस देश में अनाज पैदा नहीं होता। लोग मवेशियों के दूध और मांस से अपना निर्वाह करते हैं। ये लोग किसी से लड़ाई झगड़ा नहीं करते और शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत करते हैं। इस देश में ऊँट, घोड़े इत्यादि अधिकता से पाये जाते हैं।

यह देश उजाड़ और जंगलों से पटा पड़ा है। इसमें सड़कें नहीं हैं। सफ़ेद रींछ, काली लोमड़ियाँ और जङ्गली गधे बहुत मिलते हैं। देश का एक भाग अवश्य हरा-भरा है उसमें सोतों और झीलों की अधिकता है। बर्फ़ खूब गिरती है। चारों ओर दलदल हैं अतएव घोड़े नहीं चल सकते। इस हिस्से को पार करने में तेरह दिन लगते हैं। १३ दिन की इस यात्रा में एक दिन की यात्रा पर एक सराय है जिसमें छोटे-छोटे कुत्ते हैं। ये कुत्ते गाड़ियाँ खींचते हैं। ये गाड़ियाँ बर्फ़ पर चलाई जाती हैं। इसमें पहिये नहीं होते। इस हिस्से के निवासी अच्छे शिकारी हैं।

इस देश में इतनी ज्यादा सरदी पड़ती है कि लोग पृथ्वी के भीतर मकान बनाकर रहते हैं। ये ऊदबिलाव और ऐसे जानवरों को फंदा डालकर पकड़ते हैं जिनके समूर (बाल, रोयें) से ओढ़ने के लिए कपड़े बनाये जा सकते हैं।

इस देश के आगे एक और देश पड़ता है जिसे 'अंधकार का देश'[1] कहते हैं। यहाँ न तो सूर्य निकलता है और न चांद तथा

के मध्य में है और जिसमें वालगा, नीपर तथा डान नदियाँ बहती हैं। शाह क्विांची भी चंगेज खां के ही वंश का था। इस देश के लोग भी वही धर्म मानते हैं जो तातारी मानते हैं।

१—'अंधकार का देश'—साइबेरिया के उत्तर का वह भाग जो उत्तरी ध्रुव से मिला हुआ है और जहाँ ६ महीने की रात तथा ६ महीने का दिन होता है।

सितारे ही दिखाई पड़ते हैं। सर्वदा अँधेरा छाया रहता है। इस देश के लोग जङ्गली हैं और पशुओं की भाँति रहते हैं। उनका कोई राजा नहीं है।

इस देश के लोग शिकारी हैं। वे प्रायः उन जानवरों का शिकार करते हैं जिनकी समूर बहुमूल्य होती है। इस समूर को वे अपने पड़ोसियों के हाथ बेच देते हैं। तातारी कभी-कभी इस समूर को लूटने के लिये उनपर चढ़ाई करते हैं। इस देश के निवासी सुन्दर और मज़बूत होते हैं। उनका रँग पीला होता है। इस देश की सीमा रूस से मिली हुई है।

रूस का वर्णन

रूस एक बड़ा देश है और उत्तर की ओर फैला हुआ है। इसके निवासी इसाई हैं और 'ग्रीक चर्च' से सम्बन्ध रखते हैं। इस देश में कई बादशाह हैं। उन सब की भाषा एक ही है। स्त्री पुरुष दोनों सुन्दर होते हैं। इनका व्यवहार बहुत अच्छा है। इन लोगों का रंग सफेद है। बाल लम्बे होते हैं। वे 'चग़ताई खाँ' के वंशजों को कर देते हैं।

यद्यपि इस देश में समूर बहुत होता है किन्तु लोग व्यापार बढ़ाने का प्रयत्न नहीं करते। यत्र तत्र चाँदी की खानें भी पाई जाती हैं।

यहाँ सरदी बहुत पड़ती है जो बरदाश्त नहीं की जा सकती। इस देश से मिला हुआ एक देश है जिसे वालाशिया कहते हैं। उसमें कोई बादशाह नहीं है। निवासी इसाई हैं। यहाँ भी समूर वाले जानवर पाये जाते हैं। यहाँ के लोग समूर का व्यापार करते हैं।

इसके पूर्व बहुत दूर तातार के पश्चिमी भाग में 'पोनेएट' नामक देश है। यहाँ का बादशाह 'सीन जान' के नाम से प्रसिद्ध था किन्तु उसका असली नाम 'बातू ख़ाँ' था। उसने रूस, रूमानिया, अलानिया, वालाशिया, सरकाशिया, गोमथा, और करारिया इत्यादि अनेक देशों को जीत कर अपने राज्य में मिला लिया।

'बातू खां' के पश्चात् उसके वंश में कई बादशाह हुए और इस समय जो बादशाह राज्य करता है उसका नाम 'बरहा'* है। उसमें और उसके एक सम्बन्धी में (जिसका नाम हलाकू खां है और जो 'लीवाण्ट' देश का बादशाह है) १२६१ ई० में एक बड़ी लड़ाई हुई थी।†

'हलाकू खां' और 'बरहा' की सीमा में मिली हुई हैं। १२६१ ई० वाली लड़ाई 'सराय' के मैदान में हुई थी। हलाकू खां ने एक बड़ी सेना लेकर वहाँ अपना डेरा जमाया, उधर से 'बरहा' अथवा 'बारक खाँ' भी उसका सामना करने के लिए तीन लाख पचास हजार सेना लेकर आया और उसने हलाकू खां की सेना से १० मील के अन्तर पर अपना डेरा डाल दिया।

तीन दिन विश्राम करने के बाद दोनों सेनाओं में घमासान युद्ध आरम्भ हुआ। हलाकू खां की विजय हुई।

तातारियों के पश्चिमी राज्य का एक बादशाह 'तुराय मंगो खां' था। उसे निकाल कर 'तुलाबग खां' ने राज्य पर अधिकार कर लिया, किन्तु मंगो खां ने अपने मित्र 'नौगाय खाँ' की सहायता से 'तुलाबग खाँ' को क़त्ल करके राज्य ले लिया। थोड़े ही दिन राज करके वह मर गया। उसके मरने पर 'तकतो खां' बादशाह हुआ।

'तुलाबग खां' के दो छोटे बेटे थे। जब वे बड़े हुए तो 'तकतो खां' के पास पहुँचे। 'तकतो खां' ने जब उनसे उनके आने का उद्देश्य पूछा तो उन्होंने कहा:—

---

* 'बरहा' अथवा 'बारक खां' का वर्णन पुस्तक के आरम्भ में हो चुका है।

† पुस्तक के आरम्भ में इसका वर्णन हो चुका है।

"आपको मालूम है कि मेरे बाप 'तुलाबग़ा खां' को 'मंगो खां' और 'नौगाय खां' ने मिल कर क़त्ल कर डाला था। 'मंगो खां' तो मर गया किन्तु 'नौगाय खां' जीवित है, अब हम चाहते हैं कि आप उससे बदला लें।"

'तकतो खां' ने 'नौगाय खां' के पास दूत भेज कर उसे बुलवाया किन्तु उसने कुछ ध्यान न दिया। अन्त में दोनों में लड़ाई हुई जिसमें 'तकतो खां' की हार हुई और वह, 'तुलाबग़ा खां' के दोनों लड़कों के साथ भाग गया।‡

---

‡ इसके पश्चात् मार्कोपोलो वेनिस लौट गया। जिसके पश्चात १२९८ ई० में उसे युद्ध में सम्मिलित होना पड़ा और उसमें वह बहुत दिनों तक बन्दी रहा। इसका वर्णन हो चुका है।